श्री नृसिहँ रहस्यम्
भाषा टीका

श्री गंगाये नमः श्री सरस्वत्यै नमः श्री राधाकृष्णाय नमः

श्री नृसिंह रहस्यम्

भाषा-टीका

नृसिंह भगवान की पूजा विधि
नृसिंह स्तोत्र, नृसिंह कवच,
नृसिंह चालीसा, नृसिंह सहस्रनामावली
नृसिंह चतुर्दशी व्रत कथा सहित

पं० शिवस्वरूप 'याज्ञिक' कृत
सरल भाषा टीका सहित

मूल्य : 100

प्रकाशक :
बी.एस. प्रमिन्दर
दिल्ली-५१

मुख्य वितरक :
कर्मसिंह अमर सिंह पुस्तक विक्रेता
बड़ा बाजार, हरिद्वार-२४९४०१

प्रकाशक :
बी.एस. प्रमिन्दर प्रकाशन
दिल्ली-51

मुख्य वितरक :
कर्मसिंह अमरसिंह
पुस्तक विक्रेता, बड़ा बाजार
हरिद्वार-249401
फोन-01334-225619

नवीन संस्करण

विषय-सूची

श्री नृसिंह यंत्र

"निवेदन"

सम्पूर्ण सुखों का साधन शरीर ही है। इस शरीर में ही दश इन्द्रियां, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार, प्राण रहते हैं और इन सबका आश्रय शरीर ही है। इन सबकी रक्षा करना ही सुख की प्राप्ति और दुःख की निवृत्ति है। तंत्र शास्त्रों में इसकी रक्षा हेतु अनेक उपाय बताये गये हैं। प्रह्लाद ने पांच वर्ष की अवस्था में ही दैत्यवृत्ति का विरोध कर भगवान का आश्रय लिया था और असुर होने पर भी विष्णुमय हो गये।

इस कलिकाल में श्री नृसिंह उपासना ही सर्वाधिक श्रेष्ठ है, नृसिंह उपासना से शरीर की रक्षा तथा संभावित संकट का निवारण हो जाता है। इसी उपासना से प्रह्लाद सप्रदंश विषपान अग्निदाह अस्त्र-शस्त्र से सुरक्षित हो गये थे।

नृसिंह भगवान की आराधना करने से समस्त शत्रु नष्ट हो जाते हैं तथा कार्यसिद्ध हो जाते हैं-

स्वभावद्यस्य भक्तिः स्यान्नरसिंहे सुरोत्तमे।
तस्यारयः प्रणश्यन्ति कार्यसिद्धिश्च जायते॥

(नृसिंह पुराण ३२/१०)

जो मनुष्य नृसिंह भगवान का सुन्दर मन्दिर निर्माण कराता है, वह सब पापों से मुक्त होकर भगवान विष्णु के लोक में स्थान पाता है। श्री नृसिंह पुराण में लिखा है कि

जो भगवान नृसिंह की सुन्दर लक्षणों से युक्त प्रतिमा का निर्माण करता है, वह सब पापों से मुक्त होकर विष्णुलोक प्राप्त करता है।

प्रतिष्ठां नर सिंहस्य यः करोति यथा विधि।
निष्कामो नर शार्दूल देह बाधात् प्रमुच्यते॥

(नृसिंह पुराण ३२/१४)

भगवान नृसिंह की प्रतिष्ठा जो विधिपूर्वक निष्काम भाव से करता है, वह इस शरीर के दुःख से मुक्त हो जाता है। भगवान नृसिंह की पूजा करने, कवच स्त्रोत का पाठ करने, नृसिंह सहस्त्रनाम का पाठ करने से सम्पूर्ण मनोरथों की प्राप्ति होती है तथा साधक स्वर्ग और मोक्ष का भागी होता है।

नृसिंह की प्रसन्नता के लिये नृसिंह कवच, सहस्त्रनाम का पाठ, नृसिंह का पूजन ही सर्वाधिक श्रेष्ठ साधन है तथा यह शुद्ध सात्विक तंत्र है, इसके प्रयोग से शरीर मन बुद्धि की रक्षा होती है। इसकी सिद्धि से मनुष्य अक्षय सुख प्राप्त कर धन-सम्पत्ति, सन्तति, सौभाग्य, आरोग्यता, आयु, बल, विद्या, ऐश्वर्य आदि बाह्य सुखों को भी प्राप्त करता है। नृसिंह पूजन करने वाला स्वर्ग और मोक्ष का भागी होता है। इसमें अन्यथा विचार करने की आवश्यकता नहीं है-

यस्तु पूजयते नित्यं नरसिंह सुरेश्वरम्।
स स्वर्गमोक्ष भागी स्यान्नात्रकार्या विचारणा॥

निवेदन

प्राचीन काल से ऋषियों-मुनियों ने इसका प्रयोग किया है। इस कवच, स्तोत्र सहस्रनाम का एक एक श्लोक मंत्र स्वरूप हैं इसलिये आज के समय इस कलिकाल में इस नृसिंह के मंत्रों की अत्यन्त आवश्यकता है। लोकहित के लिये इन मंत्रों का प्रयोग किया जाता है।

प्रस्तुत पुस्तक में भगवान नृसिंह यंत्र का पूजन, विधान, नृसिंह पूजन, प्रह्लाद को नारद जी द्वारा प्रदत्त कवच, नृसिंह ध्यान, नृसिंह को प्रसन्न करने के लिये कई प्रकार के जपनीय मंत्र, नृसिंह स्तोत्र, श्री लक्ष्मी नृसिंह स्तोत्र के साथ न्यास सहित नृसिंह सहस्त्रनाम के पाठ से पुस्तक की उपयोगिता और भी बढ़ाई गयी है। भगवान नृसिंह के सहस्रनाम से हवन करने वालों के लिये अत्यन्त उपयोगी भगवान नृसिंह के हजार नाम पृथक-पृथक लिखने से पुस्तक विद्वानों, ब्राह्मणों, साधकों के लिये परम उपयोगी सिद्ध होगी, ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है।

पुस्तक के सम्बन्ध में विद्वतवृन्द अपने विचारों से अवगत करेंगे तथा मानव जन्य भूल सुधार का मुझे सूचित करने की कृपा करेंगे। पत्रोत्तर अवश्य दिया जायेगा।

सं. २०६२

भटवाडी टकनौर — विद्वद चरणानुरागी
उत्तरांचल प्रदेश। — पं. शिवस्वरूप 'याज्ञिक'
सम्पर्क सूत्र — भास्कर प्रयाग (उत्तरकाशी)
01374-244424

भगवान नृसिंह की उत्पत्ति कथा

हिरण्यकश्यप हिरण्याक्ष का छोटा भाई था। हिरण्याक्ष जब पृथ्वी को उठाकर रसातल ले गया, तब भगवान विष्णु ने बाराह रूप धारण कर हिरण्याक्ष का वध कर पृथ्वी को रसातल से ऊपर ले आये। अपने भाई की मृत्यु के कारण हिरण्यकश्यप भगवान का विरोधी हो गया।

हिरण्यकश्यप ने हजारों वर्षों तक ब्रह्मा की तपस्या करी, ब्रह्मा ने उससे इच्छित वर मांगने को कहा, हिरण्यकश्यप ने कहा हे ब्रह्मन्! यदि आप वर देते हैं तो मुझे अमर होने का वर दीजिये, ब्रह्मा बोले हे हिरण्यकश्यप जिसका जन्म होता है, उसकी मृत्यु निश्चित है, अतः कोई और वर मांग लो। हिरण्यकश्यप बोला-हे ब्रह्मन्! यदि ऐसा है तो मुझे ऐसा वर दो कि न मैं सूखी वस्तु से मरूँ, न गीली से, न जल में, न अग्नि में, न काष्ट से, न पत्थर से, न अस्त्र से, न शस्त्र से, न किसी मनुष्य से, न देवता से, न पशु से, न किसी राक्षस से, न दिन में मरूँ, न रात में, न घर के भीतर मरूँ, न बाहर मेरी मृत्यु हो। ब्रह्मा ने कहा कि मैं तेरी तपस्या से प्रसन्न हूँ और तुम्हे वरदान दे रहा हूँ, तुम्हारे मांगे हुए वरदान का तुम भोग करो। ब्रह्मा से वरदान प्राप्त कर हिरण्यकश्यप ने देवताओं को स्वर्ग से निकाल दिया तथा स्वयं राजा बन बैठा। देवताओं ने स्वर्ग छोड़कर पृथ्वी पर मनुष्य देह धारण कर विचरण करने लगे।

हिरण्यकश्यप ने स्वयं पूजित करने का विधान बनवाया, देवताओं के यज्ञ, जप-तप-दान आदि बन्द करवा दिये। देवताओं ने देवगुरु बृहस्पति के पास जाकर हिरण्यकश्यप के नाश का उपाय पूछा, बृहस्पति ने भगवान विष्णु की आराधना करने की सलाह दी।

भगवान शंकर के साथ सब देवताओं ने क्षीर सागर में जाकर भगवान विष्णु की आराधना की तथा एक सौ नाम से भगवान विष्णु की स्तुति की।

भगवान विष्णु ने प्रसन्न होकर कहा कि जब इस दैत्य के घर मेरा भक्त प्रहलाद के रूप में जन्म लेगा, उस समय यह दैत्य हिरण्यकश्यप प्रहलाद का विरोध करेगा, उस समय मैं इस दैत्य का अवश्य वध करूँगा। भगवान विष्णु के इस आश्वासन को पाकर समस्त देवता हर्षित हो उन्हें प्रणाम करके चले गये।

जब हिरण्यकश्यप तीनों भुवनों का स्वामी बन गया तो पुनः हिरण्यकश्यप तपस्या करने लगा। ब्रह्मा को पुनः इसके तप से चिन्ता हुई, नारद ने जब पिता को चिन्तित देखा तो कहा कि हे पिताजी! आप चिंता न करें मैं हिरण्यकश्यप को तप में प्रवृत्त हुए को तप से निवृत्त करूँगा, तब नारद पर्वत मुनि के साथ कलविङ्क पक्षी का रूप धारण कर वहां पहुंचे जहाँ हिरण्यकश्यप तपस्या कर रहा था और वहां इस पक्षी ने ''ॐ नारायण'' का उच्चारण किया इस शब्द को बार-बार सुनकर हिरण्यकश्यप तपस्या छोड़ घर वापस आ गया।

दैव योग से उस समय उसकी पत्नी कयाधू ऋतुस्नाता थी। रात्रि में शयनकक्ष में कयाधू ने वापस आने का कारण पूछा तो हिरण्यकश्यप बोला–हे प्रिये जिस स्थान पर मैं तपस्या कर रहा था उस स्थान पर पक्षी ने आकर "ॐ नारायण" शब्द उच्चारण किया जिससे मेरी तपस्या भंग हो गयी, इस ही समय वीर्य स्खलित हुआ और कयाधू के पेट में गर्भ रह गया। इस गर्भ से प्रह्लाद पुत्र के रूप में कयाधू के गर्भ से उत्पन्न हुआ। प्रह्लाद के दो बड़े भाई अनुह्लाद, ह्लाद थे तथा एक छोटा भाई संह्लाद हुए।

प्रह्लाद बाल्यावस्था से ही भगवान विष्णु का भक्त हो गया। प्रह्लाद भगवान विष्णु की स्तुतियां करता था तथा गुरु आश्रम में अन्य सहपाठियों को भी भगवान विष्णु की आराधना करने की प्रेरणा देता था। कई बार पिता के समझाने पर भी जब प्रह्लाद ने भगवान की भक्ति नहीं छोड़ी तो उसके पिता हिरण्यकश्यप ने उसके वध करने का प्रयास किया, शस्त्रों से विषैले सर्पों से पहाड़ की चोटी से उसे मरवाने का प्रयास किया गया परन्तु भगवान की कृपा से सब प्रयत्न असफल सिद्ध हुए। फिर उसे राक्षसों से डरवाया गया, कोठरियों में बंद करवाया गया, विष पान करवाया, अन्न, जल बंद किया गया, उसे समुद्र में फेका गया, हाथियों से कुचलवाया गया परन्तु प्रह्लाद भगवान विष्णु की अनुकम्पा से सुरक्षित रहे। जब हर प्रयत्न

विफल हुए तब हिरण्यकश्यप ने अपनी बहन सिंहिका से अनुरोध किया कि तुम्हें अग्नि में न जलने का वरदान प्राप्त है। अतः तुम अग्नि में प्रह्लाद को लेकर कूद जाओ, तुम पर अग्नि की आंच नहीं आयेगी तथा प्रह्लाद जल जायेगा, सिंहिका ने ऐसा ही किया वह प्रह्लाद को लेकर अग्नि में कूद गई परन्तु दैवयोग से सिंहिका अग्नि में जल गयी तथा भक्त प्रह्लाद सुरक्षित अग्नि से बच गये। इससे हिरण्यकश्यप का प्रह्लाद के प्रति क्रोध और भी बढ़ गया।

एक दिन गुरु के पुत्रों द्वारा शिकायत करने पर प्रह्लाद को हिरण्यकश्यप ने प्रताड़ित किया और प्रह्लाद के प्रति अत्यन्त क्रोध कर खम्भे में खड्ग से एक प्रहार किया और कहा तेरा भगवान यदि सर्वत्र है तो इस खम्भे पर मुझे क्यों नहीं दिखाई पड़ रहा है। प्रह्लाद बोले-हे पिता! मुझे तो भगवान इस खम्बे पर भी दिखाई पड़ रहे है। ऐसा सुन हिरण्यकश्यप क्रोध कर खड्ग ले प्रह्लाद को मारने के लिये उद्यत हुआ। उसी समय एक भयानक शब्द से खम्ब फट गया। भगवान उस खम्ब से प्रकट हो गये, भगवान का अद्‌भुत रूप नृसिंह का था जिसकी आंखे तपाये हुए स्वर्ण की भांति पीले रंग की थी, उनके शरीर के बालों से लोगों को भय हो रहा था। भगवान के प्रकाट्य के समय बैसाख मास शुक्ल पक्ष चतुर्दशी तिथि, सोमवार कृतिका नक्षत्र सन्ध्याकाल का समय था भगवान नृसिंह ने अपने

आयुधों द्वारा संपूर्ण दैत्यों को मार कर सभा भवन नष्ट कर डाला तथा बलपूर्वक हिरण्यकश्यप को पकड़कर ड्योडी के ऊपर बैठकर उसके वक्ष स्थल को नाखूनों से विदीर्ण कर पृथ्वी पर पटक डाला।

संपूर्ण देव-दानव, दैत्य भयभीत हो गये। किसी को उनके पास जाकर शान्त करने का साहस न हो सका। सब देवताओं, ऋषि, पितर, सिद्ध, विद्याधर, नाग, मनु, प्रजापति, गन्धर्व, अप्सराओं, चारण, यक्ष, बैताल, किन्नर आदि भगवान के पार्षदों ने नृसिंह भगवान की स्तुति की परन्तु तब भी नृसिंह भगवान का क्रोध शांत नहीं हुआ तब ब्रह्मा ने विष्णु भक्त प्रह्लाद को कहा-पुत्र जाओ और नृसिंह भगवान का क्रोध शांत करो। प्रह्लाद ने जाकर नृसिंह भगवान के चरणों पर अपना मस्तक झुका दिया।

चरणों में नन्हें बालक को देख नृसिंह भगवान दयार्द हो गये। उन्होंने बालक को उठाकर गोद में बैठाया तथा उसका मस्तक चूमने लगे। प्रह्लाद को भगवान के परम तत्व का साक्षात्कार हो गया। प्रह्लाद ने भगवान नृसिंह की स्तुति की जिससे नृसिंह भगवान संतुष्ट हो गये। भगवान नृसिंह ने प्रह्लाद को वरदान दिया तथा अन्त काल में प्रह्लाद को उत्तमगति प्रदान करने हेतु कहा। इस सम्पूर्ण वृत्तान्त को देख देवता हर्षित हुए। बालक प्रह्लाद ने पिता हिरण्यकश्यप की अन्त्येष्टि कर्म किया, तदनन्तर भगवान नृसिंह अन्तर्धान हो गये।

नृसिंह पूजन कवच सहस्त्रनाम पाठ में
ध्यान योग्य विशेष बातें

1. भगवान नृसिंह में पूर्ण श्रद्धा, अगाढ़ निष्ठा तथा अडिग विश्वास होना आवश्यक है।
2. पाठ शुद्धता से होना चाहिए।
3. किसी के हित को ही ध्यान में रखकर इसका पाठ करें।
4. बुरे विचार अथवा मारण का प्रयोग न करें।
5. निस्वार्थ भाव से ही दूसरों की परेशानियों को देखकर इसका प्रयोग करें।
6. किसी कार्य की सिद्धि करनी हो तो उस दिन पहले भगवान नृसिंह का विशेष पूजन करें या करावें।
7. चतुर्दशी, अमावस्या, अष्टमी, द्वादशी को नृसिंह पूजन करना शुभ कारक है।

श्री नृसिंह कवच सहस्त्रनाम मंत्र जप तथा नृसिंह पूजन का फल

भगवान नृसिंह की आराधना तुरन्त फलदायी है। ऐसा विश्वास करें। कष्ट निवारण के लिये पन्द्रहे अथवा बीसा यंत्र लिखकर (भूर्जपत्र में) यंत्र बनावे 9 दिन तक धूप दीपक नैवेद्य आदि से पूजन करते हुए कवच का पाठ कर नृसिंह भगवान का आह्वान यंत्र में करें। फिर यंत्र को सोने-चांदी या ताम्बे के ताबीज में रखकर गले, बाजू कमर आदि में इस यंत्र को बांध देवें। इससे बच्चों के कष्ट तथा डाकिनी शाकिनी पूतना पिशाचिनी, ग्रहजनित बाधा रोग आदि से रक्षा होती है।

कवच या नृसिंह के मंत्र का जप करने से बिच्छू अथवा सांप के विष दूर होते है। कवच यंत्र धारण करने से सिद्धिया प्राप्त होती है। विजय के लिये भी कवच तथा सहस्त्रनाम या नृसिंह मंत्र का जाप करें। इसका पाठ करने वाला सर्वज्ञ हो जाता है।

अभिमंत्रित भस्म का तिलक धारण करने से ग्रह, भय दूर होता है।

नृसिंह कवच या सहस्त्रनाम तीन बार पढ़कर जल अभिमंत्रित कर रोगी को पिलायें, रोगी के उदर जन्य रोग नष्ट होते हैं।

भूत-प्रेत की बाधा होने पर पीड़ित व्यक्ति के सामने कवच का पाठ करें धूप पीड़ित को सुघाये, पीली सरसों पीड़ित पर छिड़के भूत प्रेत बाधा से मुक्ति होती है। रात्रि में जिसको भयंकर स्वप्न आते हो चन्दन से भूर्जपत्र पर नृसिंह का एक मंत्र लिख गन्धअक्षतादि से पूजन कर चतुर्दशी अथवा रवि मंगल के दिन भुजा या गले में धारण करें तो स्वप्नजनित उपद्रव नष्ट होते हैं। शत्रु पराजय के लिये नृसिंह मंत्र की ९ माला नित्य ९ दिन तक जप करे, पुनः दशांश हवन करें।

कवच का पाठ बत्तीस हजार करें या सुने तो साधक मंत्रों को सिद्ध कर लेता है।

छः मास तक कवच का नित्य पाठ करने से इच्छित फल की प्राप्ति होती है।

॥संकल्प॥

ॐ विष्णुः विष्णुः विष्णुः श्रीमद् भगवतो महापुरुषस्य विष्णो राज्ञया प्रवर्त्तमानस्य अद्य श्री ब्रह्मणोह्नि द्वितीये परार्धे श्री श्वेत वाराह कल्पे वैवश्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथम चरणे भूर्लोके भारतवर्षे भरतखण्डे जम्बूद्वीपे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मावर्तैक देशे काशी कुरुक्षेत्र प्रयागादि नाना तीर्थ युक्त अमुक जनपदे तत् जनपदान्तर्गते अमुक मण्डले अमुक ग्रामेपतितपावनी श्रीगंगा यमुनयोर अमुक दिग्विभागे श्री विक्रमादित्य समयतो प्रभवादि षष्ठि संवत्सराणां मध्ये अमुक नाम संवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुक वासरे अमुक नक्षत्रे अमुक योगे, अमुक करणे, अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते सूर्ये अमुकराशिस्थिते श्री देवगुरौ शेषषु ग्रहेषु यथा राशि स्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ

ममात्मनः श्रुति स्मृति पुराणोक्त पुण्यफल प्राप्त्यर्थं अस्माकं सर्वेषां सकुटुम्बानां क्षेमस्थित्यायुरारोग्य एश्वर्याभि वृद्ध्यर्थं त्रिविध तापोपशमनार्थं लाभार्थं क्षेमार्थं विजयार्थं श्री नरसिंह देवता प्रीतये नृसिंह जप कवच पाठ अथवा श्री नृसिंह सहस्त्रनाम पाठ कर्मणितदङ्गत्वेन निर्विघ्नतया सिद्ध्यर्थं गणपति पूजनं कलश पूजनं मातृका पूजनं ग्रहपूजनं श्री लक्ष्मीनृसिंह देवता पूजनं आचार्यादि ऋत्विग्वरणं अद्यारंभ्य अमुक दिवस पर्यन्तं करिष्ये!

पूजन संकल्प कर यजमान ब्राह्मणो का वरण कर लेवे ब्राह्मण यजमान को रक्षा सूत्र बांध देवे आचार्य गणपत्यादि देवताओं का पूजन षोडशोपचार अथवा पंचोपचार से कर लेवे (पूजन के लिये सम्पूर्ण पूजन रहस्य पुस्तक देखें) फिर नृसिंह यंत्र का पूजन कर नृसिंह भगवान का पूजन करें।

नृसिंह यंत्र पूजन

केशरेष्वंग पूजास्यादिग्दलेषु खगेश्वरम्।
शंकरं शेष नागं च शतानंदं प्रपूजयेत्॥१॥
श्रियं ह्रियं धृति पुष्टिं कोणपत्रेषु साधक।
द्वात्रिशत्पत्रमध्येषुनृसिंहास्तावतोर्चयेत् ॥२॥
कृष्णो रुद्रो महाघोरो भीमो भीषण उज्ज्वलः।
करालोधिकराल श्चदैत्यांतो मधुसूदनः॥३॥
रक्ताक्ष पिंगलाक्ष श्चाजनसंज्ञस्रयोदशः।
दीप्त तेजा सघौणश्च हनुर्श्चैषोड्शः स्मृतः॥४॥
विश्वाक्षो राक्षसांतश्च विशालो धूम्र केशवः।
हयग्रीवोघनस्वरो मेघनादस्तथा परः ॥५॥
मेघवर्णः कुंभकर्णः कृतांतक इतीरितः।
तिव्रतेजा अग्निवर्णो महोग्रो विश्वभूषणः॥६॥
विघ्नक्षमो महासेनः सिहोद्वात्रिंशदीरिताः।
इन्द्रादीन्वज मुख्यांन्श्च पूज्येच्चतुरस्रके॥७॥

नृसिंह यंत्र का षोडशोपचार से पूजन कर मध्य के अष्ट पत्रों में क्रमशः विष्णु शंकर शेषनाग, शतानन्द श्रिय हिय धृति पुष्टि का पूजन करे तथा

बाहर के बत्तीस दलों में नृसिंह कृष्ण रुद्र महोघोर भीम भीषण उज्ज्वल कराल अधिकराल दैत्यान्त मधुसूदन रुद्राक्ष पिंगलाक्ष दिप्ततेज सुधौण हनु विश्वाक्ष विशाल धूम केशव हयग्रीव धनेश्वर मेघनाद मेघवर्ण कुंभकर्ण कृतांतक तिव्रतेज अग्निवर्ण महाउग्र विश्वभूषण विघ्नक्षम महासेन नाम के सिंहो का पूजन करें।

।।इति नृसिंह यंत्र पूजनम्।।

।।नृसिंह प्रतिमा प्राण प्रतिष्ठा।।

अद्येत्यादि० शुभपुण्य तिथौ ममात्मनः श्रुतिस्मृति पुराणोक्त फलप्राप्त्यर्थं मम सकल कुटुम्बानां क्षेम आयु आरोग्य एश्वर्याभिवृद्ध्यर्थ सकलकामना सिद्ध्यर्थ नृसिंहमूर्तिनां प्राण प्रतिष्ठां करिष्ये।।

आचार्य नृसिंह की प्रतिमा पर घी लगाकर जल की धारा लगवाये स्वयं अग्न्युत्तारण के मंत्र पढ़े-

ॐ समुद्रस्य त्वावकयाग्ने परिव्ययामसि। पावको अस्मभ्य ँ शिवोभव।।१।। ॐ हिमस्य त्वा जरायुणाग्ने परिव्ययाऽसि। पावको अस्मभ्य ँ शिवोभव।।२।। ॐ उपज्जमनुप वेतसेऽवतर

नदीष्वा। अग्नेपित्तमपामसि मण्डूकि ताभिरागहि सेम नो यज्ञं पावकव्वर्ण ॐ शिवं कृधि।।३।। ॐ अपामिदं न्ययन ॐ समुद्रस्य निवेशनम्। अन्यास्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्य ॐ शिवोभव।।४।। ॐ अग्ने पावक रोचिषा मन्द्रया देव जिह्वया। आ देवान् वक्षि यक्षिच।।५।। स नः पावक दीदिवोऽअग्नेदेवाँऽइहावह। उपयज्ञ ॐहविश्च नः य ।।६।। पावकयायश्चितयत्न्या कृपा क्षामन् रुरु चऽउषसो न भानुना। तूर्वन्न यामन्नेतशस्य नू रणऽआ यो घृणे न त तृषाणो ऽ अजरः।।७।। ॐ नमस्ते हरसे शोचिते नमस्ते ऽअस्त्वर्च्चिषे। अन्यांस्ते ऽअस्मत्तपन्तु हेतयः पावको ऽअस्मभ्य ॐ शिवोभव।।८।। ॐ नृषदे वेडप्सुषदे वेड् वर्हिषदे वेड् वनसदे वेट् स्वर्विदे वेट्।।९।। ये देवा देवाना यज्ञिया यज्ञियाना ॐ संवत्सरीणमुप भागमासते। आहुता दो हविषो यज्ञेऽ अस्मिन्त्स्वयं पिवन्तु मधुनो घृतस्य।।१०।। ये देवा देवे स्वधि देवत्वमायन्ये ब्रह्मणः पुरऽ एतारो ऽ अस्य। येभ्यो नऽ ऋते पवते धाम

किञ्चन ते दिवो न पृथिव्या ऽ अधि स्नुषु॥११॥
ॐ प्राणदा ऽअपानदा व्यानदा व्वर्चोदा वरिवोदाः।
अन्न्याँस्ते ऽअस्मत्तपन्तु हेतयः पावकोऽअस्मभ्य ॐ शिवोभव॥१२॥

इस प्रकार अग्न्युत्तारण कर प्राण प्रतिष्ठा का विनियोग करें-

विनियोग- ॐ अस्य श्री प्राण प्रतिष्ठा मंत्रस्य ब्रह्म विष्णु रुद्राः ऋषयः ऋग्यजुः सामाथर्वाणि छन्दासि क्रिया मय वयुः प्राणाख्या देवता आं बीजं ह्रीं शक्ति क्रौं कीलकम् अस्यां नूतन मूर्तौ प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः॥

प्रतिमा का स्पर्श करते हुये अथवा स्वर्ण निर्मित प्रतिमा को बाये हाथ में रख दाहिने हाथ की हथेली से ढककर बीजमंत्रों को पढ़कर प्राणप्रतिष्ठा करें।

ॐ आं ह्रीं क्रौ यं रं लं वं शं षं सं क्षं हंसः॥
अस्य मूर्तीनां प्राणाइह तिष्ठन्तु।
ॐ आं ह्री क्रौ यं रं लं वं शं षं सं क्षं हंसः॥
अस्य मूर्तीना सर्वेन्द्रियाणि तिष्ठन्तु।
ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं क्षं हंसः॥

अस्य मूर्तीनां वाङ्मनस्त्वक्चक्षु श्रोत्रजिह्वा घ्राण पाणिपाद पायुपस्थानि इहागत्य चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा॥
अस्यै प्राणा प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणा क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥१॥

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तन्नो त्वरिष्ठं यज्ञ ँ समिमन्द धातु॥ विश्वेदेवा स इह मादयन्ता ३मो प्रतिष्ठ॥ एष वै प्रतिष्ठा नाम यज्ञो यत्रे तेन यज्ञेन यजन्ते सर्वमेव प्रतिष्ठतं भवति॥

प्रतिष्ठा कर १६ मंत्र पुरुष सूक्त से स्नान करवा आचार्य मूर्ति को गायत्री मंत्र सुनावे।

।।अथ श्री नृसिंह पूजन।।

ध्यान-

कोपादालोल जिह्वं विवृत निजमुखं सोमसूर्याग्नि नेत्रम्।
पादादानाभिरक्त प्रभ मुपरिसितं भिन्न दैत्येन्द्र गात्रम्।।
शंखं चक्रं च पाशांकुश कुलिशगदादारुणाना युद्ध हस्तं।
भीमं तीक्ष्णाग्रदंष्ट्रं मणिमय विविधा कल्पमीडे नृसिंहम्।।

भगवान नृसिंह को पुष्प अर्पण कर आवाह्न करें-

आवाहन-

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रापात्।
सभूमिꣳसर्वतस्पृत्त्वा त्यतिष्ठदशांगुलम्।।
आवाहनं समर्पयामि।।

आसन-

पुरुषऽएवेदꣳ सर्वंयद्भूतंयच्च भाव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेन्नाति रोहति।।
आसनं समर्पयामि।।

पाद्य-

ॐ एतावानस्य महिमातोज्यायांश्च पूरुषः।
पादोस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्या मृतन्दिवि।।
पाद्यं समर्पयामि।।

अर्घ्य-

त्रिपादूर्ध्वऽउदैत्पुरुषः पादोस्येहा भत्पुनः।
ततो विष्वङ्व्यक्रामत्साशनान शनेऽअभि।।
अर्घ्यं समर्पयामि।।

आचमन-

ततो विराडजायत विराजोऽअधिपूरुषः।
सजातोऽअत्यरिच्यतपश्चाद्भूमिमथोपुरः।।
आचमनं समर्पयामि।

स्नानीयजल-

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतम्पृष दाज्यम्।
पशूँस्तांश्चक्रे वायव्या नारण्या ग्राम्याश्चये।।
स्नानीय जलं समर्पयामि।।

पयस्नान-

ॐ पयः पृथिव्यां पय औषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षे
पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तुमह्यम्।।
पयस्नानं समर्पयामि।।

दधिस्नान-

दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः।
सुरभि नो मुखा करत्प्रण आयू ँषि तारिषत्।।
दधिस्नानं समर्पयामि।।

घृतस्नान-

ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसं वसापावानः। पिवतान्त रिक्षस्य हविरसि स्वाहा दिशः प्रदिशऽ आदिशो विदिश उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा॥

घृतस्नानं समर्पयामि॥

मधुस्नान

-मधुव्वाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्तोषधिः। मधुनक्त्मुतोसषो मधुमत्पार्थिवꣳ रजः मधु द्यौ रस्तु नः पिता। मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमां २ऽअस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥

मधुस्नानं समर्पयामि॥

शर्करास्नान-

अपाꣳरसमुद्वयसꣳ सूर्ये सन्तꣳ समाहितम् अपाꣳरसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयाम गृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णामेषते योनि रिन्द्रायत्वा जुष्टतमम्॥

शर्करास्नानं समर्पयामि॥

पंचामृत स्नानं-

पंचनद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोत सः।
सरस्वती तु पंचधा सोदेशेऽभवत्सरित्॥
पंचामृतस्नानं समर्पयामि॥

शुद्धोदक स्नान-

शुद्धवालः सर्वशुद्धवालोमणि वालस्तऽआश्विनाः॥
श्येतः श्येताक्षोरुणस्तेरुद्राय पशुपतये
कर्णायामाऽअवलिप्ता रौद्रा नभो रूपाः पार्जन्याः॥
शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि॥

वस्त्र-

सुजातो ज्योतिषा सह शर्म्म वरुथमासदयत्स्वः।
वासोऽअग्नेविश्वरूपꣳसंव्य यस्व विभावसो॥
वस्त्रं समर्पयामि॥

यज्ञोपवीत-

यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्य प्रतिमुंच शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥
यज्ञोपवीतं समर्पयामि॥

गन्ध-

त्वांगन्धर्वाऽअखनंस्त्वामिन्द्रस्त्वाम्बृहस्पतिः ।
त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत॥
गंधं समर्पयामि॥

अक्षत-

अक्षन्नमीमदन्त ह्यवप्रियाऽअधूषत।
अस्तोषतस्वभानवो विप्रान
विष्ट्ठयामतीयोजान्विन्द्र ते हरी।।

अक्षतं समर्पयामि।।

पुष्प-

ओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।
अश्वाऽइव सजित्त्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्णवः।।

पुष्पं समर्पयामि।।

धूप-

धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं यो ऽ स्मान् धूर्वति।
तं धूर्व यं वयं धूर्वामः देवानामसि वह्नितम
ॐसस्नितमं पप्रितम जुष्टतम देवहूतमम्।।

धूपं आघ्रापयामि।।

दीप-

चन्द्रमांऽअप्स्वन्तरा सुपर्णो धावते दिवि।
रयिंपिशङ्गं बहुलं पुरुस्पृहॐहरिरेति कनिक्रन्दत्।।

दीपं दर्शयामि।।

नैवेद्य-

अन्नपतेऽन्नस्यनो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः।
प्रप्र दातारं तारिष ऽ ऊर्जं नो देहि द्विपदे चतुष्पदे॥

नैवेद्यं निवेदयामि॥

ताम्बूल-

उत स्मास्य द्रवतस्तुरण्यतः पर्णं न वेरनुवाति प्रगर्धिनः। श्येनस्येव ध्रजतोऽअङ्कसं परि दधिक्राव्णः स होर्जातरित्रतः स्वाहा॥

ताम्बूलं समर्पयामि॥

ऋतुफल-

याः फलिनीर्याऽअफलाऽअपुष्पा याश्चपुष्पिणीः।
बृहस्पतिप्रसूता स्तानो मुचंन्त्व ँ हसः॥

ऋतुफलं समर्पयामि॥

दक्षिणा-

यद्दतं यत्परादानं यत्पूर्तं याश्च दक्षिणाः।
तदग्निर्वैश्वकर्मणः स्वर्देवेषुनो दधत्॥

दक्षिणां समर्पयामि॥

।।आरती।।

ॐ इद ॐ हविः प्रजननं मे अस्तु दशवीर ॐ सर्वगण ॐ स्वस्तये। आत्मसनि प्रजासनि पशु सनि लोकसन्य भयसनि। अग्निः प्रज्ञां बहुलां मे करोत्वन्नं पयोरेतो अस्मासुधत्।।

।।प्रार्थना।।

सत्यज्ञानसुख स्वरूप ममलं क्षीराब्धि मध्ये स्थलं।
योगारूढमति प्रसन्नवदनं भूषा सहस्रो ज्वलम्।।
त्र्यक्षं चक्रपिनाक साभयवरान्बिभ्राणमर्कच्छविं।
छत्रीभूतफणींद्रमिंदु धवणं लक्ष्मी नृसिंह भजे।।

य: स्थूल सूक्ष्मः प्रकट प्रकाशो
य: सर्वभूतो न च सर्वभूतः।
विश्वं यतश्चैतदविश्वहेतो-
र्नमोऽस्तु तस्मैं पुरुषोत्तमाय।।

।। इति नृसिंह पूजनम् ।।

॥अथ श्री नृसिंह कवचम्॥

विनियोग

अस्य श्री नृसिंह कवच मंत्रस्य प्रह्लाद ऋषिः, नृसिंहो देवता, अनुष्टुप्छन्दः, सर्वव्यापीस्तम्भभवाय इति बीजम्, श्रीः शक्तिः, गुह्यरूपधृग् इति कीलकम्, श्रीनृसिंह प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः॥

॥करन्यास॥

ॐ योगीहृत्पद्म निवासाय अंगुष्ठाभ्यां नमः॥
ॐ नृसिंहाय तर्जनीभ्यां नमः॥
ॐ स्वप्रकाशाय मध्यमाभ्यां नमः॥
ॐ सूर्यसोमाग्निलोचनाय अनामिका नमः॥
ॐ दिव्य नखास्त्राय कनिष्ठिकाभ्यां नमः॥
ॐ विद्युत् जिह्वाय करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः॥

॥हृदयादिन्यास॥

ॐ योगीहृत्पद्म निवासाय हृदयाय नमः॥
ॐ नृसिंहाय शिरसे स्वाहा॥
ॐ स्व प्रकाशाय शिखायैवषट्॥
ॐ सोम सूर्याग्नि लोचनाय कवचाय हुम्॥

ॐ दिव्य नखास्त्राय नेत्राभ्यां वषट्।।
ॐ विद्युत जिह्वाय अस्त्राय फट्।।

।।अथ ध्यानम्।।

कर्पूर धाम धवलं कटकाङ्गदादि,
भूषं त्रिनेत्र शशिशेखर मण्डितास्यामं।।
वामाङ् संश्रित रमा नयनाभिरामं
चक्राब्ज शंखसगदनं नृहरिं नमामि।।१।

अर्थ-जो नरहरि कपूर की राशि के समान श्वेतवर्ण है, कंकण तथा केयूर आदि आभूषणों से जो शोभित हैं, नेत्रों को सुन्दर दिखाई देने वाली लक्ष्मी बाये अंग में स्थित है, जो चक्र कमल शंख तथा गदा से युक्त हैं मैं प्रणाम करता हूं।।१।।

ध्यात्वा नृसिंह देवेशं हेमसिंहासन स्थितम्।
विततास्यं त्रिनयनं शरदिन्दु समप्रभम्।।२।।

अर्थ- सोने के सिंहासन पर स्थित विकराल जिनका मुख है तीन नेत्र शरद्कालीन चन्द्रमा के समान जो शुभ्र है।।२।।

लक्ष्म्या लिङ्गितं वाम भागं सिद्धैरुपासितम्।
चुतुर्भुजं कोमलांगं मणिकुण्डल भूषितम्।।३।।

अर्थ- लक्ष्मी वांये भाग में सुशोभित है सिद्धों के द्वारा जिनकी उपासना हो रही है चारभुजा

कोमल शरीर वाले मणि कुण्डल से शोभित हैं।।३।।

हारोपशोभितोरस्कं रत्नकेयूर मण्डितम्।
तप्तकांचन संकाशं पीत निर्मल वाससम्।।४।।

अर्थ- वक्षस्थल पर जिनके हार शोभा पा रहा है रत्नों से युक्त आभूषणों से भुजा शोभित हो रही है तपे हुए सोने के समान सुन्दर पीताम्बर शरीर पर धारण किये हैं।।४।।

इन्द्रादि सुरमौलीस्थवरमाणिक्य दीप्तिभिः।
विराजित पदद्वन्द शंख चक्रादि हेतुभिः।।५।।

अर्थ- प्रणाम करने योग्य इन्द्र आदि देवताओं के मुकुटों में जड़ित श्रेष्ठ मणियों की क्रान्ति से शंख चक्र आदि शास्त्र से चिन्हित दोनों चरण शोभायमान हैं।।५।।

गुरुत्मता च विनयात्स्तूयमानं मुदान्वितम्।
स्वहृत्कमल मध्यस्थं कृत्वा तु कवचं पठेत्।।६।।

अर्थ-नम्र हो गरुड़ जी जिनकी स्तुति कर रहे हैं, ऐसे आनन्द के सागर श्री लक्ष्मी नृसिंह का (साधक) ध्यानकर उनको अपने हृदय कमल में स्थापित करके इस नृसिंह कवच का पाठ करें।।६।।

।। इति ।।

॥अथ श्रीनृसिंह कवच मंत्र॥

नृसिंहो मे शिरः पातु लोकरक्षार्थ सम्भवः।
सर्वव्यापी स्तंभवासी भालं मे रक्षताद्बली॥१॥

संसार की रक्षा के लिये प्रगट हुए नृसिंह मेरे शिर की रक्षा करे, स्थंभ में निवास करने वाले सर्वव्यापी बलशाली नरसिंह भाल की रक्षा करें॥१॥

श्रुति मे पातु नृहरि मुनिवर्य स्तुतिप्रिय।
नासां मे सिंहनासौ मुखं लक्ष्मीमुख प्रिय॥२॥

ऋषियों द्वारा की गई स्तुति के प्रिय नरसिंह कानों में रक्षा करे, सिंह नासिकावाले नरसिंह नासिका में रक्षा करें, लक्ष्मी के मुख से प्रेम करने वाले नरसिंह मुख की रक्षा करें॥२॥

सर्वविद्याधिपः पातु नृसिंहो रसनां मम।
नृसिंहः पातु मे कण्ठं सदा प्रह्लाद वंदितः॥३॥

सम्पूर्ण विद्या के अधिपति नृसिंह मेरी जिह्वा की रक्षा करें, प्रह्लाद के द्वारा वंदित नरसिंह सदा मेरे कण्ठ की रक्षा करें॥३॥

वक्त्रं पात्विन्दुवदनं भूभार नाशकृत।
दिव्यास्त्रशोभित भुजो नृसिंहः पातु मे भुजे॥४॥

चन्द्रमा के समान मुख वाले नरसिंह हमारे मुख

की रक्षा करे, संसार के भार का नाश करने वाले नरसिंह कंधों की रक्षा करें, दिव्य अस्त्रों से शोभित भुजावाले नृसिंह मेरी भुजाओं की रक्षा करें।।४।।

करौ मे देववरदो नृसिंहः पातु सर्वतः।
हृदयं योगिहृत्पद्म निवासः पातु मे हरि।।५।।

देवताओं को वरदान देने वाले नृसिंह मेरे हाथों की रक्षा करें, स्वयं नरसिंह मेरे चारों ओर की रक्षा करें। योगियों के कमल हृदय में निवास करने वाले हरि मेरे हृदय की रक्षा करें।।५।।

मध्यं पातु हिरण्याक्ष रक्षः कुक्षिविदारणः।
नाभिं मे पातु नृहरियन्ता हृदयस्थितः।।६।।

हिरण्याक्ष राक्षस के उदर को विदारण करने वाले नरसिंह मेरे मध्यभाग की रक्षा करें, हृदय निवासी नियामक नृसिंह मेरी नाभी की रक्षा करें।।६।।

ब्रह्माण्ड कोटयः कट्या यस्यासौ पातु मे कटिम्।
गुह्यं मे पातु गुह्यानां मन्त्राणां गुह्य रूप धृक्।।७।।

जिनकी कटिभाग करोड़ों ब्रह्माण्ड हैं ऐसे नरसिंह मेरे कटिभाग की रक्षा करें, गोपनीय मंत्रों में गुप्तरूप से निवास करने वाले भगवान मेरे गुप्तांगों की रक्षा करें।।७।।

उरू मनोजवः पातु जानुं नृहरिरूपधृक्।
जंघे पातुधरा भारहर्ता गुल्फौ नृकेशरी॥८॥

मन के समान, समान वेगवान नरसिंह मेरे पैरों की रक्षा करें, नरसिंह का रूप धारण करने वाले भगवान मेरे घुटनों की रक्षा करें, पृथ्वी का भार हरण करने वाले जंघों की और नरसिंह भगवान मेरे गुल्फो की रक्षा करें॥८॥

सुरराज्यप्रदः पातु पादौ मे नृहरिश्वरः।
सहस्रशीर्षा पुरुषः पातु मे सर्वंतस्तनुम्॥९॥

इन्द्रको राज्य प्रदान करने वाले नृसिंह स्वयं मेरे पैरों की रक्षा करें हजार शिरवाले पुरुष मेरे शरीर की सब ओर से रक्षा करें॥९॥

इतः परं मंत्रपादौ पातु मे सर्वदिक्षु च।
महोग्रः पूर्वतः पातु महावीरोऽग्नि भागतः॥१०॥

इसके आगे मंत्रों को गति प्रदान करने वाले भगवान मेरी सब दिशाओं में रक्षा करें, पूर्व दिशा में महाउग्र, आग्नेय दिशामें महावीर नरसिंह मेरी रक्षा करें॥१०॥

दक्षिणे च महाविष्णु महाज्वालास्तु नैर्ऋते।
पश्चिमे पातु सर्वेशः सर्वात्मा सर्वतोमुखम्॥११॥

महाविष्णु दक्षिण में और महाज्वालारूप नरसिंह नैर्ऋत्य में सर्वेश्वर पश्चिम में सर्वात्मा नरसिंह सर्वप्रकार से मेरी रक्षा करें।।११।।

नृसिंहः पातु वायव्ये सौम्य भिषण विग्रहः।
ईशाने पातु भद्रो मां सर्वमंगल दायकः।।१२।।

नृसिंह वायव्यकोण में उत्तर में भयानक शरीर धारण करने वाले नृसिंह तथा सम्पूर्ण मंगल प्रदान करने वाले भगवान ईशान से मेरी रक्षा करें।।१२।।

संसार भयतः पातु मृत्युर्मृत्युंजयो हरिः।
जले रक्षतु वाराहः स्थले रक्षतु वामनः।।१३।।

संसार के भय से मृत्युंजय मृत्युस्वरूप हरि रक्षा करें। वाराह जल में वामन स्थल में रक्षा करे।।१३।।

अटव्यानारसिंहस्तु सर्वतः पातु केशवः।
सुप्ते स्वयंभुवः साक्षात् जाग्रते च जनार्दनः।।१४।।

मार्ग में नरसिंह सम्पूर्ण जगह केशव तथा सोते हुए साक्षात् स्वयं भू जगने पर जर्नादन भगवान रक्षा करें।।१४।।

इदं नृसिंहकवचं प्रह्लाद मुख निर्गतम्।
भक्तिमान्यः पठेनित्यं सर्व पापै प्रमुच्यते।।१५।।

प्रह्लाद के मुख से निकला हुआ कवच का यदि मनुष्य भक्तिभाव से रोज पाठ करे तो वह सब पापों से मुक्त हो जाता है।।१५।।

पुत्रवान् धनवांल्लोके दीर्घायुश्चाभिजायते।
यंयं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम्।।१६।।

मनुष्य इस कवच का पाठ करने से पुत्रवान, धनवान होकर संसार में दीर्घायु होता है और जिस-जिस का चिन्तन करता है उस-उस को प्राप्त करता है।।१६।।

सर्वज्ञत्वं समवाप्नोति सर्वत्र विजयी भवेत्।
भ्यूमन्तरिक्षदिव्यानां ग्रहाणां विनिवारणम्।।१७।।

कवच का पाठ करने वाला सर्वज्ञ हो जाता है सर्वत्र विजयी होता है और पृथ्वी अन्तरिक्ष और दिव्यलोकों में रहने वाले ग्रहों का निवारक है।।१७।।

वृश्चिकोरग सम्भूत विषाप हरणं परम्।
गुह्यराक्षस यक्षाणां दूरा द्विद्रावकारणम्।।१८।।

बिच्छू व सर्प दंश से उत्पन्न विष को हरनेवाला तथा गुह्य राक्षस और यक्षों को दूर भगा देता है।।१८।।

भूर्जे वा तालपत्रे का लिखितं कवचं शुभम्।
करमूले धृतं एन सिध्द्यस्तत्करे स्थिताः।।१९।।

भोजपत्र या तालपत्र में लिखकर इस कवच को भुजा में बान्धने से सिद्धियां उसके हाथ में स्थित हो जाती है।।१९।।

नृसिंह कवचैनैव रक्षितो वज्ररक्षित।
देवासुर मनुष्येषु स्वाज्ञया विजयं भवेत।।२०।।

नृसिंह कवच को धारण करने से मनुष्य की रक्षा वज्र से भी होती है तथा देवों असुरों मनुष्यों पर आज्ञा मात्र से विजय होती है।।२०।।

एकसन्ध्यं द्विसन्ध्यं वा त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः।
प्राप्नोति परमारोग्यं विष्णुलोके महीयते।।२१।।

सन्ध्या के समय दोनों सन्ध्या के समय या तीनों सन्ध्या के समय जो कोई इस कवच का पाठ करता है वह परम आरोग्यता पाकर विष्णुलोक को प्राप्त करता है।।२१।।

द्वात्रिंशत्सहस्त्रान वैपाठाच्छुत्वात्मनां नृणाम्।
कवचस्यास्य मन्त्रत्वान्मत्रसिद्धि प्रजायते।।२२।।

यह कवच मंत्र जो मनुष्य स्वयं किया हुआ बत्तीस हजार पाठ सुने तो मन्त्र की सिद्धि हो जाती है।।२२।।

अनेन मंत्रराजेन कृत्वा भष्माभिमंत्रितम्।
तिलकं धारयेद्यस्तु तस्य ग्रहभयं हरेत्।।२३।।

यह कवच मंत्रराज है, इससे अभिमंत्रित करके भस्म का तिलक धारण करने से उसका (जिसको तिलक लगावे) ग्रहभय दूर हो जाता है।।२३।।

त्रिवारं जपमानस्तु पूतं वीर्यंभिमन्त्र्य च।
प्राश मेद्यं नरं मंत्रैनृसिंह ध्यान माचरन्।।२४।।

इस कवच के मंत्र को तीन बार पढ़कर जल अभिमंत्रित करे नृसिंह का ध्यान कर फिर रोगी आदमी को पिलावै।।२४।।

तस्य रोगाः प्रणश्यन्ति यंचस्युः कुक्षिसम्भवाः।
किमंत्रं वहुनोक्तेन नृसिंहसदृशो भवेत।।२५।।

उस रोगी के उदरजन्य सब प्रकार के रोग नष्ट हो जाते हैं बहुत क्या कहा जाय वह मनुष्य नरसिंह के समान हो जाता है।।२५।।

षणमासे फलमाप्नोति कवचस्य प्रभावतः।
मनसा चिन्तितं यद्यत्तत्प्राप्नोति निश्चितम्।।२६।।

कवच के प्रभाव से छः मास तक नियम पूर्वक पाठ करने से फल की प्राप्ति हो जाती है और मन में जिसे प्राप्त करने की चिन्ता होती है निश्चित रूप से उसकी प्राप्ति होती है।।२६।।

इति परमरहस्य सार भूतं
कवचवरं पठति प्रकृष्टभक्त्या।
स भवति धनधान्य पुत्रलाभी
तनुविगमे समुपैति नारसिंहम्॥२७॥

यह कवच सम्पूर्ण रहस्यों का तत्व सार है, जो तीव्र भक्ति से इस कवच का पाठ करता हैं वह धनधान्य पुत्र आदि प्राप्त करता है तथा शरीर छूटने के उपरान्त नरसिंह तत्व को प्राप्त करता है॥२७॥

॥ इति श्रीनृसिंह पुराणे प्रह्लादोक्तंनृसिंह कवचम्॥

॥नृसिंह जप से पूर्व ध्यान॥

श्रीमन्नृकेशरितनो जगदेक बंधो
श्री नीलकण्ठ करूणार्णव सामराज।
वह्निदुतिव्रकर नेत्र पिनाकपाणे
शितांशु शेखर रमेश्वर पाही विष्णो॥१॥

क्षीराब्धौ वसुमुख्य देव निकरैरग्रादि संवेष्टित।
शंखं चक्रगदांबुजं निजकरै र्बिभ्रंस्त्रिनेत्रसितः॥
सर्पाधीशफणात पत्रलसितः पीतांबरलंकृतो।
लक्ष्याश्लिष्टकलेवरो नरहरिः स्तान्नीलकंठोमुदे॥२॥

॥नृसिंह गायत्री मंत्र॥

ॐ वज्र नखाय विद्महे
तीक्ष्ण दंष्ट्राय धीमहि
तन्नो नृसिंह प्रचोदयात्॥

।।नृसिंह जप मंत्र।।

जप विनियोगः-

ॐ अस्य श्री लक्ष्मी नृसिंह मंत्रस्य पद्मभव ऋषिः अति जगतीछंदः श्री नर केशरी देवता श्रीं बीजं ह्रिं शक्तिः ममाभिष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।।

१. ॐ नमः भगवते नृसिंहाय नमस्तेजस्तेजसे।
अविराविर्भव वज्रनख वज्रदंष्ट्र कर्माशयान्।।
रन्धय रन्धय तमोग्रस ग्रस ॐ स्वाहा।
अभयमभय मात्मनि भूयिष्ठा ॐ क्षौम्।।
(श्रीमद् भागवत ५।९।८८)

२. ॐ क्ष्रौं प्रौं ह्रौं रौं ब्रौं ज्रौं नमः स्वाहा।।

३. ॐ उग्रवीरं महाविष्णु ज्वलन्तं सर्वतो मुखम्।
नृसिंह भीषणं भद्र मृत्युं मृत्युं नमाम्यहम्।।

४. त्र्यक्षर मंत्र- १. ह्रीं क्ष्रौं ह्रीं।
२. ॐ क्ष्रौं ॐ।

जप फल

कर्णनेत्र शिरः कण्ठरोगान्मत्रो विनाशयेत्।
अभिचारकृतांपीडां मनुमंत्रित भस्म च।।

कान नेत्र शिर कण्ठ रोग मंत्रित भस्म के धारण मात्र से दूर होते हैं तथा दैहिक कष्ट मंत्रित भस्म के धारण मात्र से दूर होते हैं।

नोट : उपरोक्त किसी भी एक मंत्र का विनियोग कर जप प्रारम्भ करें। जप निश्चित रूप से सम्पूर्ण फलों का देने वाला है। जप का दशांश पायस से हवन करें।

॥ नृसिंह स्तोत्र ॥

ब्रह्मोवाच-

नतोऽस्म्यनन्ताय दुरन्तशक्तये।
विचित्रवीर्याय पवित्र कर्मणे॥
विश्वस्य सर्ग-स्थिति संयमान गुणैः।
स्वलीलया सन्दधतेऽव्ययात्मने॥१॥

श्री रुद्रउवाच-

कोपकालो युगान्तस्ते हतोऽयमसुरोऽल्पकः।
तत्सुतं पाह्युपसृतं भक्तं ते भक्तवत्सल॥२॥

इन्द्र उवाच-

प्रत्यानीताः परम भवता त्रायतां नः स्वभागा।
दैत्याक्रान्तं हृदयकमलं त्वद्‌गृहं प्रत्यबोधि॥
कालग्रस्तं कियदिदमहो नाथ शुश्रूषतां ते।
मुक्तिस्तेषां न हि बहुमता नारसिंहा परैः किम्॥३॥

ऋषय ऊचुः

त्वनस्तपः परममात्थ यदात्मतेजो
येनेदमादिपुरुषात्म गतं ससर्जः।
तद्विप्र लुप्तमनुनाऽद्य शरण्यपाल
रक्षा गृहीत वपुषा पुनरन्वमंस्थाः॥४॥

पितर ऊचुः

श्राद्धानिनोऽधिवुभुजेप्रसभंतनूजैर्द्रत्तानि
तीर्थसमयेऽप्यबत्तिलाम्बु।
तस्योदरान्नखविदिर्णव पाद्यआर्च्छत्तस्मै
नमोनृहरेऽखिलधर्मगोप्त्रे॥५॥

सिद्धाऊचुः

यो नो गतिं योग सिद्धामसाधुरहारषीद्यो गतपो बलेन।
नानादर्पं तं नखैर्न्विद्रदार तस्मै तुभ्यं प्रणताः स्मो नृसिंह॥६॥

विद्याधरा ऊचुः

विद्या पृथग्धारणयाऽनुराद्धां न्यषेधदज्ञो बलवीर्यदृप्तः।
स येन संख्यै पशुवद्धतस्तं मायानृसिंह प्रणताः स्म नित्यम्॥७॥

नागा ऊचुः

येन पापेन रत्नानि स्त्रीरत्नानि हृतानि नः।
त द्वक्षः पाटनेनासां दत्तानन्द नमोऽस्तु ते॥८॥

मनवः ऊचुः

मनवो वयं तव निदेश कारिणो
दितिजेन देव परिभूत सेतवः।
भवता खलः स उपसंहृतः प्रभो
करवाम ते किमनुशाधि किङ्करान्॥९॥

प्रजापतये ऊचुः

प्रजेशा वयं ते परेशाभिसृष्टा
न येन प्रजा वैसृजामो निषिद्धाः।

स एव त्वया भिन्नवक्षाऽनु शेते
जगन्मङ्गलं सत्वमूर्तेऽवतारः ॥१०॥

गन्धर्वा ऊचुः

वयं विभो ते नटनाट्य गायका
एनात्मसाद् वीर्य बलौजसा कृताः।
स एवं नीतो भवता दशामिमां
किमुत्पथस्थः कुशलाय कल्पते॥११॥

चारणा ऊचुः

हरे तवाङ्घ्रिपंकजं भवापवर्ग माश्रिताः।
यदेष साधुहृच्छयस्त्वयाऽसुर समापितः॥१२॥

यक्षा ऊचुः

वयमनुचर मुख्याः कर्मभिस्ते मनोज्ञे-
स्त इह दिति सुतेन प्रपिता वाहकत्वम्।
स तु जनपरितापं तत्कृतं जानता ते
नरहर उपनीतः पञ्चतां पञ्चविंश॥१३॥

किम्पुरुषा ऊचुः

वयं किम्पुरुषास्त्वं तु महापुरुष ईश्वरः।
अयं कुपुरुषोनष्टो धिक्कृतः साधुभिर्यदा॥१४॥

वैतालिका ऊचुः

सभासु सत्रेषु तवामलं यशोगीत्वा
सपर्यां महतीं लभामहे।

यस्तां व्यनैषीद् भृशमेष दुर्जनो दिष्ट्या
हतस्ते भगवनयथाऽमयः॥१५॥

किन्नरा ऊचुः

वयमीश किन्नरगणास्तवानुगादिति-
जेनविष्टिममुना ऽनुकारिताः।
भक्त्या हरे स वृजिनोऽव सादितो
नृसिंहनाथ विभवाय नो भव॥१६॥

विष्णु पार्षदा ऊचुः

अद्यैतद्धरिनररूपमद्भुतं ते दृष्टं
नः शरणद सर्वलोकशर्म।
सोऽयं ते विधिकर ईश विप्रशप्तस्तस्येदं
निधनमनुग्रहाय विद्भः॥१७॥

॥ इति श्रीमद् भागवन्तान्तर्गते सप्तम
स्कधेऽष्टमध्यायेनृसिंहस्तोत्रंसम्पूर्णम्॥

भागवत पुराण के सप्तम स्कंध में अष्टम अध्याय के इस पाठ को करने से घर में शांति तथा घर के कलह शांत होते हैं। इस पाठ को करने से असाध्य बिमारी का नाश हो जाता है तथा इस पाठ को करने से धन की वृद्धि होती है।

॥श्री लक्ष्मी नृसिंह स्तोत्र॥

श्रीमत्पयोनिधि निकेतन चक्रपाणे
भोगीन्द्र भोगमणि रंजित पुण्यभूते।
योगीश शाश्वत शरण्य भवाब्धिपोत
लक्ष्मीनृसिंह ममदेहि करावलम्बम्॥१॥
ब्रह्मेन्द्र - रुद्रमरुदर्क - किरीट - कोटी
संघटितांघ्रिकमलामल कान्तिकान्त।
लक्ष्मीलसत् कुचसरोरुह राजहंस
लक्ष्मी नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥२॥
संसार घोर गहने चरतो मुरारे
मारोग्र भीकर - मृगप्रवरर्दितस्य।
आर्तस्य मत्सर - निदाध निपीडितस्य
लक्ष्मी नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥३॥
संसारकूप - मतिघोर मगाधमूलं
सम्प्राप्य दुःखशत सर्प समाकुलस्य।
दीनस्य देव कृपणापदमं आगतस्य
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥४॥
संसार - सागर - विशाल - करालकाल
नक्र ग्रह ग्रसन - निग्रह - विग्रहस्य।
व्यग्रस्य रागदसनोर्मिनिपीडितस्य

लक्ष्मी नृसिंह मम देहि करालवम्बम्।।५।।
संसार वृक्ष - भवबीजमनन्तकर्म
शखाशतं करण पत्र मनङ्ग पुष्पम्।
आरुह्य दुःखफलितं पततोदयालो
लक्ष्मी नृसिंहमम देहि करावलम्बम्।।६।।
संसारसर्पघनवक्त्र - भयोग्रतीव्र
दंष्ट्राकराल विषदग्ध विनष्टमूर्ते।
नागारिवाहन - सुधाब्धि निवास शौरे
लक्ष्मीनृसिंह ममदेहि करावलम्बम्।।७।।
संसारदावदहनातुर - भीकरोरु
ज्वालावली भिरति दग्धतनूरुहस्य।
त्वत्पादपद्म - सरसी शरणागतस्य
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्।।८।।
संसार जाल पतितस्य जगन्निवास
सर्वेन्द्रियार्थ - बडिशार्थ झषोपमस्य।
प्रोत्खण्डित - प्रचुरतालुक - मस्तकस्य
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्।।९।।
सारभी-करकरीन्द्र कलाभिघात
निष्पिष्टमर्मवपुषः सकलार्तिनाश।
प्राणप्रयाण भवभीति समाकुलस्य

लक्ष्मी नृसिंह मम देहि करावलम्बम॥१०॥
अन्धस्य मे हृतविवेक महाधनस्य
चौरेः प्रभो बलिभिरिन्द्रियनाम धेयैः।
मोहान्ध कूप कुहरे विनिपातितस्य
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥११॥
लक्ष्मीपते कमलनाभ सुरेश विष्णो
बैकुण्ठ कृष्ण मधुसूदन पुष्कराक्ष।
ब्रह्मण्य केशव जर्नादन वासुदेव
देवेश देहि कृपणस्य करावलम्बम्॥१२॥
यन्माय योर्जित वपुः प्रचुरः प्रवाह
मग्नार्थ मत्र निवहोरू करावलम्बम्।
लक्ष्मीनृसिंह चरणाब्जमधुव्रतेत
स्तोत्रं कृतं सुखकरं युविशंकरेण॥१३॥

इति श्रीमच्छङ्कराचार्य कृतं-लक्ष्मीनृसिंहस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

इस लक्ष्मीनृसिंह स्तोत्र की रचना श्री मच्छंकराचार्य जी ने की तथा लक्ष्मीनृसिंह स्तोत्र से बारम्बार प्रार्थना की बार-बार निवेदन किया कि हमें कोई कष्ट न व्यापे तथा हम सुखी रहें। कष्ट निवारण तथा सुखी जीवन के लिए लक्ष्मी नृसिंह का पाठ अवश्य करें।।

॥श्री नृसिंह सहस्त्रनाम स्तोत्र न्यास॥

विनियोग-

अस्य श्री मद्दिव्यक्ष्मीनृसिंह सहस्त्रनाम स्तोत्र मंत्रस्य ब्रह्माऋषिः श्रीलक्ष्मीनृसिंहो देवता, अनुष्टुप्छंदः, श्रीनृसिंह परमात्मा बीजम्, लक्ष्मीर्माया शक्तिः, जीवो बीजम्, बुद्धिः शक्तिः, उदानवायुर्बीजम्, सरस्वती शक्तिः, व्यंजनानिबीजानि, स्वराः शक्तयः, ॐ क्ष्रौं ऐं ह्रीं इति बीजानि, ॐ श्रीं अं आं इति शक्तय, विकीर्णनख दंष्ट्रायुधायेति कीलकम, अकारादिति बोधकम्, श्री लक्ष्मीनृसिंह प्रसादेन सर्वाभीष्टकामना सिद्ध्यर्थे श्रीलक्ष्मीनृसिंह सहस्त्रनाम स्तोत्र मंत्र जपे विनियोग।

॥ करन्यास ॥

ॐ श्री लक्ष्मीनृसिंहाय नमः अंगुष्ठाभ्यां नमः।

दोनों हाथों की तर्जनियों से अंगूठों को स्पर्श।

ॐ वज्रनखाय नमः तर्जनीभ्यां नमः।

दोनों हाथों के अंगूठों से तर्जनियों का स्पर्श

ॐ महारुद्राय नमः मध्यमाभ्यां नमः।

दोनों हाथों के अंगूठों से मध्यमा अंगुली का स्पर्श

ॐ सर्वतो मुखाय नमः अनामिकाभ्यां नमः।
दोनों हाथों के अंगूठों से अनामिका अंगुलियों का स्पर्श
ॐ विकटास्याय कनिष्ठिकाभ्यांनमः।
दोनों हाथों के अंगूठों से तर्जनी अंगुलियों का स्पर्श
ॐ वीराय करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः।
दोनों हाथो से दोनों हाथों के अग्र तथा पृष्ठ भागों का स्पर्श

॥ हृदयादिन्यास ॥

ॐ श्री लक्ष्मी नृसिंहाय नमः हृदयाय नमः।
दाहिनें हाथ की अंगुलियों से हृदय स्पर्श।
ॐ बज्रनखाय नमः शिर से स्वाहा।
दाहिनें हाथ की अंगुलियों से शिर का स्पर्श
ॐ महारुद्राय नमः शिखायै वषट्।
दाहिनें हाथ की अंगुलियों से शिखा का स्पर्श।
ॐ सर्वतोमुखाय नमः कवचाय हुम्।
दोनों हाथों से दोनों भुजाओं का स्पर्श।
ॐ विकटास्याय नेत्र त्रयाय वौषट्।
दाहिनें हाथ की तर्जनी अनामिका अंगुली से दोनों आखों को स्पर्श।
ॐ वीराय नमः अस्त्राय फट्।
दाहिनें हाथ को शिर के ऊपर घुमाकर बायें हाथ में ताली बजायें।

॥ श्री नृसिंह ध्यान॥

कोपादालोल जिह्व विवृत निजमुखं सोमसूर्याग्निनेत्रं।
पादादानाभिरक्त प्रभमुपरि सितं भिन्न दैत्येंद्र गात्रम्॥
शंखं चक्रं च पाशांकुश कुलिश गदा दारूणानायुद्ध हस्तं।
भीमंतीक्ष्णाग्रदंष्ट्रं मणिमय विविधा कल्पमीडेनृसिंहम्॥१॥
गर्जन्तं गर्जयन्तं निजभुजपटलं स्फोटयन्तं शिरन्तम्।
रूप्यन्तं तापयन्तं दिविभुविदितिजं क्षेपयन्तं शिरन्तम्॥
क्रन्दन्तं रोषयन्तं दिशिदिशि सततं संभरन्तं हरन्तं।
वीक्षंतं धर्णयन्तं कर निकर शतैर्दिव्य सिंहं नमामि॥२॥
सत्यज्ञान सुखस्वरूपममलं क्षीराब्धिमध्ये स्थलं।
योगारूढमति प्रसन्न वदनं भूषासहस्रोज्ज्वलम्।
त्र्यक्षं चक्र पिनाकसाभयवरान्बिभ्राणमर्कच्छविं।
छत्रीभूत फणीन्द्रमिन्दुधवलं लक्ष्मीनृसिंह भजे॥३॥
उपास्महेनृसिंहहाख्यं ब्रह्मवेदान्त गोचरम्।
भूयोलालितं संसारच्छेदहेतुं जगद्गुरुम्॥४॥
नृसिंह श्री गुरुं वन्दे साक्षान्नरायणात्मकम्।
चिदानन्दधनं पूर्ण कारुण्यामृत सागरम्॥५॥
तप्तहाटक केशान्त ज्वलत्पावक लोचनः।
वज्रायुधनखस्पर्श दिव्यसिंह नमोऽस्तुते॥६॥

॥ इतिनृसिंह ध्यान ॥

।।श्री नृसिंह सहस्त्रनाम स्तोत्र।।

ब्रह्मोवाच

ॐ ह्रीं श्रीं ऐं क्ष्रौं

ॐ नमोनारसिंहाय वज्रदंष्ट्राय वज्रिणे।
वज्रदेहाय वज्राय नमोवज्रनखाय च ।।१।।
वासुदेवाय वंद्याय वरदाय वरात्मने।
वरदाभयहस्ताय वराय वररूपिणे।।२।।
वरेण्याय वरिष्ठाय श्री वराय नमोनमः।
प्रह्लादवरदायैव प्रत्यक्ष वरदाय च।।३।।
परात्पर परेशाय पवित्राय पिनाकिने।
पावनाय प्रसन्नाय पाशिने पापहारिणे।।४।।
पुरुष्टुताय पुण्याय पुरुहूताय ते नमः।
तत्पुरुषाय तथ्याय पुराण पुरुषाय च ।।५।।
पुरोधसे पूर्वजाय पुष्कराक्षाय ते नमः।
पुष्पहासाय हासाय महाहासाय शार्ङ्गिणे ।।६।।
सिंहाय सिंहराजाय जगद्वश्याय ते नमः।
अट्टहासाय रोषाय जलवासाय ते नमः।।७।।
भूतावासाय भासाय श्री निवासाय खड्गिने।
खड्गजिह्वाय सिंहाय खड्गवासाय ते नमः।।८।।

नमोमूलाधिवासाय धर्मवासाय धन्विने।
धनंजयाय धन्याय नमोमृत्युंजयाय च ॥९॥
शुभंजयाय सूत्राय नमः शत्रुंजयाय च।
निरंजनाय नीराय निर्गुणाय गुणाय च ॥१०॥
निष्प्रपंचाय निर्वाण पदाय निविडाय च।
निरालंबाय नीलाय निकलाय कलाय च॥११॥
निमेषाय निबन्धाय निमेष गमनाय च।
निर्द्वन्दाय निराशाय निश्चयाय निराय च ॥१२॥
निर्मलाय निबन्धाय निर्मोहाय निराकृते।
नमोनित्याय सत्याय सत्कर्मनिरताय च ॥१३॥
सत्यध्वजाय मुंजाय मुंजकेशाय केशिने।
हरीशाय च शेषाय गुडाकेशाय वै नमः ॥१४॥
सुकेशायोर्ध्वकेशाय केशिसंहारकाय च।
जलेशाय स्थलेशाय पद्मेशायोग्ररूपिणे ॥१५॥
कुशेशयाय कालाय केशवाय नमोनमः।
सूक्तिकर्णाय सूक्ताय रक्त जिह्वाय रागिणे ॥१६॥
दीप्तरूपाय दीप्ताय प्रदीप्ताय प्रलोभिने।
प्रच्छिन्नाय प्रबोधाय प्रभवे विभवे नमः ॥१७॥
प्रभंजनाय पांथाय प्रमाया प्रमिताय च।
प्रकाशाय प्रतापाय प्रज्वलायोज्ज्वलाय च ॥१८॥

ज्वालामाला स्वरूपाय ज्वलज्जिह्वाय ज्वालिने।
महाज्वालाय कालाय कालमूर्तिधराय च ॥१९॥
कालांतकाय कल्पाय कलनाय कृते नमः।
कालचक्राय शक्राय वषट्चक्राय चक्रिणे॥२०॥
अक्रूराय कृतांताय विक्रमाय क्रमाय च।
कृतिने कृतिवासाय कृतघ्नाय कृतात्मने ॥२१॥
संक्रमाय च क्रुद्धाय क्रान्तलोकत्रयाय च।
अरूपाय स्वरूपाय हरये परमात्मने॥२२॥
अजयाय आदि देवाय अक्षयाय क्षयाय च ।
अघोराय सुघोराय घोरघोर तराय च ॥२३॥
नमोस्त्वघोरवीर्याय ललद्धोराय ते नमः।
घोराध्यक्षाय दक्षाय दक्षिणार्याय शंभवे॥२४॥
अमोघाय गुणौघाय अनघाय अघहारिणे।
मेघनादाय नादाय तुभ्यं मेघात्मने नमः॥२५॥
मेघवाहनरूपाय मेघश्यामाय मालिने।
व्याल यज्ञोपवीताय व्याघ्रदेहाय वै नमः॥२६॥
व्याघ्रपादाय च व्याघ्रकर्मिणे व्यापकाय च।
विकटास्याय वीराय विष्टर श्रवसे नमः॥२७॥
विकीर्ण नख दंष्ट्राय नखदंष्ट्रायुधाय च।
विष्वक्सेनाय सेनाय विह्वलाय बलाय च ॥२८॥

विरूपाक्षाय वीराय विशेषाक्षाय साक्षिणे।
बीतशोकाय विस्तीर्ण वदनाय नमोनमः॥२९॥
विधानाय विधेयाय विजयाय जयाय च।
विवुधाय विभावाय नमो विश्वंभराय च ॥३०॥
वीतरागाय विप्राय विटंकनयनाय च।
विपुलाय विनीताय विश्वयोने नमोनमः॥३१॥
चिदंबराय वित्ताय विश्रुताय वियोनये।
विह्वलाय विकल्पाय कल्पातीताय शिल्पिने॥३२॥
कल्पनाय स्वरूपाय फणितल्पाय वै नमः।
तडित्प्रभाय तार्याय तरुणाय तरस्विने॥३३॥
तपनायतरक्षाय तापत्रयहराय च।
तारकायतमोघ्नाय तत्वाय च तपस्विने॥३४॥
तक्षकाय तनुत्राय तटिने तरलाय च ।
शतरूपाय शांताय शतधाराय ते नमः॥३५॥
शतपत्राय तार्क्ष्याय स्थितयेशत मूर्तये।
शतक्रतु स्वरूपाय शाश्वताय शतात्मने॥३६॥
नमः सहस्त्रशिरसे सहस्त्र वदनाय च ।
सहस्त्राक्षाय देवाय दिशाश्रोत्राय ते नमः॥३७॥
नमः सहस्त्रजिह्वाय महाजिह्वाय ते नमः।
सहस्त्रनाम धेयाय सहस्त्राक्ष धराय च ॥३८॥

सहस्त्रवाहवे तुभ्यं सहस्त्रचरणाय च ।
सहस्त्रार्क प्रकाशाय सहस्त्रायुध धारिणे॥३९॥
नमः स्थूलाय सूक्ष्माय सुसूक्ष्माय नमोनमः।
सुक्षुण्याय सुभिक्षाय सुराध्यक्षाय शौरिणे॥४०॥
धर्माध्यक्षाय धर्माय लोकाध्यक्षाय वै नमः।
प्रजाध्यक्षाय शिक्षाय विपक्षक्षयमूर्तये॥४१॥
कालाध्यक्षाय तीक्ष्णाय मूलाध्यक्षाय ते नमः।
अधोक्षजाय मित्राय सुमित्र वरुणाय च ॥४२॥
शत्रुघ्नाय अविघ्नाय विघ्नकोटि हराय च ।
रक्षोघ्नाय तमोघ्नाय भूतघ्नाय नमो नमः॥४३॥
भूतपालाय भूताय भूतावासाय भूतिने।
भूतवेताल घाताय भूताधिपतये नमः॥४४॥
भूतग्रह विनाशाय भूतसंयमते नमः।
महाभूताय भृगवे सर्वभूतात्मने नमः॥४५॥
सर्वारिष्ट विनाशाय सर्वसम्पत कराय च ।
सर्वाधाराय शर्वाय सर्वार्ति हरये नमः॥४६॥
सर्वदुः ख प्रशांताय सर्वसौभाग्य दायिने।
सर्वज्ञायाप्यनंताय सर्वशक्तिधराय च ॥४७॥
सर्वेश्वर्य प्रदात्रेच सर्वकार्यविधायिने।
सर्वज्वर विनाशाय सर्वरोगापहारिणे॥४८॥

सर्वाभिचारहंत्रेच सर्वैश्वर्य विधायिने।
पिंगाक्षायैकश्रृगाय द्विश्रृगाय मरीचये।।४९।।
बहुश्रृगाय लिंगाय महाश्रृगाय ते नमः।
मांगल्याय मनोज्ञाय मंतव्याय महात्मने।।५०।।
महादेवाय देवाय मातुलिंग धराय च।
महामाया प्रसूताय प्रस्तुताय च मायिने।।५१।।
अनन्तानंत रूपायमायिने जलशायिने।
महोदराय मंदाय मददाय मदाय च ।।५२।।
मधुकैटभ हंत्रे च माधवाय मुरारये।
महावीर्याय धैर्याय चित्रवीर्याय ते नमः।।५३।।
चित्रकूर्माय चित्राय नमस्ते चित्रभानवे।
मायातीताय मायाय महावीराय ते नमः।।५४।।
महातेजाय बीजाय तेजोधाम्ने च बीजिने।
तेजोमय नृसिंहाय नमस्ते चित्रभानवे।।५५।।
महादंष्ट्राय तुष्टाय नमः पुष्टिकराय च।
शिपिविष्टाय त्वृष्टाय पुष्टाय परमेष्टिने।।५६।।
विशिष्टाय च शिष्टाय गरिष्टायेष्ट दायिने।
नमोजेष्ठाय श्रेष्ठाय तुष्टायामित तेजसे।।५७।।
अष्टागन्य स्तरूपाय सर्वदुष्टान्तकाय च ।
वैकुण्ठाय विकुण्ठाय शितिकण्ठाय ते नमः।।५८।।

कंठीरवाय लुठायनिः शठाय हठाय च ।
सत्त्वोद्रिक्ताय रुद्राय ऋग्यजुः सामगायच॥५९॥
ऋतुध्वजाय वज्राय मंत्रराजाय मंत्रिणे।
त्रिनेत्राय त्रिवर्गाय त्रिधाम्ने च त्रिशूलिने॥६०॥
त्रिकालज्ञानरूपाय त्रिदेहाय त्रिधात्मने।
नमस्त्रिमूर्ति विद्याय त्रितत्व ज्ञानिने नमः॥६१॥
अक्षोभ्यायानिरुद्धाय अप्रमेयाय भानवे।
अमृताय अनंताय अमितायामितौज से ॥६२॥
अपमृत्युविनाशाय अपस्मार विघातिने।
अन्नदायन्नरूपाय अन्नायान्नभुजे नमः॥६३॥
नाद्याय निरवद्याय विद्यायाद्भुत कर्मणे।
सद्योजाताय संघाय वैयताय नमोनमः॥६४॥
अध्वातीताय सत्वाय वागतीताय वाग्मिने।
वागीश्वराय गोपाय गोहिताय गवांपते॥६५॥
गंधर्वाय गभीराय गर्जितायोर्जिताय च ।
प्रजन्याय प्रबुद्धाय प्रधान पुरुषाय च ॥६६॥
पद्माभाय सुनाभाय पद्मनाभाय मानिने।
पद्मनेत्राय पद्माय पद्मायापतये नमः॥६७॥
पद्मोदराय पूताय पद्मकल्पोद्भवाय च।
नमोहृत्पद्मवासाय भूपद्मोधरणाय च ॥६८॥

शब्द ब्रह्म स्वरूपाय ब्रह्मरूपधराय च।
ब्रह्मणे ब्रह्मरूपायपद्मनेत्र नमो नमः।।६९।।
ब्रह्मादय्रे ब्राह्मणाय ब्रह्म ब्रह्मात्मने नमः।
सुब्रह्मण्याय देवाय ब्रह्मण्याय त्रिवेदिने।।७०।।
परब्रह्म स्वरूपाय पंचब्रह्मात्मने नमः।
नमस्तेब्रह्मशिरसे तथा श्वशिरसे नमः।।७१।।
अथर्वशिरसे नित्यमशनि प्रमिताय च ।
नमस्तेतीक्ष्ण दंष्ट्राय लोलाय ललिताय च ।।७२।।
लावण्याय लवित्राय नमस्ते भासकाय च।
लक्षणज्ञाय लक्षाय लक्षणाय नमो नमः।।७३।।
लसद्दीप्ताय लिप्ताय विष्णवे प्रभविष्णवे।
वृष्णिमूलाय कृष्णाय श्रीमहाविष्णवे नमः।।७४।।
पश्यामित्वां महासिंहं हारिणं वनमालिनम्।
किरीटिनं कुण्डलिनं सर्वांगं सर्वतोमुखम्।।७५।।
सर्वतः पाणी पादौरं सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम्।
सर्वेश्वरं सदातुष्टं समर्थ समर प्रियम्।।७६।।
बहुयोजन विस्तीर्ण बहुयोजनमायतम्।
बहुयोजनहस्ताघ्रिं बहुयोजन नासिकम्।।७७।।
महारूपं मह..वक्रं महादंष्ट्रं महाभुजम्।
महानादं महारौद्रं महाकायं महाबलम्।।७८।।

आनाभेर्ब्रह्मणोरूपमागलाद्वैष्णवं तथा।
आशीर्षाद्रुद्रमीशानं तदग्रे सर्वतः शिवम्॥७९॥
नमोऽस्तु नारायण नारसिंह
नमोऽस्तु नारायण वीर सिंह।
नमोऽस्तु नारायण क्रूरसिंह
नमोऽस्तुनारायण दिव्यसिंह॥८०॥
नमोऽस्तु नारायण व्याघ्रसिंह
नमोऽस्तु नारायण पुच्छ सिंह।
नमोऽस्तु नारायण पूर्णसिंह
नमोऽस्तु नारायण रौद्रसिंह॥८१॥
नमो नमो भीषण भद्र सिंह
नमो नमो विह्वल नेत्र सिंह।
नमो नमो बृंहित भूत सिंह
नमो नमो निर्मलचित्र सिंह॥८२॥
नमो नमो निर्जित कालसिंह
नमो नमो कल्पित कल्प सिंह।
नमो नमः कामद काम सिंह
नमो नमस्ते भुवनैक सिंह॥८३॥
द्यावा पृथिव्यौरिदमतंर हि
व्याप्तं त्वयैकेन दिशश्च सर्वाः।

दृष्टवाद्भूतंरूपमुग्रंतवेदं
लोकत्रयं प्रव्यथितं महात्मन्।।८४।।
अमीहित्वा सुरसंघा विशंति।
केचिद्भीताः प्रांजलयो गृणान्ति।
स्वस्तीत्युक्त्वा मुनयः सिद्धसंघा
स्तुवन्ति त्वांस्तुतिभिः पुष्कलाभिः।।८५।।
रुद्रादित्या वसवो ये च साध्या
विश्वेदेवा मरुत श्चोष्मपाश्च।
गंधर्वयक्षा सुरसिद्धसंघा
विक्ष्यंतित्वां विस्मिता श्चेवसर्वे ।।८६।।
ले लिह्य सेग्रसमान समंता
लोकान्समग्रान्व दनैर्ज्वलद्भि।
तेजोभिरापूर्य जगत्समग्रं
भासस्तवोग्रः प्रतपंति विष्णो।।८७।।
भविष्णुस्त्वं सहिष्णुस्त्वं भ्राजिष्णुर्जिष्णु रेव च।
पृथिवीमंतरिक्षंत्वं पर्वतारण्य मेव च ।।८८।।
कलाकाष्ठविलिप्स्त्वं मुहूर्त प्रहरादिकम्।
अहोरात्रं त्रिसध्या च पक्षमासर्तु वत्सराः।।८९।।
युगादिर्युगभेदस्त्वं संयुगो द्युगसंधयः।
नित्यंनैमित्तिकं दैनं महाप्रलयमेव च ।।९०।।

करणं कारणं कर्ता भर्ता हर्ता त्वमीश्वर।
सत्कर्ता सत्कृतिगोप्ता सच्चिदानन्द विग्रह ॥९१॥
प्राणस्त्वं प्राणिनाप्रत्यगात्मा एवं सर्वदेहिनाम्।
सुज्योतिस्त्वं परंज्योति रात्मज्योतिः सनातनः॥९२
ज्योतिर्लोक स्वरूप स्त्वं ज्योतिर्ज्ञो ज्योतिषांपतिः।
स्वाहाकारः स्वधाकारो वषट्कारः कृपाकरः ॥९३॥
हंतकारो निराकारो वेगाकारश्च शंकरः।
अकारादि हंकरात ॐकारो लोककारकः॥९४॥
एकात्मा त्वमनेकात्मा चतुरात्मा चतुर्भुजः।
चतुर्मूर्ति चतुर्दंष्ट्र चतुर्वेदमयोत्तमः॥९५॥
लोकप्रियो लोकगुरुर्लोकेशो लोकनायकः।
लोकसाक्षी लोकपतिर्लोकात्मा लोकलोचनः॥९६॥
लोकाधारो बृहल्लोको लोकालोकमयो विभुः।
लोककर्ता विश्वकर्ता कृतावर्तः कृतागमः॥९७॥
अनादिस्त्वं अनन्तस्त्वं अभूतो भूतविग्रह।
स्तुतिस्तुत्यस्तवप्रीतः स्तोतानेता नियामकः॥९८॥
त्वंगतिस्त्वं मतिर्मह्यं पितामाता गुरुः सखा।
सुत्हृदश्चात्मरूपस्त्वं त्वांविना नास्ति मे गति॥९९॥
नमस्ते मंत्र रूपाय अस्त्ररूपाय ते नमः।
बहुरूपाय रूपाय पंचरूप धराय च ॥१००॥

भद्ररूपाय रूढाय योगरूपाय योगिने।
समरूपाय योगाय योगपीठ स्थिताय च ॥१०१॥
योगगम्याय सौम्याय ध्यानगम्याय ध्यायिने।
ध्येयगम्याय धाम्ने च धामाधिपतये नमः॥१०२॥
धराधराय धर्माय धारणाभिरताय च।
नमो धात्रे च संधात्रे विधात्रे च धराय च ॥१०३॥
दामोदराय दान्ताय दानवान्त कराय च ।
नमः संसार वैद्याय भेषजाय नमोनमः॥१०४॥
शीरध्वजाय शीताय वाताय प्रमिताय च ।
सारस्वताय संसार नाशनाया क्षमालिने॥१०५॥
असिधर्मधरायैवषट्कर्म निरताय च ।
विकर्माय सुकर्माय परकर्म विधायिने॥१०६॥
सुशर्मणेमन्मथाय नमो वर्मायवर्मिणे।
करिचर्म वसानाय करालवदनाय च॥१०७॥
कवये पद्मगर्भाय भूतगर्भघृणा निधे।
ब्रह्मगर्भाय गर्भाय बृहद्र भीय धूर्जटे ॥१०८॥
नमस्ते विश्वगर्भाय श्रीगर्भाय जितारये।
नमो हिरण्यगर्भाय हिरण्य कवचाय च॥२०९॥
हिरण्यवर्ण देहाय हिरण्याक्ष विनाशिने।
हिरण्यकशिपोर्हंत्रे हिरण्य नयनाय च ॥११०॥

हिरण्यं रेतसे तुभ्यं हिरण्य वदनाय च।
नमो हिरण्य श्रृगाय निः श्रृगाय च श्रृगिणे॥१११॥
भैरवाय सुकेशाय भीषणायांत्र मालिने।
चण्डाय रुद्रमालाय नमो दण्डधराय च ॥११२॥
अखण्ड तत्व रूपाय कमडलु धराय च।
नमस्ते खण्ड सिंहाय सत्यसिंहाय ते नमः॥११३॥
नमस्ते श्वेतसिंहाय पीत सिंहाय ते नमः।
नीलसिंहाय नीलाय रक्तसिंहाय ते नमः॥११४॥
नमस्ते हरिद्र सिंहाय धूम्रसिहाय ते नमः।
मूल सिंहाय मूलाय बृहत्सिंहाय ते नमः॥११५॥
पातालस्थिति सिंहाय नमः पर्वत वासिने।
नमो जलस्थ सिंहाय अंतरिक्षस्थिताय च॥११६॥
कालाग्निरुद्र सिंहाय चण्डसिंहाय ते नमः।
अनन्तसिंह सिंहाय अनन्तगतये नमः॥११७॥
नमो विचित्र सिंहाय बहुसिंह स्वरूपिणे।
अभयंकर सिंहाय नरसिंहाय ते नमः॥११८॥
नमोऽस्तु सिंहराजाय नारसिंहाय ते नमः।
सप्ताब्धि मेखलायैव सत्यसत्य स्वरूपिणे॥११९॥
सप्तलोकांतरस्थाय सप्तस्वर मयाय च।
सप्तार्चिरूप दंष्ट्राय सप्ताश्वरथ रूपिणे॥१२०॥

सप्तवायु स्वरूपाय सप्तच्छन्दो मयाय च।
स्वच्छाय स्वच्छ रूपाय स्वच्छन्दाय च ते नमः॥१२१॥
श्रीवत्साय सुवेषाय श्रुतये श्रुतिमूर्तये।
शुचिश्रवाय शूराय सुप्रभाय सुधन्विने॥१२२॥
सुभ्राय सुरनाथाय सुप्रभाय सुभाय च।
सुदर्शनाय सूक्ष्माय निरुक्ताय नमो नमः॥१२३॥
सुप्रभाय स्वभावाय भवाय विभवाय च।
सुसाखाय विशाखाय सुमुखाय मुखाय च॥१२४॥
सुनखाय सुदंष्ट्राय सुरथाय सुधाय च।
सांख्याय सुरमुख्याय प्रख्याताय प्रभाय च॥१२५॥
नमः खट्वाग हस्ताय खेट मुद्गर पाणये।
खगेन्द्राय मृगेन्द्राय नागेन्द्राय दृढाय च॥१२६॥
नागकेयूर हाराय नागेन्द्रायाघ मर्दिने।
नदीवासाय नग्नाय नानारूप धराय च॥१२७॥
नागेश्वराय नागाय नमिताय नराय च।
नागान्तकथायैव नर नारायणाय च ॥१२८॥
नमोमत्स्य स्वरूपाय कच्छपाय नमो नमः।
नमो यज्ञवराहाय नरसिंहाय ते नमः॥१२९॥
विक्रमाक्रान्त लोकाय वामनाय महौजसे।
नमो भार्गव रामाय रावणांतकराय च॥१३०॥

नमस्ते बलरामाय कंशप्रध्वंस कारिणे।
बुद्धाय बुद्धरूपाय तीक्ष्ण रूपाय कल्किने॥१३१॥
आत्रेयायाग्निनेत्राय कपिलाय द्विजाय च।
क्षेत्राय पशुपालाय पशुवक्राय ते नमः॥१३२॥
गृहस्थाय वनस्थाय यतये ब्रह्मचारिणे।
स्वर्गापवर्ग दात्रे च तद्भोक्रेच मुमुक्षवे॥१३३॥
शालग्राम निवासाय क्षीराब्धि शयनाय च।
श्री शैलाद्रि निवासाय शिलावासाय ते नमः॥१३४॥
योगीहृत्पद्म वासाय महाहासाय ते नमः।
गुहावासाय गुह्याय गुप्ताय गुरवे नमः॥१३५॥
नमोमूलाधिवासाय नीलवस्त्र धराय च।
पीतवस्त्राय शस्त्राय रक्तवस्त्र धराय च॥१३६॥
रक्तमाला विभूषाय रक्तगन्धानु लेपिने।
धुरंधराय धूर्ताय दुर्धराय धराय च॥१३७॥
दुर्मदाय दुरंताय दुर्धराय नमो नमः।
दुर्निरीक्ष्याय निष्ठाय दुर्दशाय द्रुमाय च॥१३८॥
दुर्भेदाय दुराशाय दुर्लभाय नमो नमः।
दृप्ताय दृप्तवक्राय अदृप्त नयनाय च॥१३९॥
उन्मत्ताय प्रमत्ताय नमो दैत्यारये नमः।
रसज्ञाय रसेशाय अरक्त रसनाय च॥१४०॥

पथ्याय परितोषाय रथ्याय रसिकाय च।
ऊर्ध्वकेशोर्ध्वरूपाय नमस्तेचोर्ध्व रेतसे॥१४१॥
ऊर्ध्वसिंहाय सिंहाय नमस्तेवोर्ध्व बाहवे।
पर प्रध्वंसकायैव शंखचक्रधराय च॥१४२॥
गदापद्मधरायैव पंचबाण धराय च।
कामेश्वराय कामाय कामपालाय कामिने॥१४३॥
नमः काम विहाराय कामरूप धराय च।
सोमसूर्याग्नि नेत्राय सोमपाय नमो नमः॥१४४॥
नमः सोमाय वामाय वामदेवाय ते नमः।
सामस्वनाय सौम्याय भक्तिगम्याय वैनमः॥१४५॥
कूष्माण्ड गणनाथाय सर्वश्रेयस्कराय च।
भीष्माय भीषदायैव भीमविक्रमणाय च॥१४६॥
मृगग्रीवाय जीवाय जिताया जितकारिणे।
जटिने जामदग्न्याय नमस्ते जातवेदसे॥१४७॥
जपाकुसुमवर्णाय जप्याय जपिताय च।
जरायुजायांडजाय स्वेदजायोद्भिजाय च॥१४८॥
जनार्दनाय रामाय जाह्नवी जनकाय च।
जराजन्माधिदूराय प्रद्युम्नाय प्रमोदिने॥१४९॥
जिह्वारौद्राय रुद्राय वीरभद्राय ते नमः।
चिद्रूपाय समुद्राय कद्रुदाय प्रचेतसे॥१५०॥

इन्द्रियायेंद्रि यज्ञाय नमोस्त्विंद्रानुजाय च।
अतींद्रियाय साराय इंदिरा पतये नमः॥१५१॥
ईशानाय च ईड्याय ईशिताय इनाय च।
व्योमात्मने च व्योम्ने च नमस्ते व्योमकेशिने॥१५२॥
व्योमाधाराय च व्योमाय वक्रायासुरघातिने।
नमास्तेव्योमदंष्ट्राय व्योमवासाय ते नमः॥१५३॥
सुकुमाराय रामाय शुभाचाराय वै नमः।
विश्वाय विश्वरूपाय नमोविश्वात्मकाय च॥१५४॥
ज्ञानात्मकायज्ञानाय विश्वेशाय परात्मने।
एकात्मने नमस्तुभ्यं नमस्ते द्वादशात्मने॥१५५॥
चतुर्विंशति रूपाय पंचविंशति मूर्तये।
षड्विंशकात्मने नित्यं सप्तविंशतिकात्मने॥१५६॥
धर्मार्थ काम मोक्षाय विरक्ताय नमो नमः।
भावशुद्धाय सिद्धाय साध्याय शरभाय च॥१५७॥
प्रबोधाय सुबोधाय नमोबुद्धिप्रियाय च।
स्निग्धाय च विदग्धाय मुग्धाय मुनये नमः॥१५८॥
प्रियंवदाय श्रव्याय श्रुक् श्रुवाय श्रिताय च।
गृहेशाय महेशाय ब्रह्मेशाय नमो नमः॥१५९॥
श्रीधराय सुतीर्थाय हयग्रीवाय ते नमः।
उग्राय उग्र वेगाय उग्रकर्म रताय च ॥१६०॥

उग्रनेत्राय व्यग्राय समग्र गुणशालिने।
बालग्रह विनाशाय पिशाचग्रह घातिने॥१६१॥
दुष्टग्रह निहंत्रे च निग्रहानुग्रहाय च।
वृषध्वजाय वृष्ण्याय वृषाय वृषभाय च॥१६२॥
उग्रश्रवाय शांताय नमः श्रुतिधराय च।
नमस्ते देवदेवेश नमस्ते मधुसूदन॥१६३॥
नमस्ते पुण्डरीकाक्ष नमस्ते दुरितक्षय
नमस्ते करुणासिंधो नमस्ते समितिंजय॥१६४॥
नमस्ते नरसिंहाय नमस्ते गरुड़ध्वज।
यज्ञनेत्र नमस्तेस्तु कासध्वजजयध्वज॥१६५॥
अग्निनेत्र नमस्तेस्तु नमस्ते ह्यमर प्रिय।
महानेत्र नमस्तेस्तु नमस्ते भक्तवत्सल॥१६६॥
धर्मनेत्र नमस्तेस्तु नमस्ते करुणाकर।
पुण्यनेत्र नमस्तेस्तु नमस्तेभीष्टदायक॥१६७॥
नमोनमस्ते जयसिंह रूप नमोनमस्ते नरसिंहरूप।
नमोनमस्ते रणसिंहरूप नमोनमस्ते नरसिंह रूप॥१६८॥
उद्धृत्यगर्वित दैत्यं निहत्याजौसुरद्विषम्।
देवकार्यं महत्कृत्वा गर्जसे स्वात्म तेजसा॥१६९॥
अतिरुद्रमिदं रूपंदुः सहं दुरति क्रमम्।
दृष्ट्वातु शंकिताः सर्वा देवतास्त्वामुपागताः॥१७०॥

एतान्पश्य महेशानं ब्रह्माणंमांशचीपतिम्।
दिक्पालान्द्वादशादित्यान्रुद्रानुरग राक्षसान्।।१७१।।
सर्वानृषिगणान्सप्त मातृ गौरी सरस्वतीम्।
लक्ष्मींनदीश्च तीर्थानि रतिंभूत गणानपि।।१७२।।
प्रसीदत्वं महासिंह उग्रभाव मिमं त्यज।
प्रकृस्थोभवत्वंहि शांतिभावं च धारय।।१७३।।
इत्युक्त्वा दण्डवद्भूमौ प पात सपितामहः।
प्रसीदत्वं प्रसीदत्वं प्रसिदेति पुनः पुनः।।१७४।।

।। मार्कण्डेय उवाच।।

दृष्ट्वातु देवताः सर्वाः श्रुत्वा तां ब्रह्मणोगिरम्।
स्तोत्रेणापि च संदृष्टः सौम्यभावमधारयत्।।१७५।।
अब्रवीन्नारसिंहस्तु वीक्ष्य सर्वान्सुरोत्तमान्।
संत्रस्तान् भयसंविग्नाच्छरणं समुपागतान्।।१७६।।

।। श्री नृसिंह उवाच।।

भो भो देव वराः सर्वे पितामह पुरोगमाः।
श्रृणुध्वं मम वाक्यं च भवंतु विगत ज्वराः।।१७७।।
यद्धितं भवतानूनं तत्कारिष्यामि सांप्रतम्।
एवं नाम सहस्त्रं मे त्रिसंध्यं यः पठेच्छुचिः।।१७८।।
शृणोतिवा श्रावयति पूजांते भक्तिसंयुतः।
सर्वान् कामनवाप्नोति जीवेच्च शरदांशतम्।।१७९।।

योनामभिर्नृसिंहाद्यैरर्चयत्क्रमशो मम।
सर्वतीर्थेषुयत्पुण्यं सर्वतीर्थेषु यत्फलम्॥१८०॥
सर्वपूजासु यत्प्रोक्तं तत्सर्व लभते भृशम्।
जातिस्मर स्त्वंलभते ब्रह्मज्ञानं सनातनम्॥१८१॥
सर्वपाप विनिर्मुक्तस्तद्विष्णोः परमं पदम्।
मन्नामकवचं बद्ध्वाविचरे द्विगत ज्वरः॥१८२॥
भूतवेताल कुष्मांड पिशाचब्रह्मराक्षसाः।
शाकिनी डाकिनी ज्येष्ठा नीलीबालग्रहादिकाः॥१८३॥
दुष्टग्रहाश्च नश्यन्ति यक्ष राक्षस पन्नगाः।
ये च संध्याग्रहाः सर्वेचांडालग्रह संज्ञकाः॥१८४॥
निशाचर ग्रहाः सर्वे प्रणश्यन्ति च दूरतः।
कुक्षिरोगं च हृदरोगं शूलपस्मारमेव च॥१८५॥
एकाहिकं द्व्याहिकं चातुर्थिकमथज्वरम्।
आधयो व्याधयः सर्वे रोगारोगाधि देवताः॥१८६॥
शीघ्रं नश्यन्ति ते सर्वे नृसिंहस्मरणात्सुराः।
राजानोदासतांयांति शत्रवोयांति मित्रताम्॥१८७॥
जलानिस्थलातां याति वह्नयोयांति शीतताम्।
विषाण्य मृततांयांति नृसिंह स्मरणात्सुराः॥१८८॥
राज्यकामोलभेद् राज्यं धनकामोलभेद्धनम्।
विद्याकामो लभेद्विद्यां बद्धोमुच्येतबंधनात्॥१८९॥

व्याल व्याघ्रभय नास्ति चोर सर्पादिका तथा।
अनुकूला भवेद्भार्यालोकैश्च प्रतिपूज्यते॥१९०॥
सुपुत्रधनधान्यं च भवंति विगत ज्वराः।
एतत्सर्वं समाप्नोति नृसिंहस्य प्रसादतः॥१९१॥
जल संतरणे चैव पर्वतारण्यमेव च।
वने पिविचरन्मर्त्योदुर्गमे विषमे पथि॥१९२॥
बिलप्रवेशनेचापि नारसिंह न विस्मरेत्।
ब्रह्मघ्नश्च पशुघ्नश्च भ्रूणहागुरुतल्पगः॥१९३॥
मुच्यते सर्व पापेभ्योकृतघ्नस्त्रि विघातकः।
वेदानांदूषकश्चापि मातापितृविनिंदकः॥१९४॥
असत्यस्तुतथायज्ञ निंदको लोकनिंदकः।
स्मृत्वासकृन्नृसिंहंतु मुच्यतेसर्व किल्विषैः॥१९५॥
बहुनाम किमुक्तेन स्मृत्वा मां शुद्ध मानसः।
यत्रयत्रचरेन्मर्त्यो नृसिंहस्तत्र रक्षति॥१९६॥
गच्छं स्तिष्ठन्स्वपन्भुंजं जागृदपि हसन्नपि।
नृसिंहेति नृसिंहेति नृसिंहेति सदास्मरन्॥१९७॥
पुमान्न लिप्यतेपापैर्भुक्तिमुक्तिं च विन्दति।
नारीशुभगता मे ति सौभाग्यं च स्वरूपताम्॥१९८॥
भर्तुः प्रियत्वं लभते न वैधव्यं च विन्दति।
न स पत्निच जन्मान्ते सम्यग् ज्ञानीद्विजोभवेत्॥१९९॥

भूमिप्रदक्षिणान्मर्त्यो यत्फलं लभते चिरात्।
तत्फलं लभते नारी सिंह मूर्ति प्रदक्षिणात्॥२००॥

॥ मार्कण्डेय उवाच॥

इत्युक्त्वादेव देवेशो लक्ष्मीमालिंग्य लीलया।
प्रह्लादस्याभिषेकंतु ब्रह्मणेचोपदिष्टवान्॥२०१॥
श्री शैलस्य प्रपादेतु लोकानांच हिताय वै।
स्वरूपंस्थापयामास प्रकृतिस्थेऽभवत्तदा॥२०२॥
ब्रह्मापि दैत्यराजानं प्रह्लादमभ्य षेचयत्।
दैवतैः सह सुप्रीतो ह्यात्मलोकंययौ स्वयम्॥२०३॥
हिरण्यकशिपोर्भीत्याप्रपलाय शचीपतिः।
स्वर्गराज्य परिभ्रष्टो युगानामेकविंशति॥२०४॥
नृसिंहेन हते दैत्ये स्वर्गलोक मवापसः।
दिक्पाला श्चसुसम्प्राप्ताः स्वस्व स्थान मनुत्तमम्॥२०५॥
धर्मेमतिः समस्तानां प्रजानाम भवतदा।
एवं नाम सहस्त्रंमे ब्रह्मणानिर्मितं पुरा॥२०६॥
पुत्रानध्यापयामास सनकादीन्महामतिः।
उचुस्ते च ततः सर्व लोकानां हितकाम्यया॥२०७॥
देवताऋषयः सिद्धा यक्ष विद्याधरोरगाः।
गंधर्वाश्च मनुष्याश्चइहामुत्र फलैषिण॥२०८॥

यस्यस्तोत्रस्य पाठाद्धि विशुद्ध मनसो भवन्।
सनत्कुमारः संप्राप्तोभारद्वाजो महामतिः॥२०९॥
तस्मादांगिरसः प्राप्तस्तस्मात्प्राप्तो महाक्रुतः।
जैगीष व्यायसप्राह सो ब्रवीच्चयवनाय च॥२१०॥
तस्माउवाच शांडिल्यो गर्गायप्राहवै मुनिः।
क्रतुं जयाय सप्राह जातुकर्ण्याय संयमी॥२११॥
विष्णुवृद्धयसोप्याह सोपि बौधायनाय च।
क्रमात्स विष्णवे प्राह सप्राहोद्दामकुक्षये॥२१२॥
सिंहतेजाश्च तस्माच्च श्रीप्रियाय ददौच सः।
उपदिष्ठौस्मितेनाहमिदंनाम सहस्त्रकम्॥२१३॥
तत्प्रसादादमृत्युर्मेयस्मात्कस्मा द्धयं नहि।
मया च कथितं नारसिंह स्तोत्रमिदं तव॥२१४॥
त्व हि नित्यं शुचिर्भूत्वा तमाराधय शाश्वतम्।
सर्वभूताश्रयं देवं नृसिंह भक्तवत्सलम्॥२१५॥
पूजयित्वा स्तवं जप्त्वा हुत्वानिश्चल मानसः।
प्राप्यसे महती सिद्धिं सर्वान्कामान्वरोतमान्॥२१६॥
अयमेव परोधर्म स्त्विदमेव परंतपः।
इदमेव परंज्ञानमिमेव महद्व्रतम॥२१७॥
अयमेव सदाचार स्त्वयमेव सदामखः।
इदमेव त्रयो वेदाः सच्छास्त्राण्यागमानि च॥२१८॥

नृसिंह मंत्रादन्यच्च वैदकेतु न विद्यते।
यदिहास्तितदन्यत्र यन्नेहास्तिनतत्क्वचित्।।२१९।।
कथितं ते नृसिंहस्य चरितं पापनाशनम्।
सर्वमंत्रमयं तापत्रयोपशमनंपरम्।।२२०।।
सर्वार्थ साधनं दिव्य कि भूय श्रोतमिच्छसि।२२१।

इति श्रीनृसिंहपुराणे नृसिंह प्रादुर्भावे
सर्वार्थ साधनं दिव्यं श्रीमद्दिव्य लक्ष्मीनृसिंह
सहस्त्रनाम स्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

दिव्य लक्ष्मी नृसिंह सहस्रनाम स्तोत्र के पाठ करने से सम्पूर्ण कामनाओं की पूर्ती होती है एक सौ वर्ष की उम्र होती है जो सम्पूर्ण तीर्थों का फल है तथा जो सब देवताओं की पूजा का फल है वह फल इस पाठ को करने से प्राप्त होता है। पाठक ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति कर पापों से मुक्त होकर भगवान विष्णु के परमपद को प्राप्त होता है। इस पाठ से मृगीरोग, भूत, बेताल, पिशाच, ब्रह्मराक्षस, शाकिनी, डाकिनी, बालग्रह, दुष्टग्रह यक्ष, राक्षस, सर्प, निशाचर, कुक्षी रोग, हृदय रोग, एकाहिक, द्वाहिक, चौथा ज्वर, आधिव्याधियों का नाश होता है। इस पाठ के

प्रभाव से राजा दासरूप, शत्रु मित्र जल स्थल समान, वह्निशीतता को प्राप्त होती है। राज्य की इच्छा वाला राज्य को धनार्थी धन को विद्यार्थी विद्या को बन्धन वाला बन्धन से मुक्त हो जाता है। इस पाठ से सर्प व्याघ्र चोर का भय नहीं होता। भार्या अनुकूल, सुपुत्र, धन धान्य की प्राप्ति भगवान नृसिंह के प्रसन्नता से पाठक को प्राप्त हो जाती है। अत: अनेक कष्टों से छुटकारा प्राप्त करने सुख सौभाग्य के लिये भय दूर करने के लिये अनेक ज्वरादि दूर करने के लिये इस लक्ष्मीनृसिंह सहस्रनाम का पाठ अवश्य ही तुरन्त फलदायी है।

●●●

॥अथ श्री नृसिंह चालीसा॥

मास वैसाख कृतिका युत हरण मही को भार।
शुक्ल चर्तुदशी सोम दिन लियो नृसिंह अवतार॥

धन्य तुम्हारो सिंह तनु धन्य तुम्हारो नाम।
तुम्हरे सुमरन से प्रभु पूरन हो सब काम॥

नृसिंह देव मैं सुमरों तोही,
धन बल विद्या दान दे मोही॥१॥

जय जय जय नृसिंह कृपाला,
करो सदा भक्तन प्रतिपाला॥२॥

विष्णु के अवतार दयाला,
महाकाल कालन को काला॥३॥

नाम अनेक तुम्हारो बखानो,
अल्प बुद्धि मैं ना कछु जानो॥४॥

हिरणाकुश नृप अति अभिमानी,
तेहि के भार मही अकुलानी॥५॥

हिरणाकुश कयाधू के जाये,
नाम भक्त प्रह्लाद कहाये॥६॥

भक्त बना विष्णु को दासा,
पिता कियो मारन परयासा॥७॥

अस्त्र-शस्त्र मारे भुज दण्डा,
अग्निदाह कियो परचण्डा॥८॥
भक्त हेतु तुम लियो अवतारा,
दुष्ट दलन हरण महिभारा॥९॥
तुम भक्तन के भक्त तुम्हारे,
प्रह्लाद के प्राण पियारे॥१०॥
प्रकट भये तुम फाड़कर खंभा,
देख दुष्ट दल भये अचंभा॥११॥
खड्ग. जिह्व तनु सुंदर साजा,
ऊर्ध्वकेश महादंष्ट्र विराजा॥१२॥
तप्त स्वर्णसम बदन तुम्हारा,
को वरने तुम्हरो विस्तारा॥१३॥
रूप चतुर्भुज बदन विशाला,
नख जिह्वा है अति विकराला॥१४॥
स्वर्ण मुकुट वदन अतिभारी,
कानन कुण्डल की छवि न्यारी॥१५॥
भक्त प्रह्लाद को तुमने उबारा,
हिरणाकुश खल क्षणमह मारा॥१६॥
ब्रह्मा, विष्णु तुम्हें नित ध्यावै,
इंद्र महेश सदा मन लावै॥१७॥

वेद पुराण तुम्हरो यश गावे,
शेष शारदा पार न पावै॥१८॥
जो नर धरे तुम्हारो ध्याना,
ताको होय सदा कल्याणा॥१९॥
त्राहि-त्राहि प्रभु दुःख निवारो,
भव बन्धन प्रभु आप ही टारो॥२०॥
नित्य जपे जो नाम तिहारा,
दुःख व्याधी का हो निस्तारा॥२१॥
पुत्रहीन जो जाप करावै,
मन इच्छित सो नर सुत पावै॥२२॥
बन्ध्या नारी सुपुत्र को पावे,
नर दरिद्र धनी होई जावे॥२३॥
जो नृसिंह को जाप करावे,
ताही विपत्ति सपनें नहिं आवे॥२४॥
जो कामना करे मन माहीं,
सब निश्चय सो सिद्ध हुई जाही॥२५॥
जीवन में कछु संकट होई,
निश्चय नृसिंह सुमरे सोई॥२६॥

रोग ग्रसित ध्यावे जो कोई,
ताकी काया कंचन होई।।२७।।
डाकिनी शाकिनी प्रेत बेताला,
ग्रह व्याधि अरू यम विकराला।।२८।।
प्रेत पिशाच सबै भय खाये,
यम के दूत निकट नहीं आवे।।२९।।
सुमर नाम व्याधि सब भागे,
रोग शोक कबहुं नहीं लागे।।३०।।
जाको नजर दोष हो भाई,
सो नृसिंह चालीसा गाई।।३१।।
हटे नजर होवे कल्याना,
वचन सत्य साखी भगवाना।।३२।।
जो नर ध्यान तुम्हारो लावे,
सो नर मन वांछित फल पावे।।३३।।
बनवाये जो मंदिर ज्ञानी,
हो जावे वह नर जग मानी।।३४।।
नित प्रति पाठ करे इक बारा,
सो नर रहे तुम्हारा प्यारा।।३५।।

नृसिंह चालीसा जो जन गावे,
दुःख दरिद्र ताके निकट न आवे॥३६॥
चालीसा जो नर पढ़े पढ़ावे,
सो नर जग में सब सुख पाये॥३७॥
यह श्री नृसिंह चालीसा,
पढ़े रंक होवे अवनीसा॥३८॥
जो ध्यावे सो नर सुख पावे,
तोहि विमुख बहु दुःख उठावे॥३९॥
''शिवस्वरूप'' है शरण तुम्हारी,
हरो नाथ सब विपत्ति हमारी॥४०॥

चारों युग गायें तेरी महिमा अपरम्पार।
निज भक्तन के प्राण हित लियो जगत अवतार॥
नृसिंह चालीसा जो पढ़े प्रेम मगन शतबार॥
उस घर आनन्द रहे वैभव बढ़े अपार॥

''इति श्री नृसिंह चालीसा सम्पूर्णम्॥

●●●

॥नृसिंह सहस्त्रनामावली॥

॥ हवन के लिए सहस्त्रनाम॥		॥नरसिंह के सहस्त्रनाम का अर्थ॥
१	नारसिंहाय स्वाहा	मनुष्य तथा सिंह के समान रूप
२	वज्र दंष्ट्राय स्वाहा	वज्र समानदातों वाला
३	वज्रिणे स्वाहा	वज्र समान
४	वज्रदेहाय स्वाहा	वज्र के सामान शरीर
५	वज्राय स्वाहा	वज्रतुल्य
६	वज्रनखाय स्वाहा	वज्र के समान नख
७	वासुदेवाय स्वाहा	वसुदेव के घर जन्म लेने वाले
८	वंद्याय स्वाहा	वंदनीय
९	वरदाय स्वाहा	वर देनें वाले
१०	वरात्मने स्वाहा	श्रेष्ठ पुरुष
११	वरदाभयहस्ताय स्वाहा	वर देने वाली अभय मुद्रा
१२	वराय स्वाहा	श्रेष्ठ
१३	वररूपिणे स्वाहा	वररूप
१४	वरेण्याय स्वाहा	श्रेष्ठों के लिए
१५	वरिष्ठाय स्वाहा	श्रेष्ठों में श्रेष्ठ
१६	श्रीवराय स्वाहा	श्रेष्ठ वर देने वाला
१७	प्रह्लाद वरदाय स्वाहा	प्रह्लाद को वर देने वाला
१८	प्रत्यक्ष वरदाय स्वाहा	प्रत्यक्ष वरदायक
१९	परात्पराय स्वाहा	सर्वश्रेष्ठ
२०	परेशाय स्वाहा	परमेश्वर
२१	पवित्राय स्वाहा	पवित्र करने वाला

२२	पिनाकिने स्वाहा	श्रेष्ठ धनुष धारण करने वाला
२३	पावनाय स्वाहा	पवित्र करने के लिये
२४	प्रसन्नाय स्वाहा	प्रसन्नता के लिये
२५	पाशिने स्वाहा	पाश धारण करने वाला
२६	पापहारिणे स्वाहा	पाप नष्ट करने वाला
२७	पुरुष्टुताय स्वाहा	जो अमर है
२८	पुण्याय स्वाहा	पुण्य केलिये
२९	पुरुहूताय स्वाहा	इन्द्र
३०	तत्पुरुषाय स्वाहा	श्रेष्ठ पुरुष
३१	तथ्याय स्वाहा	सत्य रूप
३२	पुराणपुरुषाय स्वाहा	पुराणों के पुरुष
३३	पुरोधसे स्वाहा	पुरोहित
३४	पूर्वजाय स्वाहा	आदिपुरुष
३५	पुष्कराक्षाय स्वाहा	श्रेष्ठ नेत्र वाला
३६	पुष्पहासाय स्वाहा	श्रेष्ठ हसने वाला
३७	हासाय स्वाहा	मुस्कराहट
३८	महाहासाय स्वाहा	महान हसने वाला
३९	शार्ङ्गिणे स्वाहा	शार्ङ्ग धारण करने वाला।
४०	सिहाय स्वाहा	सिंह रूप
४१	सिंहराजाय स्वाहा	सिंह राज
४२	जगद्वश्याय स्वाहा	संसार को वश करने वाला
४३	अट्टहासाय स्वाहा	गर्जना करने वाला
४४	रोषाय स्वाहा	क्रोधी के लिये
४५	जलवासाय स्वाहा	जल में निवास करने वाले

४६	भूतावासय स्वाहा	प्राणों के निवास योग्य
४७	भाषाय स्वाहा	प्रकाशरूप
४८	श्रीनिवासाय स्वाहा	लक्ष्मी के साथ निवास करने वाले
४९	खड्गिने स्वाहा	खड्ग धारण करने वाले
५०	खड्गजिह्वायसिहाय स्वाहा	सिंहरूप में खड्ग के समान जिह्वावाले
५१	खड्गवासाय स्वाहा	खड्ग में निवास करने वाले
५२	मूलाधिवासाय स्वाहा	प्रारंभिक प्राणी
५३	धर्म्मवासाय स्वाहा	धर्म में निवास करने वाले
५४	धन्विने स्वाहा	धनुष धारण करने वाला
५५	धनंजयाय स्वाहा	अग्नि रूप
५६	धन्याय स्वाहा	जो धन्य है।
५७	मृत्युंजयाय स्वाहा	मृत्यु पर विजय देने वाला
५८	शुभंजयाय स्वाहा	शुभता की जय देने वाला
५९	सूत्राय स्वाहा	नियम
६०	शत्रुंजयाय स्वाहा	शत्रु पर विजय देने वाला
६१	निरंजनाय स्वाहा	माया रहित
६२	नीराय स्वाहा	जल हेतु
६३	निर्गुणाय स्वाहा	निर्गुणता के लिये
६४	गुणाय स्वाहा	गुणोंके लिये
६५	निष्प्रपंचाय स्वाहा	बिना प्रपंच
६६	निर्वाणपदाय स्वाहा	निर्वाण पद हेतु
६७	निविडाय स्वाहा	गहरा
६८	निरालम्बाय स्वाहा	बिना आलम्बवाले के लिये
६९	नीलाय स्वाहा	नील वर्ण

७०	निकलाय स्वाहा	विष्णु के अवतार
७१	कलाय स्वाहा	कला के लिये
७२	निमेषाय स्वाहा	क्षण रूप
७३	निबन्धाय स्वाहा	बन्धन मुक्त
७४	निमेषगमनाय स्वाहा	त्वरितगतिमान
७५	निर्द्वन्द्वाय स्वाहा	द्वन्द्व रहित
७६	निराशाय स्वाहा	जिनकी कोई आशा न हो
७७	निश्चयाय स्वाहा	निश्चय करने वालों के लिये
७८	निराय स्वाहा	बिना रोक के आने वाला
७९	निर्मलाय स्वाहा	शुद्धता हेतु
८०	निबन्धाय स्वाहा	बिना बन्धन वाला
८१	निर्मोहाय स्वाहा	बिना मोह वाला
८२	निराकृते स्वाहा	बिना आकृति
८३	नित्याय स्वाहा	जो नित्य हैं
८४	सत्याय स्वाहा	जो सत्य हैं
८५	सत्कर्माय स्वाहा	जो सत्कर्म के लिये हैं
८६	निरताय स्वाहा	तत्पर
८७	सत्यध्वजाय स्वाहा	सत्य ध्वजा फहराने के लिये
८८	मुंजाय स्वाहा	निर्मल करने वाला
८९	मुंजकेशाय स्वाहा	शिव के समान जटाधारी
९०	केशिने स्वाहा	रोमधारण करने वाला
९१	हरीशाय स्वाहा	उच्चैश्रवा के समान
९२	शेषाय स्वाहा	शेषरूप धारण करने वाला
९३	गुड़ा केशाय स्वाहा	घुंघराले बाला वाला
९४	सुकेशाय	सुन्दर रोम धारण करने वाला
९५	ऊर्ध्व केशाय स्वाहा	जिसके बाल ऊपर हैं

९६	केशिसंहारकाय स्वाहा	केशिदैत्य का नाश करने वाला
९७	जलेशाय स्वाहा	जल के स्वामी
९८	स्थलेशाय स्वाहा	स्थल के स्वामी
९९	पद्मेशाय स्वाहा	ब्रह्मा के स्वामी
१००	उग्ररुपिणे स्वाहा	उग्र रूप वाले
१०१	कुशेशयाय स्वाहा	कमल रूप
१०२	कलाय स्वाहा	कला हेतु
१०३	केशवाय स्वाहा	केशव भगवान
१०४	सूक्तिकर्णाय स्वाहा	श्रेष्ठ कान वाला
१०५	सूक्ताय स्वाहा	वेदमंत्रों का समूह
१०६	रक्तजिह्वाय स्वाहा	लाल जिह्वावाले
१०७	रागिणे स्वाहा	राग के लिये
१०८	दीप्तरूपाय स्वाहा	दीप्तरूप वाले
१०९	दीप्ताय स्वाहा	ज्योतिवान
११०	प्रदीप्ताय स्वाहा	विशेष प्रकाशवान
१११	प्रलोभिने स्वाहा	जो लोभ का नाशक है
११२	प्रच्छिन्नाय स्वाहा	आच्छादित
११३	प्रबोधाय स्वाहा	जाग्रत करने वाले
११४	प्रभवे स्वाहा	दिव्य जन्म वाला
११५	विभवे स्वाहा	मोक्ष का द्वार
११६	प्रभंजनाय स्वाहा	विशेष दैत्यों को नष्ट करने वाला
११७	पांथाय स्वाहा	मार्गदर्शक
११८	प्रमाय स्वाहा	विशुद्ध ज्ञान वाला
११९	अप्रमिताय स्वाहा	अनुपम
१२०	प्रकाशाय स्वाहा	प्रकाश के लिये

१२१ प्रतापाय स्वाहा	प्रतापी
१२२ प्रज्ज्वलाय स्वाहा	प्रज्जवलता लिये
१२३ उज्ज्वलाय स्वाहा	उज्जवलता वाले
१२४ ज्वालाय स्वाहा	ज्वाला के रूप
१२५ मालास्वरूपाय स्वाहा	माला के समान
१२६ ज्वलज्जिह्वाय स्वाहा	ज्वाला के समान जिह्वा
१२७ ज्वालिने स्वाहा	ज्वाला रूप
१२८ महाज्वालाय स्वाहा	महाज्वाला रूप
१२९ कालाय स्वाहा	काल के समान
१३० कालमूर्तिधराय स्वाहा	कालरूप धारण करने वाले
१३१ कालांतकाय स्वाहा	काल का भी अंत करने वाले
१३२ कल्पाय स्वाहा	कल्पों के लिये
१३३ कलनाय स्वाहा	ग्रहण करने वाला
१३४ कृते स्वाहा	कर्म किया गया हो
१३५ कालचक्राय स्वाहा	जो समय के रूप में परिवर्तित हो
१३६ शक्राय स्वाहा	जो इन्द्र की रक्षा हेतु है
१३७ वषट्चक्राय स्वाहा	समस्त देवताओं को तृप्त करने वाला
१३८ चक्रिणे स्वाहा	चक्र धारण करता है
१३९ अक्रूराय स्वाहा	क्रूर नहीं है उनके लिये रक्षक
१४० कृतांताय स्वाहा	यमरूप
१४१ विक्रमाय स्वाहा	बलवानो का पोषक
१४२ क्रमाय स्वाहा	सक्षम
१४३ कृत्तिने स्वाहा	चतुर
१४४ कृत्तिवासाय स्वाहा	महादेव

१४५ कृतघ्नाय स्वाहा	पापियों के नाश हेतु
१४६ कृतात्मने स्वाहा	प्राकृतिक स्वभाव धारण करने वाला
१४७ संक्रमाय स्वाहा	गतिवान
१४८ क्रुधाय स्वाहा	क्रोधियों के नाश के लिये
१४९ क्रान्तलोकत्रयाय स्वाहा	तीनों लोकों को लांघने वाला
१५० अरूपाय स्वाहा	रूप रहित
१५१ स्वरूपाय स्वाहा	रूपवान
१५२ हरये स्वाहा	जो कल्याण के लिये है
१५३ परमात्मने स्वाहा	जो परमात्मा रूप
१५४ अजयाय स्वाहा	विजयी
१५५ आदिदेवाय स्वाहा	जो ब्रह्म के लिये है
१५६ अक्षयाय स्वाहा	जो स्थिरता के लिये है
१५७ क्षयाय स्वाहा	जो नष्ट करने के लिये है
१५८ अघोराय स्वाहा	पापनाशक
१५९ सुघोराय स्वाहा	जो सुडोल है
१६० घोर-घोर तराय स्वाहा	श्रेष्ठों का श्रेष्ठ
१६१ घोरवीर्याय स्वाहा	भयानक बलशाली
१६२ ललद्धोराय स्वाहा	लोभनाशक
१६३ घोराध्यक्षाय स्वाहा	श्रेष्ठों के अधिपति
१६४ दक्षाय स्वाहा	चतुर
१६५ दक्षिणार्याय स्वाहा	उदार
१६६ शंभवे स्वाहा	जो साध्य है
१६७ अमोघाय स्वाहा	जो अजेय है
१६८ गुणौघाय स्वाहा	पापियों के लिए गुणी
१६९ अनघाय स्वाहा	पापरहित

१७० अघहारिणे स्वाहा	पाप नाशक रूप
१७१ मेघनादाय स्वाहा	वर्षादायक
१७२ नादाय स्वाहा	शब्द रूप
१७३ मेघात्मने स्वाहा	मेघो के स्वामी
१७४ मेघवाहनरूपाय स्वाहा	मेघ के वाहनरूप
१७५ मेघश्यामाय स्वाहा	मेधसमान श्यामवर्ण
१७६ मालिने स्वाहा	मलिनता नाशक
१७७ व्यालयज्ञोपवीताय स्वाहा	सर्प का यज्ञोपवीत धारण करने वाले
१७८ व्याघ्रदेहाय स्वाहा	व्याघ्र शरीर धारण करनेवाले
१७९ व्याघ्रपादाय स्वाहा	व्याघ्र पाद धारण करने वाले
१८० व्याघ्रकर्मिणे स्वाहा	व्याघ्र की तरह कार्य करने वाले
१८१ व्यापकाय स्वाहा	विस्तार वाला
१८२ विकटास्याय स्वाहा	कठोर मुख
१८३ वीराय स्वाहा	महाबली
१८४ विष्टर श्रेयसे स्वाहा	महाविस्तार
१८५ विकीर्णनखदंष्ट्राय स्वाहा	लम्बे नख दांत वाला
१८६ नखदंष्ट्रायुधाय स्वाहा	नाखून तथा दांतों के आयुध धारण करने वाला
१८७ विष्वक्सेनाय स्वाहा	भगवान शिवरूप
१८८ सेनाय स्वाहा	शस्त्रास्त्र सुसज्जित
१८९ विह्वलाय स्वाहा	व्याकुल की रक्षा करनेवाला
१९० बलाय स्वाहा	बलशाली
१९१ विरूपाक्षाय स्वाहा	अप्राकृतिक
१९२ वीराय स्वाहा	साहसी

१९३ विशेषाक्षाय स्वाहा	विचित्र नेत्र वाला
१९४ साक्षिणे स्वाहा	जो सबका साक्षी है
१९५ वीतशोकाय स्वाहा	दुख का नाशक
१९६ विस्तीर्णवदनाय स्वाहा	विशाल शरीर
१९७ विधानाय स्वाहा	आयोजक
१९८ विधेयाय स्वाहा	करणीय
१९९ विजयाय स्वाहा	जय पताका फहराने वाले
२०० जयाय स्वाहा	विजय देने वाला
२०१ विबुधाय स्वाहा	चन्द्रमां
२०२ विभावाय स्वाहा	प्रकाशवान
२०३ विश्वम्भराय स्वाहा	परमेश्वर
२०४ बीतरागाय स्वाहा	आसक्तिका त्यागी
२०५ विप्राय स्वाहा	ब्राह्मण
२०६ विटंकनयनाय स्वाहा	धूर्त के लिये टेढ़ी आंखवाला
२०७ विपुलाय स्वाहा	अगाध
२०८ विनीताय स्वाहा	नीति अनुसार आचरण करने वाला
२०९ विश्वयोनये स्वाहा	संसार के उत्पादन हेतु
२१० चिदंबराय स्वाहा	जो सजीव वस्त्रधारी है
२११ वित्ताय स्वाहा	ज्ञाता
२१२ विश्रुताय स्वाहा	विख्यात
२१३ वियोनये स्वाहा	अपरयोनि
२१४ विह्वलाय स्वाहा	व्याकुलों के लिये
२१५ विकल्पाय स्वाहा	बेचैन के लिये
२१६ कल्पातीताय स्वाहा	कल्पो से परे
२१७ शिल्पिने स्वाहा	निर्माणकला का प्रमुख

२१८ कल्पनायस्वरूपाय स्वाहा	मन की निर्माण शक्ति रूप
२१९ फणितल्पाय स्वाहा	शेष शैया धारणकरने वाला
२२० तडित्प्रभाय स्वाहा	विद्युत कांति समान
२२१ तार्याय स्वाहा	उज्ज्वल रूप
२२२ तरूणाय स्वाहा	युवावस्था वाला रूप
२२३ तरस्विने स्वाहा	शिघ्रगामी
२२४ तपनाय स्वाहा	सूर्य समान
२२५ तरक्षाय स्वाहा	जंगली जन्तु सिंह रूप
२२६ तापत्रयहराय स्वाहा	तीनो ताप हरने वाला (दैहिक, दैविक, भौतिक)
२२७ तारकाय स्वाहा	नक्षत्ररूप
२२८ तमोहनाय स्वाहा	अन्धकार नाशक
२२९ तत्वाय स्वाहा	पंचभूत
२३० तपस्विने स्वाहा	तपस्वी के लिये
२३१ तक्षकाय स्वाहा	सर्प विशेष
२३२ तनुत्राय स्वाहा	कवचधारी
२३३ तटिने स्वाहा	नदी रूप
२३४ तरलाय स्वाहा	लहराता हुआ
२३५ शतरूपाय स्वाहा	सौरूप धारण करने वाला
२३६ शांताय स्वाहा	सौम्यरूप धारण करने वाला
२३७ शतधाराय स्वाहा	सौधाराओं के समान
२३८ शतपत्राय स्वाहा	कमल रूप
२३९ तार्क्ष्याय स्वाहा	गरुड़ रूप
२४० स्थितये स्वाहा	जो स्थित रूप है
२४१ शतमूर्तये	सौ मूर्ति के रूप धारण करने वाला

२४२ शतक्रतुस्वरूपाय स्वाहा	इन्द्र रूप
२४३ शाश्वताय स्वाहा	नाश रहित
२४४ शतात्मने स्वाहा	सौ आत्मा धारण करनेवाला
२४५ सहस्रशिरसे स्वाहा	हजारों शिर धारणकरने वाला
२४६ सहस्र बदनाय स्वाहा	हजारों शरीर धारण करनेवाला
२४७ सहस्राक्षायदेवाय स्वाहा	भगवान विष्णु
२४८ दिशाश्रोत्राय स्वाहा	दिशायें जिनका कान हैं
२४९ सहस्रजिह्वाय स्वाहा	हजारों जिह्वा वाले
२५० महाजिह्वाय स्वाहा	बड़ी जिह्वा वाले
२५१ सहस्रनामधेयाय स्वाहा	हजारो नामों से जाना जाता है जो
२५२ सहस्रक्षधराय स्वाहा	हजार आंखे धारण करने वाले
२५३ सहस्रबाहवे स्वाहा	हजार बाहुधारण करने वाले
२५४ सहस्रचरणाय स्वाहा	हजार चरण धारण करनेवाले
२५५ सहस्रार्क प्रकाशाय स्वाहा	हजार सूर्य समान प्रकाशवान
२५६ सहस्रायुधधारिणे स्वाहा	हजार शस्त्र धारण करने वाले
२५७ स्थूलाय स्वाहा	भारी रूप वाला
२५८ सूक्ष्माय स्वाहा	परब्रह्म रूप
२५९ सुसूक्षमाय स्वाहा	अति लघुरूप धारक
२६० सुक्षुण्याय स्वाहा	सुन्दर अभ्यस्त
२६१ सुभिक्षाय स्वाहा	सुकाल
२६२ सुराध्यक्षाय स्वाहा	इन्द्रादि देवताओं के स्वामी
२६३ शौरिणे स्वाहा	कृष्ण रूप
२६४ धर्माध्यक्षाय स्वाहा	भगवत धर्म से प्रत्यक्ष होनेवाले
२६५ धर्माय स्वाहा	धार्मिको के लिए
२६६ लोकाध्यक्षाय स्वाहा	समस्त लोकों के प्रधानद्रष्टा

२६७ प्रजाध्यक्षाय स्वाहा	प्राणिमात्र का शासक
२६८ शिक्षाय स्वाहा	शिक्षादाता
२६९ विपक्षाय स्वाहा	अधर्मियो का विरोधी
२७० क्षयमूर्तये स्वाहा	नष्ट करने वाला
२७१ कालाध्यक्षाय स्वाहा	समय के स्वामी
२७२ तीक्ष्णाय स्वाहा	प्रखर रूप
२७३ मूलाध्यक्षाय स्वाहा	उत्पत्ति हेतु
२७४ अधोक्षजाय स्वाहा	भगवान विष्णु
२७५ मित्राय स्वाहा	सखा
२७६ सुमित्राय स्वाहा	सुन्दर मित्र
२७७ वरुणाय स्वाहा	जलाधिपति
२७८ शत्रुघ्नाय स्वाहा	शुत्रओं का नाशक
२७९ अविघ्नाय स्वाहा	विघ्न नाशक
२८० विघ्नकोटिहराय स्वाहा	करोड़ों विघ्न हारक
२८१ रक्षोघ्नाय स्वाहा	पाप से रक्षक
२८२ तमोघ्नाय स्वाहा	तिमिर हर
२८३ भूतघ्नाय स्वाहा	प्राणियों की रक्षा करने वाले
२८४ भूतपालाय स्वाहा	प्राणियों का पालन करनेवाले
२८५ भूताय स्वाहा	प्राणियों के लिये
२८६ भूतावासाय स्वाहा	प्राणियों में निवास करने वाला
२८७ भूतिने स्वाहा	प्राणियों के हित हेतु
२८८ भूतवेतालघाताय स्वाहा	प्राणियों का रक्षक
२८९ भूताधिपतये स्वाहा	प्राणियों का स्वामी
२९० भूत ग्रहविनाशाय स्वाहा	प्राणियों के अमंगल नाशक
२९१ भूतसंयमते स्वाहा	प्राणियों का इन्द्रिय निग्रहक
२९२ महाभूताय स्वाहा	दिव्य प्राणी

२९३ भृगवे स्वाहा	अग्नि के समान जलनें वाली आवाज करने वाला
२९४ सर्वभूतात्मने स्वाहा	सम्पूर्ण प्राणियों की आत्मारूप
२९५ सर्वारिष्ट विनाशाय स्वाहा	अशुभ नाशक
२९६ सर्वसम्पतकराय स्वाहा	सम्पूर्ण सम्पत्ति देने वाला
२९७ सर्वाधाराय स्वाहा	सबका आधार
२९८ शर्वाय स्वाहा	शिव
२९९ सर्वातिःहरये स्वाहा	दुःख नाशक
३०० सर्वदुःख प्रशांताय	दुःख शान्त करने वाला
३०१ सर्व सौभाग्यदायिने	सम्पूर्ण सौभाग्यदाता
३०२ सर्वज्ञाय स्वाहा	सर्ववेत्ता
३०३ अनंताय स्वाहा	जिसका अन्त नहीं
३०४ सर्वशक्ति धराय स्वाहा	सम्पूर्ण शक्ति धारक
३०५ सर्वेश्वर्य प्रदात्रे स्वाहा	सम्पूर्ण ऐश्वर्यदाता
३०६ सर्वकार्यविधायिने स्वाहा	सम्पूर्ण कार्य करने वाला
३०७ सर्वज्वर विनाशाय स्वाहा	सम्पूर्ण ज्वर नाशक
३०८ सर्व रोगापहारिणे स्वाहा	सम्पूर्ण रोग हरने वाला
३०९ सर्वाभिचारहंत्रे स्वाहा	जादू टोना नाशक
३१० सर्वेश्वर्याय स्वाहा	ऐश्वर्यदाता
३११ विधायिने स्वाहा	प्रबन्धक
३१२ पिंगाक्षाय स्वाहा	पीले रंग की आंख धारण करने वाले
३१३ एकश्रृगाय स्वाहा	एक सींग धारण करने वाला
३१४ द्विश्रृगाय स्वाहा	दो सींग धारण करने वाला
३१५ मरीचये स्वाहा	सूर्य चन्द्र रूप
३१६ बहुश्रृगाय स्वाहा	अनेकश्रृग धारण करने वाला

३१७ लिंगाय स्वाहा	जीवात्मा
३१८ महाश्रृगाय स्वाहा	दिव्य श्रृगवाला
३१९ मांगल्याय स्वाहा	मंगलकारी
३२० मनोज्ञाय स्वाहा	मनोहर
३२१ मंतव्याय स्वाहा	मानने योग्य
३२२ महात्मने स्वाहा	दिव्य आत्माओं हेतु
३२३ महादेवाय स्वाहा	भगवान शिव
३२४ मातुलिंगधराय स्वाहा	मातुलिंग धारण करने वाले
३२५ महामाया प्रसूताय स्वाहा	प्रकृति के उत्पादक
३२६ प्रस्तुताय स्वाहा	प्रशंसित
३२७ अयिने स्वाहा	सूर्य के उत्तरायण दक्षिणायन
३२८ अनन्तानंत रूपाय स्वाहा	अन्तरहित विष्णुरूप
३२९ अयिने स्वाहा	शुभ कारक
३३० जलशायिने स्वाहा	जल में निवास करने वाला
३३१ महोदराय स्वाहा	बड़े पेट वाला
३३२ मंदाय स्वाहा	मंद गतिवाला
३३३ मददाय स्वाहा	आनन्ददायक
३३४ मदाय स्वाहा	आनन्द स्वरूप
३३५ मधु कैट भहंत्रे स्वाहा	मधु कैटभ के नाश करनेवाला
३३६ माधवाय स्वाहा	वसन्त समान
३३७ मुरारये स्वाहा	मुरनामक दैत्य के शत्रु
३३८ महावीर्याय स्वाहा	अत्यन्त बलशाली
३३९ धैर्याय स्वाहा	मन की स्थिरता
३४० चित्रविर्याय स्वाहा	अद्भुत बलवान
३४१ चित्र कूर्माय स्वाहा	अद्भुत कठोर
३४२ चित्राय स्वाहा	अद्भुत

३४३ चित्रभानवे स्वाहा	अद्भुत प्रकाशवान
३४४ मायातीताय स्वाहा	देवशक्ति
३४५ मायाय स्वाहा	बुद्धि की माता रूप
३४६ महावीराय स्वाहा	हनुमानरूप
३४७ महातेजाय स्वाहा	प्रतापी
३४८ बीजाय स्वाहा	प्रकृति रूप
३४९ तेजोधाम्ने स्वाहा	प्रतापियों की शोभा का घर
३५० बीजिने स्वाहा	बलवान रूप
३५१ तेजोमयनृसिंहाय स्वाहा	प्रकाशवान नृसिंह
३५२ चित्रभानवे स्वाहा	आकाशगामी सूर्य
३५३ महादंष्ट्राय स्वाहा	दिव्य दन्तधारी
३५४ तुष्टाय स्वाहा	प्रसन्न
३५५ पुष्टिकराय स्वाहा	पौरुषता का उत्पादक
३५६ शिपिविष्टराय स्वाहा	किरणों से व्याप्त
३५७ दृष्टाय स्वाहा	दर्शनीय
३५८ पुष्टाय	बलवर्द्धक
३५९ परमेष्ठिने स्वाहा	बह्मा विष्णु शिवरूप
३६० विशिष्टाय स्वाहा	उत्तम
३६१ शिष्टाय	सुशील
३६२ गरिष्टाय स्वाहा	माननीय
३६३ येष्टदायिने स्वाहा	इच्छित देने वाला
३६४ जेष्ठाय स्वाहा	सबसे बड़ा
३६५ श्रेष्ठाय स्वाहा	सबसे श्रेष्ठ
३६६ तुष्टाय स्वाहा	प्रसन्न
३६७ अमित तेजसे स्वाहा	अत्यन्त प्रतापी
३६८ अष्टागन्यस्तरूपाय स्वाहा	आठ अंगों द्वारा घूमने वाला

३६९ सर्वदुष्टान्तकाय स्वाहा	सम्पूर्ण दुष्टो का विनाशक
३७० वैकुण्ठाय स्वाहा	वैकुण्ठ में निवास करने वाले
३७१ विकुण्ठाय स्वाहा	तेजधार वाला
३७२ शितिकण्ठाय स्वाहा	उज्जवल कण्ठ वाला
३७३ कंठिरवाय स्वाहा	शेर का शब्द करने वाला
३७४ लुंठाय स्वाहा	क्षुब्ध करने वाला
३७५ निःशठाय स्वाहा	बुद्धिमानों के लिये
३७६ हठाय स्वाहा	आग्रह करने वालों के लिये
३७७ सत्वोद्रिक्ताय स्वाहा	सारभाग
३७८ रुद्राय स्वाहा	रुद्ररूप (शिवका)
३७९ ऋग्यजुः सामगाय स्वाहा	तीनों वेद रूप
३८० ऋतुध्वजाय स्वाहा	यज्ञ की ध्वजा धारण करने वाला
३८१ वज्राय स्वाहा	भीषण रूप
३८२ मंत्रराजाय स्वाहा	रहस्यो का राजा
३८३ मंत्रिणे स्वाहा	सलाहकार
३८४ त्रिनेत्राय स्वाहा	तीन नेत्र धारण करने वाला
३८५ त्रिवर्गाय स्वाहा	सांसारिक जीवन के तीन पदार्थ
३८६ त्रिधाम्ने स्वाहा	स्वर्ग पृथ्वी पाताल रूप
३८७ त्रिशूलने स्वाहा	त्रिशूल धारण करने वाला
३८८ त्रिकाल ज्ञान रूपाय स्वाहा	भूतवर्तमान भविष्य को जानने वाला
३८९ त्रिदेहाय स्वाहा	दत्तात्रेय रूप
३९० त्रिधात्मने स्वाहा	वात पित्त कफ रूप
३९१ त्रिमूर्ति विधाय स्वाहा	ब्रह्मादि से प्राप्त ज्ञान
३९२ विद्याय स्वाहा	शिक्षादि से प्राप्त ज्ञान

३९३ त्रितत्वज्ञानिने स्वाहा	तीनों तत्वो का ज्ञानी
३९४ अक्षोभ्याय स्वाहा	निर्मोह रूप
३९५ अनिरुद्धाय स्वाहा	कामदेव के पुत्ररूप
३९६ अप्रमेयाय स्वाहा	जिसका नाप तोल नहीं किया जा सकता
३९७ भानवे स्वाहा	प्रकाश रूप
३९८ अमृताय स्वाहा	सुधा रूप
३९९ अनंताय स्वाहा	जिसका कोई अन्त नहीं
४०० अमिताय स्वाहा	बड़ा आकार
४०१ अमितौजसे स्वाहा	दिव्य तेज
४०२ अपमृत्यु विनाशाय स्वाहा	अकाल मृत्यु विनाशक
४०३ अपस्मार विघातिने स्वाहा	मृगीरोग विनाशक
४०४ अन्नदाय स्वाहा	अन्न देने वाला
४०५ अन्नरूपाय स्वाहा	अन्न रूप
४०६ अन्नाय स्वाहा	अन्न
४०७ अन्नभुजे स्वाहा	अन्न का उपभोग करने वाला
४०८ नाद्याय स्वाहा	जिसके कोई खण्ड नहीं हैं
४०९ निरवद्याय स्वाहा	दोष रहित
४१० विद्याय स्वाहा	शास्त्र आदि का वेत्ता
४११ अद्भतकर्मणे स्वाहा	अनोखा कर्म करने वाला
४१२ सद्योजाताय स्वाहा	शिघ्र जन्मा हुआ
४१३ संघाय स्वाहा	समूह रूप
४१४ वैयताय स्वाहा	निश्चय वाचक स्वीकृति
४१५ अध्वातीताय स्वाहा	सन्ध्याकाल के समय बढ़ने वाला
४१६ सत्वाय स्वाहा	शीघ्रगामी
४१७ वागतीताय स्वाहा	अमृतरूपी वाणी

४१८ वाग्मिने स्वाहा	वाणी रूप
४१९ वागीश्वराय स्वाहा	वाणी के ईश
४२० गोपाय स्वाहा	रक्षक
४२१ गोहिताय स्वाहा	गौ का रक्षक
४२२ गवांपते स्वाहा	गौवों का स्वामी
४२३ गन्धर्वाय स्वाहा	देव योनि विशेष
४२४ गभीराय स्वाहा	गहरी आवाज वाला
४२५ गर्जिताय स्वाहा	गर्जन करने वाला
४२६ उर्जिताय स्वाहा	प्राप्त करने वाला
४२७ प्रजन्याय स्वाहा	सुवृष्टि
४२८ प्रबुद्धाय स्वाहा	ज्ञानी
४२९ प्रधान पुरुषाय स्वाहा	श्रेष्ठ पुरुष
४३० पद्माभाय स्वाहा	कमल की आभा
४३१ सुनाभाय स्वाहा	सुन्दर नाभी वाला
४३२ पद्मनाभाय स्वाहा	जो कमल की नाभी वालाहै
४३३ मानिने स्वाहा	जो माननीय है
४३४ पद्मनेत्राय स्वाहा	जे कमल के समान नेत्र वालाहै
४३५ पद्माय स्वाहा	जो कमल के समान है
४३६ पद्मोदराय स्वाहा	जो कमल के समान उदर वाला है
४३७ पूताय स्वाहा	जो पवित्र है
४३८ पद्मकल्पोद्भवाय स्वाहा	सृष्टि के अंत में कमल से उत्पन्न
४३९ हृत्पद्मवासाय स्वाहा	जो कमलरूपी हृदय में निवास करता है
४४० भूपद्मोद्धरणाय स्वाहा	पृथ्वी को कमल के समान जो धारण करता है

४४१ शब्दब्रह्मरूपाय स्वाहा	जिसके शब्द वेदरूप हैं
४४२ ब्रह्मरूपधराय स्वाहा	जो वेद के रूप को धारण करता है
४४३ ब्रह्मणे स्वाहा	जो वेद का प्रवर्तक है
४४४ ब्रह्मरूपाय स्वाहा	जो वेद रूप है
४४५ पद्मनेत्राय स्वाहा	कमल रूपी नेत्र वाला
४४६ ब्रह्मादये ब्राह्मणाय: स्वाहा	ब्रह्मा आदि जो वेद धारण करता है
४४७ ब्रह्मब्रह्मात्मने स्वाहा	वेद जो ब्रह्मा की आत्मा है
४४८ सुब्रह्मण्याय स्वाहा	सुन्दर सत्‌चित्‌ आनन्दरूप
४४९ ब्रह्मण्याय स्वाहा	ब्राह्मणों का प्रेमी
४५० त्रिवेदिने	ऋग यजु साम वेद रूप
४५१ परब्रह्मस्वरूपाय स्वाहा	परमेश्वर रूप
४५२ पंच ब्रह्मात्मने स्वाहा	पंच ब्रह्मात्मा रूप
४५३ ब्रह्मशिरसे स्वाहा	जिसका शिर ब्रह्म है
४५४ अश्वशिरसे स्वाहा	जिसका अश्व शिर है
४५५ अथर्व शिरसे	अथर्व शिरवाला
४५६ नित्यमसे स्वाहा	जो सदा है
४५७ प्रमिताय स्वाहा	प्रतिपादन करने योग्य
४५८ तीक्षणद्रंष्ट्राय स्वाहा	कठोर दांतो को धारण करने वाले
४५९ लोलाय स्वाहा	चंचल
४६० ललिताय स्वाहा	मनोरम
४६१ लावण्याय स्वाहा	मनोहर
४६२ लवित्राय स्वाहा	काटने का अस्त्र रूप
४६३ भासकाय स्वाहा	प्रकाश पुंज

४६४ लक्षणज्ञाय स्वाहा	विशेष पहचान वाला
४६५ लक्षाय स्वाहा	विशेष अस्त्र प्रहारक
४६६ लक्षणाय स्वाहा	शुभाशुभ प्रदर्शक
४६७ लसदिप्ताय स्वाहा	आकर्षक ज्वाला
४६८ लिप्ताय स्वाहा	अनुरक्त
४६९ विष्णवे स्वाहा	भगवान विष्णु
४७० प्रभविष्णवे स्वाहा	सामर्थवान भगवान विष्णु
४७१ वृष्णिमूलाय स्वाहा	मेघों का उत्पादक
४७२ कृष्णाय स्वाहा	श्री कृष्ण
४७३ महाविष्णवे स्वाहा	परम विष्णु
४७४ महासिंहाय स्वाहा	परमसिंह
४७५ वनमालिने स्वाहा	वन माला धारण करने वाला
४७६ किरिटिनं कुण्डलिन सर्वांगे स्वाहा	किरिट व कुण्डल जिसके सारे अंगों में है
४७७ सर्वतोमुखे स्वाहा	जिसका मुंह चारो ओर है
४७८ सर्वतोपाणिपाद स्वाहा	जिसके चारो ओर हाथ पैरहै
४७९ सर्वतोऽक्षिये स्वाहा	जिसके चारो ओर सिर आंखहै
४८० शिरोमुखाय	जिसके चारों ओर शिर मुख है।
४८१ सर्वेश्वराय स्वाहा	जो सबका ईश्वर है
४८२ सदातुष्टे स्वाहा	जो सदा प्रसन्न रहता है
४८३ समर्थे	सामर्थ्यवान्
४८४ समर प्रियाय स्वाहा	युद्ध जिसको प्रिय है
४८५ बहुयोजन विस्तीर्णे स्वाहा	बहुत योजन का विस्तार वाला
४८६ बहुयोजनमायताय स्वाहा	बहुत योजन जिसका आकार
४८७ बहुयोजन हस्तोघ्रि स्वाहा	बहुत योजन तक जिसके हाथ पैर है

४८८ बहुयोजननासिके स्वाहा	बहुत योजन तक जिसका नासिका है
४८९ महारूपाय स्वाहा	दिव्य रूप
४९० महावक्राय स्वाहा	दिव्य मुख
४९१ महाद्रष्ट्राय स्वाहा	दिव्य दांतो वाला
४९२ महाभुजे स्वाहा	दिव्य भुजा
४९३ महानादाय स्वाहा	दिव्य शब्द
४९४ महारौद्राय स्वाहा	महाद्ररूप
४९५ महाकाय स्वाहा	दिव्य शरीर
४९६ महाबलाय स्वाहा	महाबलवान
४९७ अनाभे स्वाहा	जिसका कोई मध्य नहीं
४९८ ब्राह्मणोरूपे स्वाहा	परमात्मा रूप
४९९ वैष्णवे स्वाहा	आचार विचार से रहनेवाला
५०० आशीर्षाय स्वाहा	हित चाहने वाला
५०१ रूद्राय स्वाहा	भगवान शिव का एक रूप
५०२ ईशानाय स्वाहा	महादेव रूप
५०३ सर्वत शिवाय स्वाहा	जो शिव सब जगह विद्यमान है
५०४ नारायण नारसिंहाय स्वाहा	परमेश्वर जो नर सिंहरूप है
५०५ वीर सिंहाय स्वाहा	जो बलवान सिंह है
५०६ क्रूर सिंहाय स्वाहा	जो क्रूर रूप सिंह है
५०७ दिव्य सिंहाय स्वाहा	जो दिव्य सिंह है
५०८ व्याघ्रसिंहाय स्वाहा	जो व्याघ्र रूप का सिंह है
५०९ पुच्छ सिंहाय स्वाहा	जिस सिंह्ह का रूप पूछ समान है
५१० पूर्ण सिंहाय स्वाहा	जो स्वयं पूर्णरूप सिंह है
५११ रौद्रसिंहाय स्वाहा	जो रौद्ररूप का सिंह है
५१२ भद्रसिंहाय स्वाहा	जो कल्याणकारी सिंह है

५१३ विह्वलनेत्र सिंहाय स्वाहा	जिस सिंह के विकल नेत्र है
५१४ भूतसिंहाय स्वाहा	पंचतत्व रूप सिंह
५१५ निर्मल चित्रसिंहाय स्वाहा	पवित्र रूप वाला सिंह
५१६ कालसिंहाय स्वाहा	जो मृत्यु रूप सिंह है
५१७ कल्पसिंहाय स्वाहा	जो कर्तव्य पूर्ण करने में समर्थ है
५१८ कामसिंहाय स्वाहा	जो सिंह कामदेव के समानहै
५१९ भुवनैकसिंहाय स्वाहा	संसार में जो एक ही सिंह है
५२० भविष्णुवे स्वाहा	होतव्यता
५२१ सहिष्णवे स्वाहा	जो सहनशील है
५२२ भ्राजिष्णवे स्वाहा	जो एक रस प्रकाश रूप है
५२३ पृथिव्यै स्वाहा	जो पृथ्वी के रूप में हैं
५२४ अंतरिक्षाय स्वाहा	जो आसमान के रूप में है
५२५ पर्वताय स्वाहा	जो पर्वतोंके रूप में विद्यमानहै
५२६ अरण्याय स्वाहा	जो जंगल के रूप में है
५२७ कलाय स्वाहा	विद्या जिसके ६४ भेद हैं
५२८ काष्ठविलिप्ताय स्वाहा	दिशाओं में लिप्त
५२९ मुहूर्ताय स्वाहा	जो मुहूर्त के रूप में है
५३० प्रहरादिकाय स्वाहा	जो चारों पहरों के रूप में है
५३१ अहोरात्रे स्वाहा	जो दिन और रात्रि स्वरूप है
५३२ त्रिसन्ध्यै स्वाहा	जो तीन संध्याओं के रूप में है
५३३ पक्षाय स्वाहा	जो दोनों पक्षो के रूप में है
५३४ मासाय स्वाहा	जो मास के रूप में है
५३५ वत्सराय स्वाहा	संवत्सरों के रूप में जो विद्यमान है
५३६ युगाय स्वाहा	चतुर्युगस्वरूप

५३७ युगभेदाय स्वाहा	युगों को बांटने वाला
५३८ संयुगे स्वाहा	युगों को मिलाने वाला
५३९ युग संधय स्वाहा	युगों का संधि रूप
५४० नित्याय स्वाहा	जो नित्य ही स्थित है
५४१ नैमितिके स्वाहा	जो नैमितिक रूप है
५४२ दिने स्वाहा	जो दिन के रूप में है
५४३ महाप्रलयाय स्वाहा	जो महाप्रलय का रूप है
५४४ करणाय स्वाहा	क्रिया सिद्धि में उपकारक
५४५ कारणाय स्वाहा	कारण स्वरूप
५४६ कर्त्ते स्वाहा	कर्ता स्वरूप
५४७ भत्रे स्वाहा	भरण पोषण करने वाला
५४८ हर्त्ते स्वाहा	हरण करने वाला
५४९ ईश्वराय स्वाहा	विश्व के नियंता
५५० सत्कृर्ते स्वाहा	अच्छे कर्म कराने वाले
५५१ सत्कृतिये स्वाहा	अच्छी कला वाले
५५२ गोप्ते स्वाहा	जो गौओं की रक्षा करने वाला है
५५३ सच्चिदानन्दाय स्वाहा	सत्-चित्-आनन्द रूप
५५४ विग्रहाय स्वाहा	शरीर रूप
५५५ प्राणाय स्वाहा	प्राण रूप
५५६ प्राणिनाप्रत्यगात्माय स्वाहा	प्राणियों की शुद्धआत्मा
५५७ सुज्योते स्वाहा	सुन्दर प्रकाश
५५८ परंज्योते स्वाहा	श्रेष्ठ ज्योति
५५९ आत्मज्योते स्वाहा	ब्रह्मज्योति रूप
५६० सनातनाय स्वाहा	नित्य है जो
५६१ ज्योते स्वाहा	प्रकाश समान

५६२ लोकस्वरूपा स्वाहा	भूमी आकाश पाताल रूप
५६३ ज्योतिर्ज्ञाय स्वाहा	प्रकाश को जानने वाला
५६४ ज्योतिषां पतये स्वाहा	प्रकाश का स्वामी सूर्य
५६५ स्वाहाकाराय स्वाहा	देवताओं को दिया गया होम
५६६ स्वधाकाराय स्वाहा	पितरो को जो हव्य दियागया
५६७ वषट्काराय स्वाहा	पुरोहित द्वारा प्रदत्त आहुति
५६८ कृपाकराय स्वाहा	कृपा करने वाले
५६९ हंतकाराय स्वाहा	आकस्मिक हलचल प्रकट करने वाला
५७० निराकाराय स्वाहा	जिनका आकार नहीं
५७१ वेगाकाराय स्वाहा	जो वेगवान हो
५७२ शंकराय स्वाहा	भगवान शिव
५७३ अकारादिहकारांताय स्वाहा	अ से ह मात्रा में व्याप्त
५७४ ॐकार लोककारकाय स्वाहा	ॐकार रूप में विश्व के नियंता
५७५ एकात्मने स्वाहा	एक रूप ब्रह्म
५७६ अनेकात्मने स्वाहा	अनेक रूपों में विद्यमान
५७७ चतुरात्मने स्वाहा	चार विभूति धारण करनेवाला
५७८ चतुर्भुजे स्वाहा	चार भुजा धारण करने वाला
५७९ चतुमुर्ते स्वाहा	जो विराट हिरण्यगर्भ ईश और ब्रह्मरूप है
५८० चतुर्दृष्ट्राय स्वाहा	नृसिंह रूप में चार दृष्ट्रो वाला है
५८१ चतुर्वेदाय स्वाहा	चार वेदों के धारक
५८२ अयोत्तमेः स्वाहा	शुभ कारक
५८३ लोकप्रियाय स्वाहा	संसार के प्रिय

५८४ लोकगुरुवे स्वाहा	विश्व को अंधेरे से उजाले मे ले जाने वाला
५८५ लोकेशाय स्वाहा	विश्व के स्वामी
५८६ लोकनायकाय स्वाहा	तीनो लोकों के नायक
५८७ लोकसाक्षे स्वाहा	तीनो लोकों के साक्षी
५८८ लोकपते स्वाहा	तीनों लोकों के स्वामी
५८९ लोकात्मने स्वाहा	तीनो लोकों की आत्मा
५९० लोकलोचनाय स्वाहा	तीनो लोकों के नेत्ररूप
५९१ लोकाधाराय स्वाहा	तीनो लोकों के आधार
५९२ वृहल्लोकाय स्वाहा	अनेक लोक को धारण करने वाले
५९३ लोकालोकमये स्वाहा	अनेक लोको से युक्त
५९४ विभु:वे स्वाहा	विस्तृत
५९५ लोककर्त्ते स्वाहा	लोकों के कर्ता •
५९६ विश्वकर्ते स्वाहा	संसार के कर्ता
५९७ कृतावर्ते स्वाहा	जीविका चलाने वाला
९८ कृतागमे स्वाहा	शास्त्र वेत्ता
९९ अनादये स्वाहा	अन्नों का भोक्ता
६०० अनन्ताय स्वाहा	जिसका कोई अन्त नहीं
६०१ अभूतये स्वाहा	जिसका जन्म न हुआ हो
६०२ भूतविग्रहाय स्वाहा	प्राणियों की आकृति
६०३ स्तुतिस्तुत्ये स्वाहा	प्रशंसनीय
६०४ स्तवप्रीतः स्वाहा	जो स्तुति प्रिय है
६०५ स्तोताय स्वाहा	जो स्तुति कर्ता है
६०६ नेताय स्वाहा	नायक
६०७ नियामके स्वाहा	व्यवस्थापक

६०८ गत्ये स्वाहा	गति देने वाला
६०९ मत्ये स्वाहा	बुद्धिरूप
६१० पित्रे स्वाहा	विश्व के पिता रूप
६११ मात्रे स्वाहा	विश्व की जननी रूप
६१२ गुरुवे स्वाहा	विश्व के गुरु रूप
६१३ सखाय स्वाहा	विश्व के सखा रूप
६१४ सुहृदे स्वाहा	कृपा पूर्ण हृदय वाला
६१५ आत्मरूपाय स्वाहा	आत्मा के समान
६१६ मंत्ररूपाय स्वाहा	मंत्र के रूप वाला
६१७ अस्त्ररूपाय स्वाहा	अस्त्र के रूप वाला
६१८ बहुरूपाय स्वाहा	अनेको रूप वाला
६१९ पंचरूपधराय स्वाहा	पांचरूप धारण करने वाला
६२० भद्ररूपाय स्वाहा	श्रेष्ठरूप धारण करने वाले
६२१ रूढाय स्वाहा	आरूढ
६२२ योगरूपाय स्वाहा	चित्तवृत्तियों का निरोध करने वाले रूप
६२३ योगिने स्वाहा	जो योग को जानता है
६२४ समरूपाय स्वाहा	जो सबको समान रूप में देखता है
६२५ योगाय स्वाहा	जो जीवात्मा को परमात्मा से मिलाता है
६२६ योगपीठस्थिताय स्वाहा	जो योग में आसन पर बैठाहै
६२७ योगगम्याय स्वाहा	जो योग प्राप्त कर चुका है
६२८ सौम्याय स्वाहा	जो साधारण रूप वाला है
६२९ ध्यानगम्याय स्वाहा	जो ध्यान करने योग्य है
६३० ध्यायिने स्वाहा	जो ध्यान करता है

६३१ ध्येयगम्याय स्वाहा	जिसने इच्छित प्राप्त किया है
६३२ धाम्ने स्वाहा	तेज स्वरूप
६३३ धामाधिपतये स्वाहा	तेजों के स्वामी
६३४ धराधराय स्वाहा	पृथ्वी को धारण करने वाला
६३५ धर्माय स्वाहा	जो धर्म की रक्षा के लिये है
६३६ धारणाभिरताय स्वाहा	रचना करने के लिये जो उद्यत है
६३७ धात्रे स्वाहा	रचना करने वाला
६३८ संधात्रे स्वाहा	जो शुभ रचना करता है
६३९ विधात्रे स्वाहा	जगत का कर्म तथा फल की रचना करने वाला
६४० धराय स्वाहा	जो पृथ्वी के लिये है
६४१ दामोदराय स्वाहा	उत्कृष्ट बुद्धि धारण करने वाला
६४२ दान्ताय स्वाहा	नियंत्रक
६४३ दानवान्तकराय स्वाहा	दानवो के संहारकर्ता
६४४ संसारवैद्याय स्वाहा	संसार-सागर से पार करनेवाला
६४५ भेषजाय स्वाहा	औषधरूप
६४६ शीरध्वजाय स्वाहा	सूर्य की ध्वजा वाला
६४७ शीताय स्वाहा	शीतरूप
६४८ वाताय स्वाहा	वायुरूप
६४९ प्रमिताय स्वाहा	सत्यबोध
६५० सारस्वताय स्वाहा	विल्व दण्ड
६५१ संसारनाशनाय स्वाहा	संसार के उद्धारक
६५२ यक्षमालिने स्वाहा	निधि रक्षक
६५३ असिधर्मधराय स्वाहा	धर्मरूपी तलवार धारण

	करने वाला
६५४ वषट्कर्मनिरताय स्वाहा	षट्कर्मों में तत्पर
६५५ विक्रमाय स्वाहा	स्वयं बलशाली
६५६ सुकर्माय स्वाहा	सदाचारी
६५७ परकर्मविधायिने स्वाहा	दूसरों को होनहार बनानेवाला
६५८ सुशर्मणे स्वाहा	अच्छे ब्राह्मणों की उपाधि
६५९ मन्मथाय स्वाहा	मदन रूप वाला
६६० वर्माय स्वाहा	रक्षा का स्थान
६६१ वर्मिणे स्वाहा	रक्षक
६६२ करिचर्मवसानाय स्वाहा	हाथी के चर्म धारण करनेवाला
६६३ करालवदनाय स्वाहा	भयंकर शरीर वाला
६६४ कवये स्वाहा	कवि
६६५ पद्मगर्भाय स्वाहा	ब्रह्मा
६६६ भूतगर्भाय स्वाहा	प्राणियों के गर्भ
६६७ घृणानिधे स्वाहा	प्रकाश का खजाना
६६८ ब्रह्मगर्भाय स्वाहा	ब्रह्म भाव का उत्पादक
६६९ गर्भाय स्वाहा	भ्रूणरूप
६७० वृहदगर्भाय स्वाहा	दिव्यगर्भ
६७१ धूर्जटेस्वाहा	शिव
६७२ विश्व गर्भाय स्वाहा	संसार को धारण करने वाला
६७३ श्रीगर्भाय स्वाहा	लक्ष्मी को धारण करनेवाला
६७४ जितारये स्वाहा	शत्रुजित
६७५ हिरण्यगर्भाय स्वाहा	सुवर्ण के गर्भ वाला
६७६ हिरण्यकवचाय स्वाहा	सुवर्ण के कवच वाला
६७७ हिरण्यवर्णदेहाय स्वाहा	सुवर्ण के समान शरीर वाला
६७८ हिरण्याक्ष विनाशिने स्वाहा	हिरण्याक्ष दैत्य के विनाशक

६७९ हिरण्यकशियपोर्हंत्रे स्वाहा	हिरण्यकशियपु दैत्य को मारने वाला
६८० हिरण्यनयनाय स्वाहा	सुवर्ण के समान नेत्र वाला
६८१ हिरण्यं रेतसे स्वाहा	स्वर्ण समान वीर्यवाला
६८२ हिरण्यवदनाय स्वाहा	सुवर्ण के समान शरीर
६८३ हिरण्यश्रृगाय स्वाहा	सोने के श्रृग धारण करने वाला
६८४ नि:श्रृगाय स्वाहा	विनाश्रिंग के
६८५ श्रृगिणे स्वाहा	श्रृंग युक्त
६८६ भैरवाय स्वाहा	शिवजी का गण का रूप
६८७ सुकेशाय स्वाहा	सुन्दर बालो वाला
६८८ भीषणाय स्वाहा	भयंकर
६८९ अंत्रमालिने स्वाहा	आंत की माला धारण करने वाला
६९० चण्डाय स्वाहा	प्रचण्ड
६९१ रुण्डमालाय स्वाहा	रुण्ड माला धारण करने वाले
६९२ दण्डधराय स्वाहा	दण्ड को धारण करने वाले
६९३ अखण्डतत्वरूपाय स्वाहा	कभी नष्ट न होने वाले तत्व रूप
६९४ कमण्डलुधराय स्वाहा	कमण्डल धारण करने वाला
६९५ खण्डसिंहाय स्वाहा	खण्ड सिंह रूप
६९६ सत्यसिंहाय स्वाहा	सत्यरूप धारण करने वाले सिंह रूप
६९७ श्वेत सिंह स्वाहा	श्वेत वर्ण सिंह
६९८ पीत सिंहाय स्वाहा	पीले वर्ण का सिंह
६९९ नीलसिंहाय स्वाहा	नीला वर्ण का सिंह
७०० नीलाय स्वाहा	नील रूप

७०१ रक्त सिंहाय स्वाहा	रक्तवर्ण सिंह
७०२ हरिद्र सिंहाय स्वाहा	हरितवर्ण सिंह
७०३ धूम्रसिंहाय स्वाहा	धूम्रवर्ण का सिंह
७०४ मूलसिंहाय स्वाहा	प्रथम सिंह
७०५ बृहसिंहाय स्वाहा	आकार में बड़ा सिंह
७०६ पातालस्थित सिंहाय स्वाहा	पाताल में स्थित सिंह
७०७ पर्वतवासिने स्वाहा	पर्वत में निवास करने वाला सिंह
७०८ जलस्थसिंहाय स्वाहा	जल में निवास करने वाला सिंह
७०९ अंतरिक्षस्थिताय स्वाहा	आसमान में स्थित सिंह
७१० कालाग्निरुद्रसिंहाय स्वाहा	कालअग्नि रूद्ररूप सिंह
७११ चण्डसिंहाय स्वाहा	चण्ड रूप सिंह
७१२ अनन्तसिंह सिंहाय स्वाहा	जिसका कोई अन्त नहीं ऐसा सिंह
७१३ अनन्तगतये स्वाहा	अन्नत गति रूप सिंह
७१४ विचित्र सिंहाय स्वाहा	विचित्र रूप सिंह
७१५ बहुसिंहस्वरूपिणे स्वाहा	अनेको सिंह का स्वरूप
७१६ अभयंकर सिंहाय स्वाहा	भय न देने वाला सिंह
७१७ सिंह राजाय स्वाहा	सिंहों में राजा
७१८ सप्ताब्धिमेखलायै स्वाहा	सात गुणों की मेखला धारण करने वाला
७१९ सत्यस्वरूपिणे स्वाहा	सत्यस्वरूप धारण करने वाला
७२० सप्तलोकांतरस्थाय स्वाहा	सात लोक तथा परलोक स्थित
७२१ सप्तस्वरमयाय स्वाहा	सातों स्वरमय
७२२ सप्तार्चिरूपदंष्ट्राय स्वाहा	सात किरणो युक्त दांतो वाला रूप
७२३ सप्ताश्वरथ रूपिणे स्वाहा	सूर्य के समान रूप वाला
७२४ सप्तवायुस्वरूपाय स्वाहा	सात वायु के रूप

७२५ सप्तच्छंन्दोमयाय स्वाहा	सातोच्छन्दोमय
७२६ स्वच्छाय स्वाहा	स्वतंत्र
७२७ स्वच्छरूपाय स्वाहा	स्वतंत्र रूप से विचरण करने वाले
७२८ स्वच्छन्दाय स्वाहा	अपनी रचना स्वयं करने वाला
७२९ श्रीवत्साय स्वाहा	महर्षि भृगु के चरण चिन्ह धारण करने वाले
७३० सुवेषाय स्वाहा	सुन्दर रूप वाला
७३१ श्रुतये स्वाहा	वेद स्वरूप
७३२ श्रुतिमूर्तये स्वाहा	वेद की मूर्ति रूप
७३३ शुचिश्रवाय स्वाहा	पवित्र तपस्वी
७३४ शूराय स्वाहा	बलवान
७३५ सुप्रभाय सुधन्विने स्वाहा	सुन्दर प्रकाश युक्त धनुष धारण करने वाला
७३६ सुभ्राय स्वाहा	उज्जवल रूप
७३७ सुरनाथाय स्वाहा	देवताओं के स्वामी
७३८ सुप्रभाय स्वाहा	सुन्दर कान्ती
७३९ सुभाय स्वाहा	मंगलप्रद
७४० सुदर्शनाय स्वाहा	सुन्दर दर्शन योग्य
७४१ सूक्ष्माय स्वाहा	छोटे रूप वाला
७४२ निरुक्ताय स्वाहा	वेद का अंग
७४३ सुप्रभायस्वभावाय स्वाहा	सुन्दर कान्ती युक्त स्वभाववाला
७४४ भवाय स्वाहा	उत्पत्ति के कारण
७४५ विभवाय स्वाहा	प्रतापवान
७४६ सुशाखाय स्वाहा	सुन्दर विभाग
७४७ विशाखाय स्वाहा	सोलहवा नक्षत्र

७४८ सुमुखाय स्वाहा	सुन्दर मुख
७४९ मुखाय स्वाहा	मुख रूप
७५० सुनखाय स्वाहा	सुन्दर नख
७५१ सुदंष्ट्राय स्वाहा	सुन्दर दांतों से युक्त
७५२ सुरथाय स्वाहा	सुन्दर रथ वाला
७५३ सुधाय स्वाहा	अमृत रूप
७५४ सौख्याय स्वाहा	सुख रूप
७५५ सुरमुख्याय स्वाहा	देवताओं के अग्रणी
७५६ प्रख्याताय स्वाहा	यशस्वी
७५७ प्रभाय स्वाहा	कान्तिमान
७५८ खट्वांङ्ग हस्ताय स्वाहा	खट्वांग हाथ में धारण करने वाला
७५९ खेटमुद्गरपाणये स्वाहा	खेटमुद्गर धारण करने वाला
७६० खगेन्द्राय स्वाहा	गरुड़ रूप
७६१ मृगेन्द्राय स्वाहा	मृगों का स्वामी
७६२ नागेन्द्राय स्वाहा	नागों का स्वामी
७६३ दृढाय स्वाहा	दृढ़ रूप
७६४ नाग केयूर हाराय स्वाहा	नाग हार धारण करने वाला
७६५ नागेन्द्राय स्वाहा	ऐरावत समान
७६६ अघमर्दिने स्वाहा	पापनाशक
७६७ नदीवासाय स्वाहा	नदी में वास करने वाला
७६८ नग्नाय स्वाहा	नग्नरूप धारण करने वाला
७६९ नानारूपधाराय स्वाहा	अनेक रूप धारण करने वाला
७७० नागेश्वराय स्वाहा	शेष रूप धारण करने वाला
७७१ नागाय स्वाहा	नागरूप
७७२ नमिताय स्वाहा	जो झुका हुआ है

७७३ नराय स्वाहा	नर रूप
७७४ नागांतकरथाय स्वाहा	गरूड़रूप धारण करने वाला
७७५ नरनारायणाय स्वाहा	नर नारायण रूप
७७६ मत्स्य स्वरूपाय स्वाहा	मत्स्य रूप
७७७ कच्छपाय स्वाहा	कच्छप रूप
७७८ यज्ञाय स्वाहा	यज्ञ रूप
७७९ वराहाय स्वाहा	वराह रूप
७८० नरसिंहाय स्वाहा	नृसिंह रूप
७८१ विक्रमाक्रान्तलोकाय स्वाहा	बल से लोको को आक्रान्त करने वाले
७८२ वामनाय स्वाहा	वामन रूप
७८३ महौजसे स्वाहा	बड़ा शूरवीर
७८४ भार्गवाय स्वाहा	परशुराम
७८५ रामाय स्वाहा	रामरूप
७८६ रावणांतकराय स्वाहा	रावण का अन्त करने वाला
७८७ बलरामाय स्वाहा	बलराम
७८८ कंसप्रध्वंसकारिणे स्वाहा	कंश नाश करने वाला
७८९ बुद्धाय स्वाहा	बुद्ध (ज्ञान दाता)
७९० बुद्धरूपाय स्वाहा	बुद्ध के रूप में
७९१ तीक्ष्ण रूपाय स्वाहा	उत्साही रूप
७९२ कल्किने स्वाहा	कल्कि का रूप
७९३ आत्रेयाय स्वाहा	दुर्वासा रूप
७९४ अग्निनेत्राय स्वाहा	अग्निरूप नेत्र धारण करने वाला
७९५ कपिलाय स्वाहा	कपिलरूप
७९६ द्विजाय स्वाहा	दांत धारण करने वाला

७९७ क्षेत्राय स्वाहा	पवित्र रूप
७९८ पशुपालाय स्वाहा	पशुओं को पालने वाला
७९९ पशुवक्राय स्वाहा	पशु के मुखवाला
८०० गृहस्थाय स्वाहा	घर में स्थित
८०१ वनस्थाय स्वाहा	वन में निवास करने वाला
८०२ पतये स्वाहा	जगत् का स्वामी
८०३ ब्रह्मचारिणे स्वाहा	ब्रह्मचारी रूप
८०४ स्वर्गापवर्गदात्रे स्वाहा	देवलोक व मोक्ष देने वाला
८०५ भोक्त्रे स्वाहा	विष्णु रूप
८०६ मुमुक्षवे स्वाहा	मुक्ति देने वाला
८०७ शालग्रामनिवासाय स्वाहा	शालीग्राम में निवास करने वाला
८०८ क्षीराब्धि शयनाय स्वाहा	क्षीर सागर में शयन करने वाला
८०९ शैलाद्रिनिवासाय स्वाहा	पहाड़ों में निवास करने वाला
८१० शिलावासाय स्वाहा	शिलाओं में निवास करनेवाले
८११ योगीहृत्पद्मवासाय स्वाहा	योगियों के कमल रूपी हृदय में निवास करने वाला
८१२ महाहासाय स्वाहा	दिव्य दहाड़ करने वाला
८१३ गुहावासाय स्वाहा	गुफाओं का वास करने वाला
८१४ गुह्याय स्वाहा	जो गुह्य है
८१५ गुप्ताय स्वाहा	जो गुप्त है
८१६ गुरवे स्वाहा	जो गुरु है
८१७ मूलाधिवासाय स्वाहा	उत्पत्ति हेतु आदि कारण
८१८ नीलवस्त्र धराय स्वाहा	नीले वस्त्र धारण करने वाला
८१९ पीतवस्त्रधराय स्वाहा	पीत वस्त्र धारण करने वाला
८२० शस्त्राय स्वाहा	जो शस्त्र रूप है
८२१ रक्तवस्त्राय स्वाहा	रक्त वस्त्र धारण करने वाला

८२२ रक्त माला विभूषिताय स्वाहा	रक्तमालाओं से शोभित
८२३ रक्त गन्धानुलेपिने स्वाहा	रक्त चन्दन धारण करने वाले
८२४ धुरंधराय स्वाहा	श्रेष्ठ
८२५ धूर्ताय स्वाहा	जो धूर्तो से रक्षा करता है
८२६ दुर्धराय स्वाहा	कठिन को भी धारण करने वाला
८२७ धराय स्वाहा	पृथ्वी को धारण करने वाला
८२८ दुर्मदाय स्वाहा	उन्मतता नाशक
८२९ दुरंताय स्वाहा	भयंकर
८३० दुर्धराय स्वाहा	कठिन को भी धारण करने
८३१ दुर्निरीक्ष्याय स्वाहा	संसार को देखने वाला
८३२ निष्ठाय स्वाहा	निश्चय वाला
८३३ दुर्दर्शाय स्वाहा	दूर दृष्टि रखने वाला
८३४ द्रुमाय स्वाहा	वृक्ष रूप
८३५ दुर्भेदाय स्वाहा	कठिन को भी नष्ट करनेवाला
८३६ दुराशाय स्वाहा	कठिन आशा को पूर्ण करने वाला
८३७ दुर्लभाय स्वाहा	दुष्प्राप्य
८३८ दृप्ताय स्वाहा	मदोन्मत्त
८३९ दृप्तवक्राय स्वाहा	उन्मत्तमुख
८४० अदृप्तनयनाय स्वाहा	जिनकी आंखों में अहंकार नहीं है
८४१ उन्मताय स्वाहा	मतवाला
८४२ प्रमत्ताय स्वाहा	मस्त
८४३ दैत्यारये स्वाहा	दैत्यों का नाशक
८४४ रसज्ञाय स्वाहा	रसों को जानने वाला

८४५ रसेशाय स्वाहा	रसों का स्वामी
८४६ अरक्तरसनाय स्वाहा	रसों से विरक्त
८४७ पथ्याय स्वाहा	उपयुक्त आहार
८४८ परितोषाय स्वाहा	सन्तोष
८४९ रथ्याय स्वाहा	चक्रवाला
८५० रसिकाय स्वाहा	ज्ञाता
८५१ ऊर्ध्वकेशाय स्वाहा	ऊँचे बालो वाला
८५२ ऊर्ध्वरूपाय स्वाहा	ऊंचे रूप वाला
८५३ ऊर्ध्वरेतसे स्वाहा	तेज जिसका फैल रहा है
८५४ ऊर्ध्वसिंहाय स्वाहा	ऊर्ध्वरूप सिंह
८५५ ऊर्ध्ववाहवे स्वाहा	ऊंचे हाथ वाला
८५६ परप्रध्वंसकायै स्वाहा	दूसरों को नष्ट करने वाला
८५७ शंखचक्रंधराय स्वाहा	शंख चक्र धारण करनेवाला
८५८ गदापद्मधराय स्वाहा	गदापद्म धारण करने वाला
८५९ पंचबाण धराय स्वाहा	पांचवाण धारण करने वाला
८६० कामेश्वराय स्वाहा	काम शक्ति के ईश्वर
८६१ कामाय स्वाहा	काम शक्ति संचालक
८६२ कामपालाय स्वाहा	काम शक्ति के पालक
८६३ कामिने स्वाहा	कामी
८६४ कामविहाराय स्वाहा	काम विहार करने वाला
८६५ कामरूपधराय स्वाहा	काम देव कारूप धारण करने वाला
८६६ सोमसूर्याग्नि नेत्राय स्वाहा	चन्द्र सूर्य अग्नि नेत्र धारण करने वाला
८६७ सोमपाय स्वाहा	अमृत रूप
८६८ सोमाय स्वाहा	चन्द्रमा

८६९ वामदेवाय स्वाहा	महादेव
८७० सामस्वनाय स्वाहा	साम शब्द
८७१ सौम्याय स्वाहा	शान्तरूप
८७२ भक्तिगम्याय स्वाहा	भक्ति में तत्पर
८७३ कूष्मांण्डाय स्वाहा	गण देवता
८७४ गणनाथाय स्वाहा	गणेश रूप
८७५ सर्वश्रेयकराय स्वाहा	सबके लिये कल्याणकारी
८७६ भीष्माय स्वाहा	भीषण
८७७ भीषदाय स्वाहा	विकराल (भयदाता)
८७८ भीमविक्रमणाय स्वाहा	महान बलशाली
८७९ मृगग्रीवाय स्वाहा	शेर के गले के रूप
८८० ज्तिाय स्वाहा	जीतने वाला
८८१ जितकारिणे स्वाहा	जीत कराने वाला
८८२ जटिने स्वाहा	शिव समान जटा धारण करने वाला
८८३ जामदग्न्याय स्वाहा	परशुराम के पिता रूप
८८४ जातवेदसे स्वाहा	अग्नि समान रूप
८८५ जपाकुसुमवर्णा स्वाहा	गुड़हल के फूल के वर्णसमान
८८६ जप्याय स्वाहा	जपने योग्य
८८७ जपिताय स्वाहा	जपा जाने वाला
८८८ जरायुजाय स्वाहा	गर्भ से उत्पन्न
८८९ अण्डजाय स्वाहा	अण्डे से पैदा होने वाले
८९० स्वेदजाय स्वाहा	पसीने से पैदा होने वाले
८९१ उद्भिजाय स्वाहा	पृथ्वी से उत्पन्न
८९२ जनार्दनाय स्वाहा	दुष्टों को नष्ट करने वाला
८९३ रामाय स्वाहा	योगियों को रमण कराने वाले

८९४ जाह्नवीजनकाय स्वाहा	भागीरथी के जन्मदाता
८९५ जराजन्मदिदूराय स्वाहा	जन्म मृत्यु से परे
८९६ प्रद्युम्नाय स्वाहा	कामदेव के समान
८९७ प्रमोदिने स्वाहा	आनंद देने वाला
८९८ जिह्वारौद्राय स्वाहा	रौद्रजिह्वा धारण करने वाला
८९९ रुद्राय स्वाहा	दुष्टो को रुलाने वाला
९०० विरभद्राय स्वाहा	शक्तिशाली
९०१ चिद्रूपाय स्वाहा	चैतन्य रूप परमात्मा
९०२ समुद्राय स्वाहा	समुद्र रूप
९०३ कद्रुदाय स्वाहा	भूरे रंग का
९०४ प्रचेतसे स्वाहा	वरुण
९०५ इन्द्रियाय स्वाहा	वाह्यवस्तुओ का ज्ञान
९०६ इन्द्रियज्ञाय स्वाहा	वीर्यदाता
९०७ इन्द्रानुजाय स्वाहा	इन्द्र के भाई
९०८ अतीन्द्रियाय स्वाहा	वाह्य वस्तुओ का अत्यन्तज्ञानी
९०९ स्तराय स्वाहा	परत स्वरूप
९१० इन्दिरापतये स्वाहा	लक्ष्मी के पति
९११ ईशानाय स्वाहा	महादेव
९१२ ईडयाय स्वाहा	स्तुति योग्य
९१३ ईशिताय स्वाहा	प्रभुता रूप
९१४ इनाय स्वाहा	सूर्यरूप
९१५ व्योमात्मने स्वाहा	आकाश रूपी आत्मा धारण करने वाला
९१६ व्योम्ने स्वाहा	आकाश रूप
९१७ व्योमकेशिने स्वाहा	जिसके केश गगन तक है
९१८ व्योमाधाराय स्वाहा	आकाश के आधार

११९ व्योमवक्राय स्वाहा	आकाश के समान उज्जवल
१२० असुरधातिने स्वाहा	राक्षसों के नाशक
१२१ व्योमदंष्ट्राय स्वाहा	आकाश समान दांत वाला
१२२ व्योमवासाय स्वाहा	आकाश में वास करने वाला
१२३ सुकुमाराय स्वाहा	सुन्दर कुमार रूप
१२४ रामाय स्वाहा	हर्षदायक
१२५ शुभाचाराय स्वाहा	शुभ आचरण धारण करने वाला
१२६ विश्वाय स्वाहा	विश्व के कारण
१२७ विश्वरूपाय स्वाहा	संसार के समान स्वरूप
१२८ विश्वात्मकाय स्वाहा	संसार में जीव रूप
१२९ ज्ञानात्मकाय स्वाहा	बुद्धिरूपी शरीर धारण करने वाला
१३० ज्ञानाय स्वाहा	ज्ञान (बुद्धि) रूप
१३१ विश्वेशाय स्वाहा	संसार के स्वामी
१३२ परात्मने स्वाहा	मुक्त पुरुषों की परमगति
१३३ एकात्मने स्वाहा	एक जीव रूप
१३४ द्वादशात्मने स्वाहा	बारह जीव रूप
१३५ चतुर्विंशतिरूपाय स्वाहा	चौबीस रूप
१३६ पंचविंशतिमूर्तये स्वाहा	पच्चीस रूप
१३७ षड्विंशकात्मने स्वाहा	छब्बीस रूप
१३८ शप्तविंशतिकात्मने स्वाहा	सत्ताइस रूप
१३९ धर्मार्थ काम मोक्षाय स्वाहा	धर्म अर्थ काम मोक्ष देनवाला
१४० विरक्ताय स्वाहा	त्यागी
१४१ भावशुद्धाय स्वाहा	शुद्ध विचार
१४२ सिद्धाय स्वाहा	तपस्वी

१४३ साध्याय स्वाहा	सरल
१४४ शरभाय स्वाहा	हाथी के बच्चे के समान
१४५ प्रबोधाय स्वाहा	पूर्ण ज्ञानी
१४६ सुबोधाय स्वाहा	सुन्दर ज्ञानी
१४७ बुद्धिप्रियाय स्वाहा	बुद्धि के प्रिय
१४८ स्निग्धाय स्वाहा	प्रेमयुक्त
१४९ विदग्धाय स्वाहा	विद्वान (चालाक)
१५० मुग्धाय स्वाहा	मोहित
१५१ मुनये स्वाहा	तपस्वी
१५२ प्रियंवदाय स्वाहा	प्रिय बोलने वाला
१५३ श्रव्याय स्वाहा	सुनने योग्य
१५४ श्रुकस्त्रुवाय स्वाहा	श्रुकश्रुव रूप
१५५ श्रिताय स्वाहा	सम्मानित
१५६ गृहेशाय स्वाहा	गृह के स्वामी
१५७ महेशाय स्वाहा	महादेव रूप
१५८ ब्रह्मेशाय स्वाहा	ब्रह्मा रूप
१५९ श्रीधराय स्वाहा	लक्ष्मी को वक्ष में धारण करने वाले
१६० सुतीर्थाय स्वाहा	सुन्दर पवित्र स्थान
१६१ हयग्रीवाय स्वाहा	विष्णु के अवतार हय ग्रीव रूप
१६२ उग्राय स्वाहा	तीक्ष्ण रूप
१६३ उग्रवेगाय स्वाहा	तीक्ष्ण वेग
१६४ उग्रकर्मरताय स्वाहा	तीक्ष्णकर्म में रत
१६५ उग्रनेत्राय स्वाहा	तीक्ष्ण नेत्र
१६६ व्यग्राय स्वाहा	विकल

९६७ समग्राय स्वाहा	पूर्ण
९६८ गुणशालिने स्वाहा	गुणों का स्थान
९६९ बालग्रहविनाशाय स्वाहा	बालको के विनाशक ग्रहों के नाशक
९७० पिशाचग्रहघातिने स्वाहा	पिशाच ग्रहों के नाशक
९७१ दुष्टग्रह निहन्त्रे स्वाहा	दुष्ट ग्रहों के नाशक
९७२ निग्रहानुग्रहाय स्वाहा	दमन दया करने वाला
९७३ वृषध्वजाय स्वाहा	वृष की ध्वजा वाला
९७४ वृष्ण्याय स्वाहा	श्री कृष्ण
९७५ वृषाय स्वाहा	वृषरूप
९७६ वृषभाय स्वाहा	श्रेष्ठ पुरुष
९७७ उग्रश्रवाय स्वाहा	तीक्ष्ण कान वाला
९७८ शांताय स्वाहा	सौम्य रूप
९७९ श्रुतिधराय स्वाहा	श्रुति को धारण करने वाले
९८० देवदेवेशाय स्वाहा	देवताओं के स्वामी
९८१ मधुसूदनाय स्वाहा	भगवान मधुसूदन
९८२ पुण्डरीकाक्षाय स्वाहा	विष्णु भगवान
९८३ दुरितक्षयाय स्वाहा	पाप नष्ट करने वाला
९८४ करुणाय स्वाहा	करूण रूप
९८५ समितिंजयाय स्वाहा	युद्ध में जय करने वाला
९८६ नरसिंहाय स्वाहा	नरसिंह
९८७ गरुड़ध्वजाय स्वाहा	गरुड़ की ध्वजा वाला
९८८ यज्ञनेत्रे स्वाहा	याग आदि के नेत्र रूप
९८९ काशध्वजाय स्वाहा	काश को ध्वजा में धारण करने वाला
९९० जयध्वजाय स्वाहा	जय रूपी ध्वजा धारण करने वाले

९९१ अग्निनेत्राय स्वाहा	अग्नी के समान नेत्र
९९२ ह्यमरप्रियाय स्वाहा	युद्धप्रिय
९९३ महानेत्राय स्वाहा	दिव्य नेत्र धारण करने वाला
९९४ भक्तवत्सलाय स्वाहा	भक्तों के रक्षक
९९५ धर्मनेत्राय स्वाहा	धर्मरूपी नेत्र धारण करनेवाले
९९६ करुणाकरपुण्यनेत्रे स्वाहा	करुणा धारण करने वाले पवित्र नेत्र रूप
९९७ अभीष्टदाय स्वाहा	इच्छित देने वाला
९९८ जयसिंह रूपाय स्वाहा	जय देने वाले सिंह रूप
९९९ रण सिंह रूपाय स्वाहा	रण में विजय देने वाले सिंहरूप
१०००नरसिंह रूपाय स्वाहा	नर-सिंह रूप धारण करनेवाले

।।इति नृसिंह सहस्रनामावलि।।

॥ आरती श्री नृसिंह जी की ॥

जय नरसिंह हरे हरिजय नर सिंह हरे।
भक्त जनों के कारण अद्भुत रूप धरे॥ जय नर०॥
सिंह रूपधर अपना निज जन दुख हर्ता॥ स्वामि०
खम्ब मध्य प्रकट भये सेवक सुखकर्ता॥ जय नर०
नर और सिंह रूप धर प्रकट भये स्वामी॥ स्वामि०
निर्भय हुए भक्त जन भय पाये कामी॥ जय नर०
प्रकट भये प्रह्लाद के कारण सबको दर्श दिया॥ स्वामि०।
नर और हरि बनकर संकट दूर किया॥ जय नर०॥
दैहिक दैविक भौतिक पाप कटे सारे॥ स्वामि०।
रक्षक निज भक्तन के दानव दल मारे॥ जय नर०॥
शरण रहस्य प्रदाता भव बन्धन हारी॥ स्वामि०॥
दुखहारी सुखकारी गदा चक्र धारी॥ जय नर०॥
अक्षय भक्ति दयार्णव हम सबको दीजे॥ स्वामि०।
पाप ताप हर नर हरि निज जन कर लीजै॥ जय नर०॥
"शिव स्वरूप" शरणागत अतिमल अघहारी॥ स्वामि०।
पद सरोज रज चाहत नर हरि तनु धारी॥ जय नर०।
नर सिंह प्रभु की आरती जो कोई नर गावे॥ स्वामि०।
हर अज्ञान मोह तम मनवांछित फल पावै॥ ॐ जय०॥

●●●

॥कष्ट निवारण हेतु मंत्र॥

१. पीलिया झाड़ने का मंत्र -

ॐ नमो वीर वैताल असराल नारसिंह देव खादी तुषादि पीलियांक मिटादी कारै झारै पीलिया रहे न नेक निशान जो कहिं रह जाय तो हनुमन्त की आन मेरी भक्ति गुरु की शक्ति, फुरोमन्त्र इश्वरो वाचा॥

प्रयोग विधि-कांसे के कटोरे में तेल भरकर रोगी के सिर के ऊपर रखे हाथ में दुर्वा या कुश लेकर मंत्र पढ़ते हुए तेल में घुमावे जब तेल पीला हो जाये तब सिर के कटोरे को नीचे उतार लेवे ऐसा तीन दिन रवि मंगल शनिवार को करने से पीलिया रोग दूर होता है।

२. सिर दर्द दूर करने का मंत्र-

ॐ निशिनीह रोई बदकर मेघ गरजहि निसु न दीपक हलुधर फुफुनिबेरी फूनि डमरू न बज निशुनहि कलह निन्न पुटु काच मई

प्रयोग विधिं-प्रयोग समय २१ बार मंत्र पढ़कर रोगी को फूंक मार देने से सरदर्द ठीक हो जाता है।

३. दांत दर्द दूर करने का मंत्र-

ॐ अग्नि बांधौ अग्नीश्वर बांधौ सौलाल विकराल विहाय तो महादेव की आन, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र इश्वरो वाचा॥

प्रयोग विधि-दूर्वा लेकर इक्कीस बार मंत्र पढ़कर झार देने से दांत का दर्द निश्चित दूर होता है।

४. मृगी रोग नाशक मंत्र-

ॐ हाल हलं स्मगत मण्डिका पुटिका श्री राम जी फूंके मृगी रोग सूखे। ॐ ठः ठः॥

प्रयोग विधि-इस मंत्र को भूर्ज पत्र पर लिखकर ताम्बे के यंत्र में भर लेवे तथा यंत्र को गले में धारण करें इसको बांधने से मृगी रोग दूर होता है।

५. पशुओं के खुरपका रोग दूर करने का मंत्र-

ॐ अर्जुन फाल्गुन जिष्णु किरीटी श्वेत वाहन। विभत्सुर्विजय कृष्ण सव्यसाची धनंजय॥

प्रयोग विधि-इस मंत्र को भूर्जपत्र पर लिख लेवे, खुरपका रोग होने की जब संभावना हो तो इस यंत्र को गौशाला के दरवाजे के ऊपर बांध देवे खुरपका रोग पशुओं को नहीं होगा।

६. सांप का विष उतारने का मंत्र-

विष्णु र्जिष्णुर्वष्ट्कारो दितिजो दैत्य सूदनः।
फणसहस्त्र विलसद्धूमंडल अहस्कर॥
सर्पराजो विषि वैद्यो भानुर्भानु सहस्रधृक्।
रजताद्रि समाकारोऽनंतो नंतशिरा प्रभुः॥

प्रयोग विधि-इस सर्पराज मंत्र से इक्कीस बार पीड़ित व्यक्ति के जहां पर सर्प ने काटा हो मोर पंख या गरुड़ पंख से झाड़े तीन दिन में पूर्ण विष उतर जायेगा। सांप को देखने पर भी यदि इस मंत्र को मन में पढ़े तो सांप भाग जाता है।

७. सुख से प्रसव होने का मंत्र-

हिमवदुत्तरे कूले सुरसा नाम राक्षसी।
तस्या नूपुर शब्देन विशल्या गुर्विणी भवेत्।
ऐं ह्रीं भगवति! भगमालिनि चल चल भ्रामय पुष्पं विकाशय विकाशय स्वाहा। ॐ नमो भगवते मकर केतवे पुष्प धन्विने प्रतिचालित सकल सुरासुर चित्ताय युवति भगवासिने ह्रीं गर्भं चालय चालय स्वाहा।

प्रयोग विधि-इन मंत्रों से इक्कीस बार दूध अभिमंत्रित कर गर्भिणी को पिलावे सुख पूर्वक प्रसव होगा।

८. एकाह्निक त्र्याहिक चातुर्थिक ज्वर नाशक मंत्र-

ॐ ह्रां ह्रीं क्लीं सुग्रीवाय महाबल पराक्रमाय सूर्य पुत्रायामिततेजसे एकाहिकद्व्यहिक त्र्याहिक चातुर्थिक महाज्वर भूतज्वर भयज्वर क्रोधज्वर वेलाज्वर प्रभृति ज्वराणां बन्ध बन्ध ह्रां ह्रीं ह्रूं फट् स्वाहा।। नास्ति ज्वरः।।

प्रयोग विधि-इस मंत्र से बारी से आने वाले ज्वर नष्ट होते हैं ज्वर ग्रस्त व्यक्ति के सिर से पैर तक दूर्वा से मंत्र २१ बार पढ्कर झाड़े। तीन दिन में ज्वर शांत हो जायेगा। रोगी को गुड़ अदरख के साथ खाने को दे अथवा गुड़ के साथ त्रिफला का क्वाथ तीन दिन पिलावें।

९. सम्पूर्ण बाधानाशक मंत्र-

ॐ नमो नर सिंहाय हिरण्य कशिपोर्वक्षः स्थल विदारणाय त्रिभुवनव्यापकाय भूतायप्रति-सारणाय डाकिनी कुलोमूलनाय समस्त दोषान्

हर-हर विसर-विसर बल-बल कम्पकम्पमथ हुं हुं हुं फट् फट् चट् चट् एहि एहि रुद्रा ज्ञापयति स्वाहा।। (रस रत्नाकर)

प्रयोग विधिः- भूत प्रेत डाकिनी शाकिनी से ग्रसित मनुष्य या पशु को दूब या चाकू से २१ बार झाड़े सम्पूर्ण दोष दूर होगा।

१०. बच्चों की नजर दूर करने का यंत्र-

८	१	५३	४८
४९	५२	४	५
२	७	४७	५४
५२	५०	६	३

प्रयोग विधि- इस यंत्र को भूर्ज पत्र पर अष्ट गन्ध से लिख लेवे रवि, मंगलवार को बालक के गले में धारण करे तो बालक का नजरदोष, रात्रि रोदन दूर होता है इस यंत्र से डायन का भय भी नहीं रहता।

११. कान दर्द दूर करने का मंत्र-

ॐ आसमीन नगोरु वन्ही कर्महीन न जायते महावीर हनुमान की दुहाई जो रहे कान में पीर

अंजनी के कुमार वायु के पुत्र महावीर की दुहाई जो रहे कान में पीर।

प्रयोग विधि–11 बार कान के रोगी के कान में मंत्र उच्चारण कर फूंक मारे तीन दिन मंत्र पढ़े दर्द दूर होगा।

उपरोक्त मंत्र को प्रयोग करने वाला तथा प्रयोग कराने वाला विश्वास करे तभी मंत्र सिद्धि होगी।

।।इति पं. "शिव स्वरुप" याज्ञिक संग्रहित मंत्र प्रयोग।।

पुनर्निवेदन

विद्वतवृन्द नर धर्मानुसार गलतियां तो हो ही जाती हैं। पुस्तक में गलतियों को सुधारकर मुझे सूचित करने की कृपा करें, दूसरी आवृत्ति में भूल सुधार किया जायेगा तथा किसी भी यज्ञ, अनुष्ठान, पुरश्चरण, कर्मकाण्ड, महामृत्युंजय जप आदि के लिए अथवा परामर्श के लिये या सुझाव हेतु पत्र द्वारा या टेलीफोन द्वारा आप मुझसे सम्पर्क कर सकते हैं। आपके द्वारा प्राप्त सुझावों से ही मैं पुनः अन्य पुस्तकों को प्रकाशित करने के लिए तत्पर होता हूँ। आपका अपना ही-

पं० शिवस्वरूप 'यज्ञिक'
ग्राम भटवाड़ी (टकनौर)
जिला-उत्तरकाशी (उत्तरांचल प्रदेश)

॥ श्री नृसिंहाय नमः॥

नरोनृसिंहं तमन्त विक्रमं
सुरासुरैरर्चित पादपङ्कजम्।
संस्थाप्य भक्त्या विधिवच्च्य पूज्येत्
प्रयाति साक्षात् परमेश्वरं हरिम्॥

यदि मनुष्य उन अनन्त विक्रमशाली भगवान नरसिंह की जिनके चरण कमलों की देवता तथा असुर, दोनों ही पूजा करते हैं विधिपूर्वक स्थापना करके भक्तिपूर्वक पूजा करके साक्षात् परमेश्वर भगवान् विष्णु को प्राप्त कर लेता है।

(नृसिंह पुराण)

श्री नृसिंह चुतुर्दशी

व्रत कथा

प्रह्लादो ज्ञानिनांश्रेष्ठः पालयन् राज्यमुत्तमम्।।
एकाकी च तदुत्सङ्गे प्रियं वचनमब्रवीत्।।१।।

भगवान नरसिंह की गोद में एकाकी बैठे हुए अपने राज्य का पालन करने वाले ज्ञानियों में श्रेष्ठ भक्त शिरोमणी श्री प्रहलाद जी कहने लगे।

प्रह्लाद उवाच।। नमस्ते भगवन्विष्णो नृसिंहरूपिणे नमः।।
त्वद्भक्तोऽहं सुरेशैकं त्वां पृच्छामि तु तत्त्वतः।।२।।

हे नरसिंह रूपी भगवान विष्णु! आपको नमस्कार है। हे सुरेश मैं आपका भक्त हूं आपसे जानना चाहता हूँ।

स्वामिंस्त्वयि ममाभिन्ना भक्तिर्जाता त्वनेकधा।।
कथं च ते प्रियो जातः कारणं मे वद प्रभो।।३।।

मेरी आपमे अभिन्न भक्ति है। मैं आपको इतना प्रिय कैसे हो गया। कृपा कर यह आप मुझे बतायें।

नृसिंह उवाच॥ कथयामि महाप्राज्ञ शृणुष्वैकाग्रमानसः॥
भक्तेर्यत्कारणं वत्स प्रियत्वस्य च कारणम्॥४॥

भगवान नृसिंह बोले हे महाप्राज्ञ-एकाग्रता से सुनो जो तुम्हारे भक्ति और प्रियत्व का कारण है।

पुजा काले ह्यभूद्विप्रा किञ्चित्त्वं नाप्यधीतवान्॥
नाम्ना त्वं वासुदेवो हि वेश्यासंसक्तमानसः॥५॥

तुम पूर्व जन्म में अनपढ़ और वेश्यागामी वासुदेव नाम वाले ब्राह्मण थे।

तस्मिञ्जातु न चैव त्वं चकर्थ सुकृतं कियत्॥
कृतवान्मद्व्रतं चैकं वेश्यासङ्गतिलालसः॥६॥

उस जन्म में भी तुमने कोई अच्छा कर्म नहीं किया था। किसी वेश्या की कामना से मेरा एक व्रत किया था।

मद्व्रतस्य प्रभावेण भक्तिर्जाता तवानघ॥ प्रह्लाद उवाच॥
श्रीनृसिंहोच्यतां तावत्कस्य पुत्रश्च किं व्रतम्॥७॥

मेरे उसी व्रत के कारण तुममे मेरी भक्ति उत्पन्न हुई। प्रहलाद जी बोले- हे नृसिंह जी मैं किसका पुत्र था और मैंने क्या व्रत किया था?

वेश्यायां वर्तमानेन कथं तच्च कृतं मया॥
येन त्वत्प्रीतिमापन्नो वक्तुमर्हसि सांप्रतम्॥८॥

वेश्यागामी होने पर भी मैंने आपका व्रत किया और आपकी कृपा को प्राप्त किया, यह मुझे बतलाईये कि वह कौन सा व्रत था।

नृसिंह उवाच॥ पुराऽवन्तीपुरे ह्यासीद्ब्राह्मणो वेदपारगः॥
तस्य नाम सुशर्मेति बहुलोकेषु विश्रुतः॥९॥

श्रीनृसिंह भगवान बोले- पहले अवन्तिपुर नामक नगर में वेदों एवं वेदांगों का विद्वान सुशर्मा नामक ब्राह्मण रहता था।

नित्यहोमक्रियां चैव विदधाति द्विजोत्तमः॥
ब्राह्मक्रिया सुनियतं सर्वासु किल तत्परः॥१०॥

वह श्रेष्ठ ब्राह्मण नित्य अग्नि क्षेत्र करता था तथा ब्राह्मणों की सब क्रियायें करता था॥

अग्निष्टोमादिभिर्यज्ञैरिष्टाः सर्वे सुरोत्तमाः॥
तस्य भार्या सुशीलाभूद्विख्याता भुवनत्रये॥११॥

उसने अग्निष्टोम आदि यज्ञों से देवताओं को प्रसन्न किया था उसके जैसी ही सुशील एवं प्रसिद्ध उसकी पत्नी थी।

पतिव्रता सदाचारा पतिभक्तिपरायणा॥
जज्ञिरेऽस्यां सुताः पञ्च तस्माद्द्विजवरात्तथा॥१२॥

वह पति भक्ति में तत्पर, सदाचारिणी एवं पतिव्रता थी अपनी पत्नी के द्वारा सुशर्मा ब्राह्मण ने पांच पुत्र उत्पन्न किये।

सदाचारेषु विद्वांसः पितृभक्तिपरायणाः॥
तेषां मध्ये कनिष्ठस्त्वं वेश्यासङ्गतितत्परः॥१३॥

वे पुत्र सदाचारी विद्वान तथा पितृ भक्त थे। किन्तु उनमें तुम सबसे छोटे एवं वेश्यागामी थे।

तया निषेध्यमानेन सुरापानं त्वया कृतम्॥
सुवर्णं चाप्यपहृतं चौरैः सार्धं त्वया बहू॥१४॥

उस वेश्या के मना करने पर तुम शराब पीते थे। चोरों के साथ चोरी के द्वारा तुमने बहुत सा सोना चुराया था।

विलासिन्या समं चैव त्वया चीर्णमघं बहु॥
एकदा तद्गृहे चासीन्म मन्कलिस्त्वया सह

उस वेश्या के साथ मिलकर तुमने अनेक पाप किये। एक बार उसके घर में ही उससे कलह हुई।

तेन कलहभावेन व्रतमेतत्त्वया कृतम्॥
अज्ञानान्मद्व्रतं जातं व्रतानामुत्तमं हि तत्॥१६॥

उस कलह भाव में तुम्हारे द्वारा एक व्रत पूरा हो गया अज्ञान में किया हुआ वह व्रत अत्यन्त उत्तम था।

तस्यां विहारगयोगेन रात्रौ, जागरणं कृतम्।।
वेश्याया वल्लभं किंचितप्रजातं न त्वया सह।।१७।।

उस वेश्या के न मिलने कारण तुमने रात्रि में जागरण किया उस व्रत के एवं जागरण के कारण उस वेश्या को तुम अत्यन्त प्रिय हुये।

रात्रौ जागरणं चीर्णं त्यक्तं भाग्यमनेकधा।।
व्रतेनानेन चीर्णेन मोदन्ति विदि देवता:।।१८।।

वह वेश्या अनेक भोगों को छोड़कर जागती रही। इस व्रत से तो स्वर्ग में रहने वाले देवता भी प्रसन्न हो जाते हैं। वह तो मात्र वेश्या ही थी?

सृष्टयर्थे च पुरा ब्रह्मा चक्रे ह्ययेतदनुत्तमम्।।
मदूव्रतस्य प्रभावेण निर्मितं सचराचरम्।।१९।।

सृष्टि के रचने के लिए ब्रह्मा ने इस व्रत को किया था इसी के प्रभाव में वह चर-अचर को बना सके।

ईश्वरेण पुरा चीर्णं वधार्थं त्रिपुरस्य च।।
माहात्म्येन व्रतस्याशु त्रिपुरस्तु निपातित:।।२०।।

त्रिपुरासुर का वध करने के लिये शिवजी ने भी इसी व्रत को किया था इसी के कारण वह त्रिपुरासुर का वध कर सके।

अन्यैश्च बहुभिर्देवैर्ऋषिभिश्च पुरानघ।
राजभिश्च महाप्राज्ञैर्विहितं व्रतमुत्तमम्।।२१।।

हे महाभाग और भी अनेक देवताओं ऋषियों एवं राजाओं ने इस व्रत को किया था।

एतद्व्रतप्रभावेण सर्वे सिद्धिमुपागताः।।
वेश्यापि मत्प्रिया जाता त्रैलोक्ये सुखचारिणी।।२२।।

इसी व्रत के प्रभाव से वह सब सिद्धियों को प्राप्त हुये। वह वेश्या भी मेरी प्रिय हुई।

ईदृशं मद्व्रतं वत्स त्रैलोक्ये तु सुविश्रुतम्।।
कलहेन विलासिन्या व्रतमेतदुपस्थितम्।।२३।।

इस प्रकार हे पुत्र मेरा वह व्रत संसार में प्रसिद्ध है यही व्रत विलासिनी से कलह के कारण हो गया।

प्रह्लाद तेन ते भक्तिर्मयि जाता ह्यनुत्तमा।।
धूर्तया च विलासिन्या ज्ञात्वा व्रतदिनं मम।।२४।।

हे प्रहलाद् उसी व्रत के कारण मुझमें तेरी यह

अपूर्व भक्ति उत्पन्न हुई। वह धूर्त और विलासिनी मेरे व्रत कठिन जानकर।

कलहश्च कृतो येन मद्व्रतं च कृतं भवेत्॥
सा वेश्या त्वप्सरा जाता भुक्त्वा भोगाननेकशः॥२५॥

तुम्हारे से लड़ाई करके मेरा व्रत कर लिया। इस व्रत के प्रभाव वह वेश्या अनेक योगों को भोगकर अप्सरा हो गयी।

मुक्ता कर्मविलीना तु त्वं प्रह्लाद विशस्व माम्॥
कार्यार्थं च भवानास्ते मच्छरीरपृथक्तया॥२६॥

कर्मबन्धन से मुक्त होकर वह मुझमें विलीन हो गयी। आप मेरे शरीर से पृथक होकर कार्य के लिए रहते हैं।

विधाय सर्वकार्याणि शीघ्रं चैव गमिष्यसि॥
इदं व्रतमवश्यं ये प्रकरिष्यन्ति मानवाः॥२७॥

आप सब कार्य करके शीघ्र चले आयेगे। इस प्रकार मानव इस व्रत को जान अवश्य करेंगे।

न तेषां पुनरावृत्तिर्मत्तः कल्पशतैरपि॥
अपुत्रौ लभते पुत्रान्मद्भक्तश्च सुवर्चसः॥२८॥

उनका सौ कल्पों तक पुनर्जन्म नहीं होगा। मेरा भक्त वर्चस्वी पुत्रों को प्राप्त करेगा।

दरिद्रो लभते लक्ष्मीं धनदस्य च यादृशी॥
तेजःकामो लभेत्तेजो राज्येच्छू राज्यमुत्तमम्॥२९॥

मेरा दरिद्री भक्त कुवेर के समान धन प्राप्त करता है। वीरता को चाहने वाला वीरता के तथा राज्य चाहने वाला राज्य प्राप्त करता है।

आयुःकामो लभेदायुर्यादृशं च शिवस्य हि॥
स्त्रीणां व्रतमिदं साधुपुत्रदं भाग्यदं तथा॥३०॥

आयु चाहने वाला शिव के समान आयु प्राप्त करता है। स्त्रियों को यह व्रत आज्ञाकारी पुत्र एवं सौभाग्य प्रदान करता है।

अवैधव्यकरं तासां पुत्रशोकविनाशनम्॥
धनधान्यकरं चैव जातिश्रेष्ठ्यकरं शुभम्॥३१॥

व्रत को करने वाली स्त्री कभी विधवा नहीं होती उसको पुत्र शोक नहीं होता। यह व्रत अन्न, धन प्रदान करता है तथा जाति में अग्रणी बनाता है।

सार्वभौमसुखं तासां दिव्यं सौख्यं भवेत्ततः॥
स्त्रियों वा पुरुषाश्चापि कुर्वन्ति व्रतमुत्तमम्॥३२॥

उसे संसार के सारे सुख प्राप्त होते हैं। पश्चात दिव्य सुखों को प्राप्त करता है। जो स्त्री अथवा पुरुष इस उत्तम व्रत को करते हैं।

तेभ्योऽहं प्रददे सौख्यं भुक्तिमुक्तिसमन्वितम्।।
बहुनोक्तेन किं वत्स व्रतस्यास्य फलं महत्।।३३।।

मैं उन्हें (स्त्री अथवा पुरुष) इस संसार के सारे सुख देकर पश्चात मुक्ति प्रदान करता हूँ। अधिक कहने से क्या इस व्रत का फल अनन्त है।

मद्व्रतस्य फलं वक्तु नाहं शक्तो न शंकरः।।
ब्रह्मा चतुर्भिर्वक्त्रैश्च न लभेन्महिमावधिम्।।३४।।

इस व्रत के फल को कहने की शक्ति न मुझमें है न शिव शंकर में न चार मुख वाले ब्रह्मा ही इसका प्रभाव बता सकते हैं।

प्रह्लाद उवाच।। भगवंस्त्वत्प्रसादेन श्रुतं व्रतमनुत्तमम्।।
व्रतस्यास्य फलं साधु त्वयि मे भक्तिकारणम्।।३५।।

प्रहलाद जी बोले, भगवन आपकी कृपा से यह उत्तम व्रत मैंने सुना इसी व्रत के प्रभाव से मुझे आपकी भक्ति प्राप्त हुई।

स्वामिञ्जातं विशेषेण त्वत्तः पापनिकृन्तनम्।।
अधुना श्रोतुमिच्छामि व्रतस्यास्य विधिं परम्।।३६।।

हे स्वामी आपके द्वारा पापों को नाश करने वाले इस व्रत की तारने की सर्वश्रेष्ठ विधि सुनना चाहता हूँ।

कस्मिन्मासे भवेदेतत्कस्मिन्वा तिथिवासरे।।
एतद्विस्तरतो देव वक्तुमर्हसि सांप्रतम्।।३७।।

हे देव यह व्रत किस मास की तिथि अथवा दिन होता है। यह आप मुझे बतायें।

विधिना येन वे स्वामिन् समग्रफलभुग्भवेत्।।
ममोपरि कृपां कृत्वा ब्रूहि त्वं सकलं प्रभो।।३८।।

किस विधि से करने पर इसका समस्त फल प्राप्त हो जाये उन सारी विधियों को मुझे बता दीजिए।

नृसिंह उवाच।। साधुसाधु महाभाग व्रतस्यास्य विधिं परम्।। सर्वं कथयतो मेऽद्य त्वमेकाग्रमनाः शृणु।।३९।।

भगवान नृसिंह बोले- हे महाभाग मैं तुम्हें इस व्रत की सम्पूर्ण विधि कहता हूँ। तुम एकाग्र मन से सुनो।

वैशाखशुक्लपक्षे तु चतुर्दश्यां समाचरेत्।।
मज्जन्मसंभवं पुण्यं व्रतं पापप्रणाशनम्।।४०।।

सम्पूर्ण पापों को नष्ट करने वाला वैशाख शुक्ल चतुर्दशी को यह व्रत करें।।४०।।

वर्षेवर्षे तु कर्तव्यं मम संतुष्टिकारकम्।।
महापुण्यमिदं श्रेष्ठं मानुषैर्भवभीरुभिः।।४१।।

संसार के दुखों से भयभीत मनुष्यों को मुझे संतुष्ट करने वाला यह व्रत प्रति वर्ष करना चाहिए।

तेनैव क्रियमाणेन सहस्त्रद्वादशीफलम्।।
जायते तद्व्रते वच्मि मानुषाणां महात्मनाम्।।४२।।

इसके करने के महात्मा मनुष्यों को एक हजार द्वादशी व्रत करने का पुण्य फल प्राप्त होता है।

स्वाती नक्षत्रयोगेन शनिवारेण संयुते।।
सिद्धियोगस्य संयोगे वणिजे करणे तथा।।४३।।

स्वाति नक्षत्र शनिवार सिद्धियोग वणिजकरण।

पुण्यसौभाग्ययोगेन लभ्यते दैवयोगतः।। सर्वैरेतैस्तु संयुक्तं हत्याकोटिविनाशनम्। एतदन्यतरे योगे तद्दिनं पापनाशनम्।। केवलेऽपि च कर्तव्यं मद्दिने व्रतमुत्तमम्।।४४-४५।।

पुण्य सौभाग्य को देने वाला यह योग दैवयोग से ही प्राप्त होता है। यह योग सहस्त्रों हत्याओं के पाप को नष्ट करने वाला है। इस योग से रहित भी यह दिन पापों को नष्ट करने वाला है। केवल मेरे दिन ही इस व्रत को कर लेना चाहिए।

अन्यथा नरकं याति यावच्चन्द्रदिवाकरौ।।
यथा यथा प्रवृत्तिः स्यात्पातकस्य कलौ युगे।।४६।।

यह व्रत नहीं करने पर जब तक सूर्य चन्द्र हैं तब तक मनुष्य नरक में रहता है। कलियुग में पाप प्रवृत्ति अधिक बढ़ जाती है। निश्चय ही सारे धर्म नष्ट हो जाते हैं। इस व्रत के करने से दुष्टों में भी मेरी भक्ति जागृत हो जाती है।

तथा तथा प्रणश्यन्ति सर्वे धर्मा न संशयः।।
एतद्व्रतप्रभावेण मद्भक्तिः स्याद्दुरात्मनाम्
विचार्येत्थं प्रकर्तव्यं माधवे मासि तद्व्रतम्।।
नियमश्च प्रकर्तव्यो दन्तधावनपूर्वकम्।।४७-४८।।

इस व्रत को माधव मास में (अधिक मास) आवश्य करना चाहिए दातुन आदि भी नियमपूर्वक करनी चाहिए।

श्री नृसिंह महोग्रस्त्वं दयां कृत्वा ममोपरि।।
अद्याहं ते विधास्यामि व्रतं निर्विघ्नतां नय।।४९।।

(इति नियममंत्रः)

हे नृसिंह जी आप बहुत उग्र हैं। मैं आपका व्रत करता हूँ कृपया आप मेरे व्रत को पूर्ण कराये।

व्रतस्थेन न कर्त्तव्या सङ्गतिः पापिभिः सह।।
मिथ्यालापो न कर्तव्यः समग्रफलकांक्षिणा।।५०।।

(नियम मंत्र) इस व्रत का सम्पूर्णफल प्राप्त करने के लिये व्रत करने वाले को पापियों की संगति नहीं करनी चाहिए झूठी बात भी नहीं करनी चाहिए।

स्त्रीभिर्दुष्टैश्च आलापान्व्रतस्थो नैव कारयेत्।।
स्मर्तव्यं च महारूपं मद्दिने सकलं शुभे।।५१।।

दुष्ट पुरुषों एवं स्त्रियों से बात नहीं करनी चाहिए। इस पवित्र दिन में केवल मेरे महारूप का ही ध्यान करना चाहिए।

ततो मध्याह्नवेलायां नद्यादौ विमले जले।। गृहे वा देवखाते वा तडागेच्च विमले शुभे । वैदिकेन च मंत्रेण स्नानं कृत्वा विचक्षणः।। मृत्तिकागोमयेनैव तथा धात्रीफलेन च । तिलैश्च

सर्वपापघ्नैः स्नानं कृत्वा महात्मभिः॥
परिधाय शुचिर्वासो नित्यकर्म समाचरेत्॥५२-५४॥

दोपहर को नदी में तालाब में अथवा घर में ही पवित्र जल से मिट्टी गोमय, आंवलाचूर्ण एवं सब पापों के नष्ट करने वाले तिलों का प्रयोग करके स्नान करना चाहिए। वस्त्र पहनकर पवित्र होकर नित्य कर्म करें।

ततो गृहं समागत्य स्मरन् मां भक्तियोगतः॥
गोम्मयेन प्रलिप्याथ कुर्यादष्टदलं शुभम् । कलशं तत्र संस्थाप्य ताम्रं रत्नसमन्वितम्॥ तस्योपरि न्यसेत् पात्रं वंशजं व्रीहिपूरितम्॥५५-५६॥

घर आकर भक्ति भाव में मुझे स्मरण करता हुआ पृथ्वी को गोबर से लीपकर अष्टदल का निर्माण कर उस पर रत्नादि से युक्त ताम्र कलश को रखें उस पर बास का बना हुआ पात्र रखकर उसमें चावल भर दे।

हैमी तत्र च मन्मूर्तिः स्थाप्या लक्ष्म्यास्तथैव च॥
पलेन वातदर्धेन तदर्धार्धेन वा पुनः॥५७॥
यथाशक्त्याथवा कार्या वित्तशाठ्याविवर्जितैः॥
पञ्चाममृतेन संस्नाप्य पूजनं तुसमाचरेत्॥५८॥

उस पर मेरी नृसिंह की तथा लक्ष्मी देवी की स्वर्ण मूर्ति स्थापित करें। एक पल, आधा पल, आधे से आधे पल की भी तृष्णा छोड़कर महाशक्ति की मूर्ति बनवाकर पंचामृत से स्नान करा कर पूजन कर स्थापित करें।

ततो ब्राह्मणमाहूय तमाचार्यमलोलुपम्।।
सदाचारसमायुक्तं शान्तं दान्तं जितेन्द्रियम्।।५९।।
आचार्यवचनाद्धीमान् पूजां कुर्याद्यथाविधि।।
मण्डपं कारयेत्तत्र पुष्पस्तबकशोभितम्।।६०।।
ऋतुकालोद्भवैः पुष्पैः पू'जयेत्स्वस्थमानसः।।
उपचारैः[२] षोडशभिर्म त्रैर्वेदोद्भवैनामभिस्तथा।।६१।।

निरलोभी, सदाचारी शान्त जितेन्द्रिय विद्वान ब्राह्मण को बुलाकर आचार्य पद पर वरण करे। उसी के कथनानुसार पूजन करें। मण्डप की रचना करें उसे फूलों से सुशोभित करें। मौसम के अनुसार उत्पन्न फूलों से सजावें। वेद मंत्रों से षोदषोपचार पूर्वक पौराणिक मंत्रों से भी पूजन करें।

शुभैः पौराणिकैर्मन्त्रैः पूजनीयो यथाविधि।। शीतलं दिव्यं चंद्रकुङ्कुममिश्रितम्।। ददामि तव तुष्ट्यर्थं नृसिंह परमेश्वर चंदनम्।।६२।।

हे नृसिंह भगवान केसर रोली से युक्त चन्दन आपकी प्रसन्नता के लिए समर्पण करता हूँ।

(चन्दन चढावें।)

कालोद्भवानि पुष्पाणि तुलस्यादीनिवै प्रभो।
सम्यक् गृहाण देवेश लक्ष्मया सह नमोस्तु ते।।६३।।

(पुष्पाणि)

हे भगवान तुलसी के पत्र से युक्त समयानुसार उत्पन्न फूलों को आपको अर्पित करता हूँ। कृपया भगवती लक्ष्मी सहित स्वीकार करें।

कृष्णागुरुवै धूपं श्रीनृसिंह जगत्पते।।
तव तुष्ट्यै प्रदास्यामि सर्वदेव नमोस्तु ते।।६४।।

(धूपं)

हे जगत्पति नृसिंह भगवान काले अगर से युक्त धूप आपकी संस्तुष्टि के लिए आपके ऊर्षित है। हे सर्व देवमय। आपके लिए नमस्कार है।

(इससे धूप दें।)

सर्वतेजोद्भवं तेजस्तस्माद्दीपं ददामि ते।।
श्रीनृसिंह महाबहो तिमिरं मे विनाशय।।६५।।

(दीपम्)

सब तेजों को उत्पन्न करने वाले आप सक्षम हैं इसलिए यह दीपक आपको समर्पित है। हे महाबाहो नृसिंह जी आप मेरे अन्दर उत्पन्न अंधकार का नाश कर दें।

(इससे दीप दान दें।)

नैवेद्यं सौख्यदं चारु भक्ष्य भोज्यसमन्वितम्।।
ददामि ते रमाकांत सर्वपापक्षयं कुरु।।६६।।

(नैवेद्यम्)

रे रमाकान्त- सुखदायक भक्ष्य एवं भोज्य नैवेद्य आपको समर्पित है। ग्रहण करें एवं मेरे सब पापों का नाश करें।

(नैवेद्य अर्पित करें।।)

नृसिंहाच्च्युत देवेश लक्ष्मीकांत जगत्पते।।
अनेनार्घ्यप्रदानेन सफलाः स्युर्मनोरथाः।।६७।।

(अर्घ्यम्)

हे नृसिंह हे अच्युत हे देवेश, हे लक्ष्मी कान्त, हे जगत्पते। अर्घ्य स्वीकार करें एवं मेरे सब मनोरथ सफल करें।

(अर्घ्य प्रदान करें।)

पीताम्बर महाबाहो प्रह्लादभयनाशन॥
यथाभूतेनार्चनेन यथोक्तफलदो भव॥६८॥
(इति प्रार्थना)

हे पीताम्बधारी! हे महाबाहो! हे प्रह्लाद का भय नाश करने वाले! इस अर्चना से आप प्रसन्न हो तथा मेरी पूजा सफल हो।

(इस प्रकार प्रार्थना करें।)

रात्रौ जागरणं कार्यं गीतवादित्रनिः- स्वनैः॥
पुराण श्रवणाद्यैश्चश्रोतव्याश्च कथाः शुभाः॥६९॥
ततः प्रभात समये स्नानं कृत्वा जितेन्द्रियः॥
पूर्वोक्तेन विधानेन पूज्येन्मां प्रयत्नतः॥७०॥

इस प्रकार पुराणों का कथा आदि का श्रवण गायन कीर्तन करता हुआ रात्रि जागरण करें। प्रातःकाल जितेन्द्रिय स्नान करके पूर्वोक्त विधान से मेरी पूजा करें।

वैष्णवान्प्रजपेन्मंत्रान् मदग्रे स्वस्थमानसः॥
ततो दानानि देयानि वक्ष्यमाणानि चानघ॥७१॥

मेरे सम्मुख वैष्णव मन्त्रों का जाप करें। हे निष्पाप कहे अनुसार दान करें।

पात्रेभ्यस्तु द्विजेभ्यो हि लोकद्वयजिगीषया।।
सिंहः स्वर्णमयो देयो मम संतोषकारकः।।७२।।

दोनों लोकों को जीतने की इच्छा करने वाला सुपात्र ब्राह्मणों को मुझे संतोष देने वाला सोने का सिंह देना चाहिए।

गोभूतिलहिरण्यानि देयानि च फलेप्सुभिः।।
शय्या सधूलिकादेयासप्तधान्यसमन्विता।।७३।।

फल की इच्छा करने वाले का गौ, भूमि तिल, स्वर्ण, रूई के वस्त्रों सहित शैय्या सप्तधान्य का दान करना चाहिए।

अन्यानि च यथाशक्त्या देयानि मम तुष्टये।।
वित्तशाठ्यं न कुर्वीत यथोक्तफलकांक्षया।।७४।।

मेरी संतुष्टि के लिए अन्यान्य वस्तुयें भी यथाशक्ति देनी चाहिए फल प्राप्ति के लिए कृपणता नहीं करनी चाहिए।

ब्राह्मणान्भोजयेद्भक्त्या तेभ्यो दद्याच्च दक्षिणाम्।।
निर्धनेनापि कर्तव्यं देय शक्त्यनुसारतः।।७५।।

ब्राह्मणों को भोजन कराकर यथा शक्ति दक्षिणा दें। निर्धन भी यह व्रत करे तथा शक्ति अनुसार दे।

सर्वेषामेव वर्णानामधिकारोऽस्ति मद्व्रते।।
मद्भक्तैस्तु विशेषेण कर्तव्य मत्परायणै:।।७६।।

मेरे इस व्रत को करने का अधिकार सब वर्ण वालों को है। मेरे अनन्य भक्तों को तो विशेषकर करना चाहिए।

तद्वंशे न भवेद्दु:खं न दोषो मत्प्रसादत:।।
मद्वंशे ये नरा जाता ये निष्पत्तिपरायणा:।।७७।।

मेरी कृपा से उसके वंश में कोई दु:ख नहीं होगा न कोई दोष होगा। जो निष्पत्ति परायण मनुष्य मेरे वंश में हो।

तान् समुद्धर देवेश दुस्तराद्भवसागरात्।।
पातकार्णवमग्नस्य व्याधिदु:खाम्बुवासिभि:।।७८।।

हे देवेश। अलंघ्य भव सागर से उनका उद्धार कर दीजिए। जो रोग दु:ख रूपी सागर के पंक में डूबे हुए हैं।

जीवैस्तु परिभूतस्य मोहदु:खगतस्य मे।।
करावलम्बनं देहि शेषशायिञ्जगत्पते।।७९।।

मोह और दु:ख को प्राप्त मुझ जीव को हे शेष शायी जगत्पति भगवन! अपने हाथ का अवलम्बन दीजिए।

श्रीनृसिंह रमाकांत भक्तानां भयनाशन
क्षीराम्बुनिधिवासिंस्त्वं चक्रपाणे जनार्दन॥८०॥

हे देवेश! इस व्रत के करने से मुझे मुक्ति हो। इस प्रकार प्रार्थना कर विधिपूर्वक देव का विसर्जन करें।

व्रतेनानेन देवेश भुक्तिमुक्तिप्रतो भव॥
एवं प्रार्थ्य ततो देवं विसृज्य च यथार्विधि॥८१॥

हे नृसिंह हे लक्ष्मी पति भक्तों के भय का नाश करने वाले हे क्षीर सागर में रहने वाले हे चक्रधारी जनार्दन।

उपंहारादिकं सर्वमाचार्याय निवेदयेत्॥
दक्षिणाभिस्तु संतोष्य ब्राह्मणांस्तु विसर्जयेत्॥८२॥

आचार्य को उपहार आदि दे दें। दक्षिणा से ब्राह्मणों को संतुष्ट करके विसर्जन करें।

मध्याह्नेतु सुसंयत्तो भुञ्जीत सह बन्धुभिः॥
य इदं शृणुयाद्भक्त्या व्रतं पापप्रणाशनम्॥
तस्य श्रवणमात्रेण ब्रह्महत्या व्यपोहति॥८३॥

मध्यान्ह काल में बन्धु बान्धवों के साथ भोजन करें। पापों का नाश करने वाले इस व्रत को जो भक्ति पूर्वक सुनता है उसका सुनने मात्र से ब्रह्म

हत्या का पाप भी नष्ट हो जाता है।

पवित्रं परमं गुह्यं कीर्तयेद्यस्तु मानवः॥ सर्वान् कामानवाप्नोति व्रतस्यास्य फलं लभेत्॥ इति हेमाद्रौ नृसिंहपुराणे नृसिंहचतुर्दशीव्रतकथा समाप्ता॥८४॥

जो मनुष्य इस परम पवित्र गोपनीय व्रत को श्रवण भी करता है। वह व्रत के फलस्वरूप अपनी सब कामनाओं को प्राप्त कर लेता है।।८४।।

॥ इति नृसिंह चतुर्दशी व्रत कथा ॥

नृसिंहपूजासामग्री

रोली, मौली धूपबत्ती, कर्पूर केसर, रुई, अक्षत, यज्ञोपवित, अबीर, गुलाल, बुक्का, पान, सोपारी, पुष्पमाला व मलिका, मालती, केतकी, अशोक, चम्पा, कमलपुष्प, कनेर, पलाशादि पुष्प दूर्वा, तुलसी, इत्र का फावा, इलायची छोटी, लवंग, नैवेद्य-जौ की लप्सी पायस की खीर व मिष्ठान, ऋतुफल एक दर्जन दुग्ध आधा लीटर दही, शुद्धघृत, शहद, चीनी 250 ग्राम, गंगाजल,चन्दन घिसा हुआ, सर्वोषधि की एक पुड़िया, गिरि का गोला दो नारियल जटादार एक दीया, दियासलाई, नृसिंहदेवता के सभी वस्त्र, एवं उपवस्त्र नृसिंहजी की मूर्ति सिंहासन, हल्दी की गांठ, करंजा एक, धनियां मजीट, गुड़, गेहूं 250 ग्राम कलश ताम्र का या मिट्टी का कसोरा मिट्टी का पूजनार्थ थाली, कटोरी, कटोरा एक पंचामृत के लिए सफेद-लाल कपड़ा एक- एक गज ।

सम्पूर्ण ग्रह नक्षत्रादि शान्ति रहस्य भाषा टीका

लेखक- शिव स्वरूप यज्ञिक

इस पुस्तक में गणपति पूजन के साथ नवग्रहों की शान्ति, नौ ग्रह पूजन, ग्रहों के मंत्र, ग्रहों के स्तोत्र, अष्ट योगिनी पूजन व मंत्र, शिव पार्थिव पूजन, महामृत्युंजय कवच, महामृत्युजंय जप के मंत्र, संतान गोपाल मंत्र, बाल रक्षा स्तोत्र, नाग पूजन। 27 नक्षत्रों के पूजन मंत्रके साथ गण्डमूल अभुक्तमूल नक्षत्र, मूल शान्ति प्रयोग, ज्येष्ठा शान्ति प्रयोग, आश्लेषा शान्ति, कार्तिक स्त्री प्रसूता शांति, त्रिकप्रसव शान्ति, ग्रहण जनन शांति, वास्तु विधान, गृह वास्तु पूजन, नृसिंह पूजन, गायत्री, जप के बाद की सचित्र आठ मुद्राएं, चौबीस गायत्री, शताक्षर गायत्री मंत्र के साथ पितृ तर्पण प्रयोग को विस्तृत ढंग से दिया गया है। यह पुस्तक सब लोगों के लिये उपयोगी है। मूल्य 40 रु०।

कर्मकाण्ड षोडश संस्कार रहस्य

लेखक- शिव स्वरूप यज्ञिक

इस पुस्तक में जीवन में होने वाले सोहल संस्कार-गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोनयन, जातकर्म, षष्ठि महोत्सव, नामकरण, निष्क्रमण, अन्न प्रासन, केशाधिवास, चूड़ाकर्म कर्णवेध, विद्यारम्भ, समावर्तन, वाग्दान, षोडश स्तंभ पूजन, विवाह संस्कार आदि को भली प्रकार लिखकर साथ में हिन्दी भाषा का भी प्रयोग कर पुस्तक साधारण विद्वान के लिए भी सरल बन गई है। पुस्तक में गणपत्यादि पंचाग देवताओं के पूजन के साथ संस्कार के मुहूर्तो का भी उल्लेख है। पूजन सामग्री भी हर संस्कार की पुस्तक में लिख दी है जिससे पुस्तक की उपयोगिता और भी बढ़ गई। विद्यार्थियों, साधारण ब्राह्मणों के लिये तो यह पुस्तक बरदान स्वरूप है। अवश्य ही इस पुस्तक को पास रखने से साधारण विद्वान श्रेष्ठ विद्वान बन जाता है। इसलिए इस पुस्तक को अवश्य मंगाये। मूल्य 180/-रु०

शिवार्चन रहस्य (शिवपूजा पद्धति) मूल्य 30/-

कर्मसिंह अमर सिंह, बड़ा बाजार, हरिद्वार

नृसिहँ पूजन यंत्र

कर्म सिंह अमर सिंह पुस्तक विक्रेता हरिद्वार